कलिमे की दावत

भाग 2

मौलाना मुहम्मद सअ़द कांधलवी

Maktabe Ashraf

कलिमे की दावत

भाग-2

हज़रत मौलाना सअ़द साहिब कांधलवी

मुरत्तिबः मौलाना मुहम्मद इलियास क़ासमी

प्रकाशक

फ़रीद बुक डिपो प्रा० लि०

422, मटिया महल, उर्दू मार्किट, जामा मस्जिद

देहली-110006

Maktabe Ashraf

कम्पोज़िंग व डिज़ाइनिंग के सर्वाधिकार प्रकाशक के लिए सुरक्षित हैं

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

नाम किताब	**कलिमे की दावत भाग-2**
तक़रीरें	हज़रत मौलाना सअ़द साहिब कांधलवी
मुरत्तिब	मुहम्मद इलियास क़ासमी
हिन्दी अनुवाद	मुहम्मद इमरान क़ासमी
संयोजक	मुहम्मद नासिर ख़ान
तायदाद	2100
प्रकाशन वर्ष	जून 2003
कम्पोज़िंग	इमरान कम्प्यूटर्स मुज़फ़्फ़र नगर (0131-2442408)

>>>>>>>>>>>

प्रकाशक

फ़रीद बुक डिपो प्रा० लि०

422, मटिया महल, उर्दू मार्किट, जामा मस्जिद देहली-110006

फ़ोन आफ़िस, 23289786, 23289159 आवास, 23280786

Maktabe Ashraf

मज़ामीन की फ़ेहरिस्त

क्र.स.	क्या?	कहाँ?
1.	अपनी बात	4
2.	एक अहम उसूल	5
3.	अव्वल तो इन फ़ज़ाइल के ज़रिये हमें अपने यक़ीनों को बदलना है	7
4.	हमारी सारी मेहनत की बुनियाद कलिमा ला इला-ह इल्लल्लाहु के यक़ीन पर उम्मत को लाना है	17
5.	कामयाबी का दारोमदार अल्लाह तआला ने ईमान के साथ मश्रूत किया है	49

Maktaba Ashraf

अपनी बात

मोहतरम अज़ीज़ो! यह किताब **"कलिमे की दावत"** जो अल्लाह पाक के करम व फ़ज़्ल से आपके हाथों में पहुँची है, इस किताब को आप पढ़ना शुरू करें इससे पहले मैं आप से चन्द बातें अर्ज़ करना ज़रूरी समझता हूँ।

1. जितनी भी बातें किताब में दर्ज हैं वे सारी बातें आप हज़रात खुद अपने कानों से हज़रत मौलाना सअ़द साहिब की ज़बानी सुन सकते हैं। बस उसके लिए आपको नीचे लिखी तीन जगह के बयानों की "ऑडियो कैसिट" को अपने टेपरिकार्डर पर लगाना पड़ेगा। वे कैसिट इस नाम की हैं:

तारीख़ 22 अप्रैल 2000 ई. स्थान अमरोहा (उ. प्र.)
तारीख़ 23. अप्रैल 2000 ई. स्थान अमरोहा (उ. प्र.)
तारीख़ 16. नवम्बर 1998 ई.

ये कैसिट "बस्ती निज़ामुद्दीन में दुकान नम्बर **231,** इस्लामी कैसिट सैन्टर, नई दिल्ली **110013** से हासिल की जा सकती हैं। हाँ कुछ मुश्किल अल्फ़ाज़ों का आसान ज़बान में अनुवाद ज़रूर किया गया है।

2. इस किताब के छपवाने का मक़सद सिर्फ़ यह है कि जिस तरह से हज़रत मौलाना सअ़द साहिब ने कलिमे की दावत दी है, उसी तरह दावत पूरी दुनिया में ज़िन्दा हो जाए। यह किताब सिर्फ़ जान लेने और बयान करने के लिए हरगिज़ नहीं है।

3. हर दावत का काम करने वाले साथी अपने पास मौलाना यूसुफ़ साहिब की **1965** ई. में वफ़ात के बाद "अल-फ़ुरक़ान प्रेस लखनऊ" का छपा **"हज़रत-जी नम्बर"** यानी **"तज़किरा मौलाना यूसुफ़ साहिब"** के नाम की किताब ज़रूर रखें, इसकी मौलाना सअ़द साहिब ने हिदायत दी है। उससे हज़रत मौलाना यूसुफ़ साहिब के छह नम्बर देखें।

4. आख़िरी बात यह कि इस वक़्त अल्लाह ने जिसे पूरी दुनिया की ज़िम्मेदारी इस काम की दी हुई है, वह इस वक़्त हम सबसे क्या कह रहे हैं और क्या चाह रहे हैं, हम सब बस वही करें, उनकी बात का मान लेना ही सबके लिए ख़ैर की बात है। इस बात को समझने के लिए अगले पेज में हज़रत मौलाना मुहम्मद उमर पालनपुरी रहमतुल्लाहि अ़लैहि का बताया हुआ **"एक अहम उसूल"** दर्ज है, उसे देखें। फ़क़्त वस्सलाम

मुहम्मद इलियास क़ासमी
तारीख़ **16.6.2002**

Maktabe Ashraf

एक अहम उसूल

एक बयान में हज़रत मौलाना मुहम्मद उमर पालनपुरी साहिब ने बंगले वाली मस्जिद की एक कारगुज़ारी सुनाते हुए फ़रमाया कि विदेश के कुछ ज़िम्मेदार साथी एक बार हज़रत जी मौलाना इनामुल हसन साहिब रहमतुल्लाहि अ़लैहि से एक बात पूछने के लिए यहाँ दिल्ली में आए।

हज़रत जी की तबीयत ठीक नहीं थी इसलिए वह आराम कर रहे थे, तो हमने उन ज़िम्मेदारों से मुलाक़ात की। उन ज़िम्मेदारों में से एक जमाअ़त ने हम से कहा कि भाई हमारे मुल्क में जमाअ़तें जो आती हैं तो कोई जमाअ़त बताती है कि काम यूँ करो और कोई कहता है कि नहीं ऐसे करो? तो हम सारे लोग परेशान हैं कि किसकी बात मानें और काम कैसे करें? हर एक हवाला देता है बड़ों का। कोई कहता है कि मैंने खुद बड़े हज़रत जी (मौलाना इलियास साहिब रहमतुल्लाहि अ़लैहि) से यूँ सुना है। कोई कहता है कि मैंने बड़े हज़रत जी से यूँ सुना है, कोई कहता है कि मैंने मौलाना यूसुफ़ साहिब रहमतुल्लाहि अ़लैहि से यह कहते सुना, कोई कहता है कि मौलाना यूसुफ़ साहिब रहमतुल्लाहि अ़लैहि ने जिससे कहा मैंने उससे सुना है।

अब हम सारे परेशान हैं कि क्या करें और किस तरह काम करें, क्योंकि हर एक बड़ों का हवाला देता है, हम लोग तो हज़रत जी से सिर्फ़ यही मश्विरा करने के लिए आए हैं कि हज़रत हम लोगों को बताएँ कि ऐसे मौक़े पर हम क्या करें? क्योंकि सारे लोग अलग-अलग बात बतलाते हैं। तो मैंने उनसे कहा, भाई देखो! हमारी समझ में तो यूँ आ रहा है कि बड़ों ने जो बात कही उसका मतलब वह होगा जो उस वक़्त का अमीर बताए। उस वक़्त का अमीर जो बताए वह उस बात का मतलब हमें समझना चाहिए। सुना आप सब ने भी, (मजमे से मुख़ातिब होकर कहा) कि अमीरुल-वक़्त (यानी जो जमाअ़त का मौजूदा अमीर है वह) जो बताए उसपर सबको जमना चाहिए। इसपर मिसाल हमने उन्हें हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु वाली दी कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के पर्दा फ़रमाने पर चारों तरफ़ से हंगामे खड़े हो गए। अब सबकी राये यह हैं कि हज़रत उसामा रज़ियल्लाहु अ़न्हु का लश्कर मुल्क शाम भेजने के बजाय मदीना मुनव्वरा में ठहराया जाए क्योंकि चारों तरफ़ से हमले की ख़बर है। तो उसपर अबू बक्र रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने सारे सहाबा के ज़ेहन के अन्दर यह बात डाली कि यह तीन हज़ार की जमाअ़त क्या करेगी

जब अल्लाह की मदद ही रुक जाए। अल्लाह की मदद जब आएगी ज़बकि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की बात पूरी हो कि "उसामा के लश्कर को रवाना करो"। हाँ! आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने कहा था "उसामा के लश्कर को रवाना करो"। सुना तो यह हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ज़बान से सब सहाबा ने, अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने भी यह सुना और दूसरे सहाबा ने भी सुना, लेकिन औरों ने इसका मतलब क्या समझा और अबू बक्र सिद्दीक़ ने इसका मतलब क्या समझा। औरों ने सिर्फ़ इतना समझा कि उसामा के लश्कर को रवाना करने के लिए आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने कहा है, और अमीरुल-वक़्त ने हज़रत उसामा के लश्कर के अ़लावा पूरे मदीना मुनव्वरा के मुसलमानों को निकलने के लिए कह दिया कि सब मदीना ख़ाली करो। यह अबू बक्र सिद्दीक़ ने समझा, इसपर सब लोगों ने लब्बैक कहकर मान लिया। तो हमने उन लोगों से कहा कि यह उसूल क़ियामत तक रहेगा कि जो बात अमीरुल-वक़्त कह दे वह सबको मान लेने में ही ख़ैर है। उसके अन्दर किसी क़िस्म का फ़र्क़ नहीं करना चाहिए। तो मैंने उनसे कहा कि इतनी बात तो मेरी आप से हो गई अब हज़रत जी जब उठेंगे तब उनके पास चलेंगे। हज़रत जी नींद से जागे, उन सबको लेकर हम हज़रत जी के पास हाज़िर हुए और जो बात हमने उन लोगों से कही थी वह बात हमने हज़रत जी के सामने रख दी कि ये लोग कह रहे हैं कि अगर लोग अलग-अलग बात बताएँ तो हम क्या करें? तो हमने उनसे यह कहा कि जो बात अमीरुल-वक़्त (यानी उस वक़्त का मौजूदा अमीर) कहे या बताए वह उनको करना चाहिए। तो हज़रत जी ने फ़रमाया! कि हाँ यह मुनासिब है। उसके बाद फिर वे लोग अपने मुल्क वापस चले गए। तो मेरे मोहतरम दोस्तो बुज़ुर्गो। रायें अलग-अलग होना कोई हर्ज की बात नहीं है, रायें अलग-अलग हो सकती हैं, पर अमीरुल-वक़्त (यानी जो जमाअ़त का उस वक़्त का अमीर है, वह) जो बात कहे बस उसी बात को मान लेने में ही ख़ैर है।

मौलाना मुहम्मद उमर पालनपुरी रहमतुल्लाहि अ़लैहि
के बयान का एक हिस्सा

इस बयान की टेपरिकार्डर कैसिट सुरिक्षत हैं।

मुहम्मद इलियास

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

अव्वल तो इन फ़ज़ाइल के ज़रिये हमें अपने यक़ीनों को बदलना है।

तारीख़ 22 अप्रैल 2002 स्थान अमरोहा (उ. प्र.)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَ نَسْتَعِيْنُهٗ وَ نَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَ نَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَ مِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَ نَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔

मेरे दोस्तो, अ़ज़ीज़ो, बुज़ुर्गो! हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने अपने सहाबा-ए-किराम को अल्लाह के वायदों के यक़ीन पर उठाया है। ये फ़ज़ाईल ख़ुद अल्लाह के वायदे हैं, जितने फ़ज़ाईल हैं आमाल के, उन फ़ज़ाईल का ताल्लुक़ एहतिसाब से है, कि इसका यक़ीन पैदा हो कि अल्लाह यह चीज़ देंगे। ये फ़ज़ाईल एहतिसाब हैं। हमारे इन तालीम के हल्क़ों की हैसियत आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की मस्जिद का वह अ़मल है जो सहाबा-ए-किराम के यक़ीनों को बदलने के लिए और उनको ग़ैब की चीज़ों पर लाने के लिए किया जाता था। सिर्फ़ इतनी बात नहीं कि इन फ़ज़ाईल के हल्क़ों से अ़मल का शौक़ पैदा कर देना मक़सूद हो। असल में जो बात है तो यह है कि इन फ़ज़ाईल से अपने आमाल को तरक़्क़ी देना है।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम मस्जिद में दाख़िल हुए। मस्जिद में दो हल्क़े लगे हुए थे- एक ज़िक्र का और एक तालीम का, आपने देखकर फ़रमाया कि दोनों ख़ैर पर हैं, लेकिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने तालीम के हल्क़े में बैठकर फ़रमाया **"इन्नमा बुअ़िस्तु मुअ़ल्लिमन्"** (यानी मुझे सिखलाने वाला बनाकर भेजा गया है) यह मुअ़ल्लिमन् का क्या मतलब है? मुअ़ल्लिमन् का मतलब है **"हमने ईमान को सीखा"**। हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम जो फ़ज़ाईल सहाबा को सुना रहे थे वह यक़ीन को सिखलाने के लिए सुना रहे थे, मालूमात बढ़ाने के लिए नहीं सुना रहे थे।

इसी लिए मौलाना यूसुफ़ साहिब रहमतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते थे कि इस तालीम का मौज़ू (यानी मक़सद और ग़र्ज़) न मालूमात को बढ़ाना है न अपनी

Maktabe Ashraf

मालूमात पर एतिमाद है, बल्कि तालीम के हल्क़ों से एहतिसाब बढ़ाना है कि अल्लाह हमें इसपर क्या देने वाले हैं? फ़ज़ाईल असल में आमाल को तरक़्क़ी देने के लिए हैं, यह सिर्फ़ अ़मल तक पहुँचने का ज़रिया नहीं हैं।

इस वक़्त जो बात आ़म लोगों के ज़ेहन में है वह यह कि फ़ज़ाईल की तालीम से बरकतें आएँगी, रहमतें आएँगी, इसलिए फ़ज़ाईल की तालीम हो जाये। या यह कि इन फ़ज़ाईल के सुनने से अ़मल का शौक़ पैदा हो जाए, इसलिए तालीम कर ली जाए। इस सतह (स्तर) पर बात आकर ठहरी हुई है, लेकिन क्या इसका यक़ीन है कि जो कुछ फ़ज़ाईल में सुनाया जा रहा है वह होगा। यह फ़ज़ाईल की तालीम एहतिसाब को बढ़ाने के लिए है, अ़मल पर आना इस फ़ज़ाईल की तालीम के पहले दिन का नतीजा है, कि फ़ज़ाईल सुने और अ़मल पर आ गया। असल फ़ज़ाईल के ज़रिये से उन आमाल पर यक़ीन का लाना है।

इसलिए मेरे दोस्तो! दुनिया में जितने भी असबाब (यानी साधन) हैं, हमेशा आमाल का टकराव उन असबाब से होगा। और देखा यह जाएगा कि कामयाबी आमाल से ले रहे हैं या असबाब से ले रहे हैं। अपने अन्दर इसकी क़ाबलियत पैदा करने के लिये फ़ज़ाईल हैं, फ़ज़ाईल ही अल्लाह के वायदे हैं, अपने अन्दर इसकी इस्तेदाद (क़ाबलियत) पैदा करना कि जितने भी शक्लों की लाईन के असबाब हैं आमाल की लाईन यानी 'अवामिर' (जिन चीज़ों के करने का शरीअ़त में हुक्म है) की लाईन के असबाब उनका मुक़ाबला कर रहे हैं, या नहीं कर रहे हैं। अगर आमाल की लाईन के असबाब शक्लों की लाईन के असबाब से मुक़ाबला कर रहे हैं तब कहेंगे कि फ़ज़ाईल का मक़सद पूरा हो रहा है। जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम जो वायदा अल्लाह की तरफ़ से कर रहे हैं, सहाबा-ए-किराम से अल्लाह के उन वायदों के मुज़ाकरे करवा रहे हैं, आमाल की फ़ज़ीलत यानी इस अ़मल पर अल्लाह का यह वायदा है, हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम इस तरह यह सिखला रहे हैं यक़ीन, ईमान, फ़ज़ाईल के मुज़ाकरों के हल्क़ों से। असल में इस वक़्त तालीम के साथ मुज़ाकरा ख़त्म हो गया। क्या हुआ कि सिर्फ़ किताब पढ़ लेने का नाम हमने तालीम रखा हुआ है, उसके बाद क़ुरआन के हल्क़े हो गए, उसके बाद छह नम्बर का मुज़ाकरा।

देखो मेरे दोस्तो! एक होता है किसी काम के करने का तरीक़ा, कि भाई तालीम का तरीक़ा यह है। इस तालीम के तीन हिस्से हैं- तालीम, क़ुरआन के

हल्के और फ़ज़ाईल के मुज़ाकरे। यह एक अमल हुआ, यानी एक अमल के तीन हिस्से हुए। लेकिन मौलाना यूसुफ़ साहिब रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते थे कि इस फ़ज़ाईल की तालीम से यह चाहा जा रहा है कि इस तालीम की मश्क़ से उम्मत का यक़ीन असबाब से अल्लाह के अहकाम की तरफ़ फिर जाए।

रहमतें, बरकतें, इसपर मसाईल का हल होना, इसमें अनवारात, ये तमाम की तमाम चीज़ें, इसमें कोई शक नहीं कि बड़ी-बड़ी नेमतें हैं, बड़ी चीज़ें हैं, लेकिन यह सब-के-सब उसके साथ वायदा की हुई हैं, उसके साथ मिलने वाली हैं, ये उसके असरात हैं, उसके मक़ासिद (उद्देश्य) नहीं। मक़ासिद और होते हैं, असरात और होते हैं। मक़सद फ़ज़ाईल का यह है कि जो तालीम अल्लाह रब्बुल-इज़्ज़त अम्बिया अलैहिमुस्सलाम और जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़रिये से उम्मत को दे रहे हैं, इनसान को दे रहे हैं, वह यक़ीनी है, कामयाबी के लिए उन असबाब के मुक़ाबले में जो असबाब अल्लाह ने दुनिया में बनाकर दिए हैं, यह असल में तालीम का मक़सद है।

हदीस में आता है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक बात को तीन-तीन बार फ़रमाते थे कि आदमी एक बार उस बात की तरफ़ मुतवज्जह होगा, दूसरी बार उसको सुनेगा और तीसरी बार उसको समझेगा। हम बार-बार यह अर्ज़ करते हैं कि बरकत के लिए हदीस का पढ़ लेना या सिर्फ़ मालूमात को बढ़ाने के लिए हदीस का पढ़ लेना या सिर्फ़ मामूल की वजह से हदीस का पढ़ लेना, मेरे दोस्तो बरकतों का और मामूलात का, ये सारी चीज़ें वे हुआ करती हैं जिससे असल मक़सद हासिल नहीं हुआ करता। मामूल वाला तो आदी होता है, कि आदत की तालीम, आदत का बयान, आदत का गश्त, इससे क्या मक़सूद है? अगर वह चीज़ सामने न हो तो मामूल वाली चीज़ चलती रहती है और उससे जिस फ़ायदे और मक़ासिद को हासिल करना चाहते हैं जब वे सामने नहीं होते तो उस अमल का हल्कापन आ जाता है, कि आओ चलो थोड़ी देर तालीम कर लो, और पाँच मिनट और दस मिनट की, जो तालीम हमारी मस्जिदों में रस्मी तौर पर हो रही है, बात यह है कि हमारे सामने सिर्फ़ तालीम की किताब पढ़ लेना है। असल में तालीम कराने वाले की अपने अन्दर की कोशिश यह हो कि मेरा अपना और सब सुनने वालों का यक़ीन तमाम शक्लों से अल्लाह के अहकाम की तरफ़ फिर जाए। उसके लिए तालीम हो रही है। अभी हमारे दरमियान सिर्फ़ इतनी बात है कि भाई हम तालीम से सिर्फ़ अमल पर पड़ जायें, नहीं! मैं तो उनकी बात कर रहा हूँ जो

अ़मल पर पड़े हुए हैं, जो अ़मल कर रहे हैं, क्या उनके यक़ीन असबाब से अल्लाह के अहकाम की तरफ़ फिर गए हैं, या अभी भी असबाब का बातिल यक़ीन दिलों में मौजूद है। ये फ़ज़ाईल तो मेरे दोस्तो आमाल की तरक़्क़ी के लिए हैं, फ़ज़ाईल यक़ीन की तब्दीली के लिए हैं।

एक तरफ़ ये असबाब आमाल और उनके साथ वायदे हैं, ये अम्बिया लेकर आए हैं, और दूसरी तरफ़ सारी दुनिया असबाब से भरी पड़ी है। यह माद्दी असबाब हैं, इन फ़ज़ाईल की तालीम के ज़रिये से अपने यक़ीनों को दुनिया की तमाम शक्लों और असबाब से अल्लाह की तरफ़ से आने वाले आमाल वाले असबाब की तरफ़ फेरना है।

अब इस तालीम का तरीक़ा क्या होगा? इस तालीम का तरीक़ा यह होगा, देखो! अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अ़न्हु बाज़ार में सिर्फ़ तालीम का ऐलान नहीं कर रहे हैं, जैसा कि हम लोग अपने तालीमी गश्तों में यूँ कहते हैं कि आओ तालीम हो रही है।

मौलाना यूसुफ़ साहिब रहमतुल्लाहि अ़लैहि यूँ फ़रमाते थे कि "अगर इन्फ़िरादी (यानी अलग-अलग) या इज्तिमाई (यानी सामूहिक) तालीम की, या अ़मल की दावत देने वाले के सामने उस अ़मल की हक़ीक़त नहीं है, तो ख़ुद दावत देने वाले को उससे फ़ायदा न होगा, और दूसरों पर यह दावत असर नहीं करेगी। जिस चीज़ की यह दावत दे रहा है उस चीज़ की ख़ुद उसके अन्दर क्या हैसियत है, उसके अपने सामने उसकी क्या हक़ीक़त है? सिर्फ़ इतनी कि तालीम का हल्क़ा हो रहा है चलो, या तालीम के हल्क़े की तरफ़ बुलाने वाले के सामने हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की विरासत है। हर काम करने वाले साथी को इसमें ग़ौर करना पड़ेगा और फ़र्क़ पैदा करना पड़ेगा। क्या कैफ़ियत है तालीम की तरफ़ बुलाने वाले की। इस वक़्त तो भाई तक़रीर की हैसियत तालीम से ज़्यादा हो ही गयी। मौलाना इलियास साहिब रहमतुल्लाहि अ़लैहि के यहाँ तालीम की हैसियत तक़रीर से कहीं ज़्यादा थी। तालीम हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ज़बान मुबारक से निकले हुए अल्फ़ाज़ हैं, अगर हम उसका मतलब भी अदा कर रहे हैं तब भी हमारी ही ज़बान है। और अगर हम उसको समझ रहे हैं तब भी हमारी ही ज़बान है। लेकिन अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अ़न्हु ऐलान कर रहे हैं बाज़ारों में, कि बाज़ार वालो तुम इतने निकम्मे हो गए कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की मीरास तक़सीम हो रही है मस्जिद में, और तुम यहाँ हो, क्या तुम इतने

आजिज़ हो गए कि जाकर उसे ले नहीं सकते।

अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु का यह तालीमी गश्त है, जो हमारे यहाँ तालीमी गश्त होता है यही वह तालीमी गश्त है, क्योंकि अब तो हम तहक़ीक़ात में पड़ गए, अमल पर तो अब अल्लाह हमें डाले, कि यह कहाँ से है और यह कहाँ से है। अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु का तालीमी गश्त तालीम के वक़्त बाज़ार में गश्त करते हुए साबित है। फिर इतना ही नहीं कि तालीम की आवाज़ लगा दी और फ़ारिग़ हो गए, अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु बाज़ार में देख रहे हैं कि ये लोग वहाँ तालीम के हल्के में शामिल होते हैं या वापस आते हैं! लेकिन ये झाँककर वापस आ गए कि वहाँ तो कोई माल तक़सीम नहीं हो रहा है। फिर यह फ़रमाया कि नहीं! वही हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की विरासत है, जो तालीम का हल्का मस्जिद में चल रहा है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उम्मत को आमाल के वायदों के यक़ीन पर उठाया था, हमारी तालीम का जो मक़सद है वह वही है जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तालीम का मक़सद था।

"इन्नमा बुअ़िस्तु मुअ़ल्लिमन्" यानी मुझे सिखलाने वाला बनाकर भेजा गया है। सिखलाने वाले का क्या मतलब है? कि सिखलाने वाला उस वक़्त तक मुत्मईन नहीं होता जब तक सुनने वाला किसी दरजे तक न पहुँच जाए। उस्ताद शागिर्द को सिखलाने में, मालिक अपने मज़दूर को सिखलाने में उस वक़्त तक मुत्मईन नहीं होता जब तक यह किसी दरजे में न पहुँच जाए।

देखो मेरे दोस्तो! इन फ़ज़ाईल का सुनना, ख़ास तरीक़े का सुनना है। यह नहीं कि पाँच मिनट, दस मिनट तालीम का हल्का हो जाए फिर जिनको मालूमात हो गईं इन हदीस की, वे यूँ कहें कि हमें मालूम है कि यह हदीस यूँ है, अब कहें और से पढ़ो। नहीं! मौलाना यूसुफ़ साहिब की हिदायत में साफ़ तौर से लिखा हुआ है कि सिर्फ़ याद कर लेना इस तालीम का मौज़ू नहीं है। यानी यह तालीम इसलिए नहीं रखी गयी है। इन हदीसों का बरकत के लिए सुन लेना यह तालीम का मौज़ू (मक़सद और उद्देश्य) नहीं है, बल्कि बार-बार सुनने और बार-बार सुनाने और तालीम के अलावा वक़्त में उन फ़ज़ाईल पर ग़ौर करने और जो मस्जिद में सुनकर आए हो उसे बाज़ारी और घरेलू और बाहर के शोबों के माहौल में उस तालीम को ले जाना और उसके यक़ीन की तरफ़ बुलाना, यह इस तालीम का मौज़ू है, कि हम जो तालीम मस्जिद में बैठकर सुन आए हैं, उस तालीम को अब मस्जिद से बाहर लेकर निकलेंगे।

असल में मक़सूद यह था। मौलाना यूसुफ़ साहिब रहमतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते थे कि जिस वक़्त जिस अ़मल के करने का वक़्त आए उस अ़मल से पहले फ़ज़ाईल की मश्क़ करो। हमारे फ़ज़ाईल के इल्म का ताल्लुक़ अगर अ़मल से नहीं जुड़ा, असल में इन दोनों के दरमियान में फ़ासिला है। तालीम, तालीम के वक़्त में हो रही है, अ़मल, अ़मल के वक़्त में रहा है। तालीम का अ़मल से जोड़ पैदा नहीं किया हुआ है। हज़रत फ़रमाते थे कि तालीम और अ़मल का जोड़ यह है कि जो फ़ज़ाईल तालीम में सुने हैं, उनको इतना सुना जाए और इतना सुनाया जाए कि अ़मल के वक़्त वे फ़ज़ाईल ज़ेहन में बैठ जायें ताकि उस अ़मल पर एहतिसाब आ जाए। वह अ़मल यक़ीन पर आ जाए कि अल्लाह रब्बुल-इ़ज़्ज़त नमाज़ पर यह देने वाले हैं और पहली सफ़ पर यह देने वाले हैं, तकबीरे-ऊला पर यह देने वाले हैं, और मस्जिद की तरफ़ क़दम उठाने पर यह देने वाले हैं।

इसलिए मेरे दोस्तो, अ़ज़ीज़ो, बुज़ुर्गो! सबसे पहली बात यह है कि तालीम कराने वाला, उसके अन्दर का फ़िक्र सुनने वाले को यक़ीन पर लाना है। यह नहीं कि किताब जिसको पढ़नी आती है वह किताब पढ़कर सुना दे, नहीं बल्कि किताब पढ़ने वाला किताब पढ़ने से पहले यूँ सोचे कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इन फ़ज़ाईल के ज़रिये से अपनी उम्मत को असबाब के यक़ीन से हटाया है, मैं इन फ़ज़ाईल के ज़रिये से सुनने वालों और अपनी ज़ात को सबसे पहले असबाब के यक़ीन से हटाने के लिए यह तालीम करा रहा हूँ।

देखो यह तालीम चलती रहेगी, असबाब का यक़ीन रहेगा, यह फ़ज़ाईल की तालीम में बैठने वाले, जब उनकी दुनिया दावत के तक़ाज़ों या इबादत के तक़ाज़ों पर आएगी तब ये दावत के तक़ाज़ों या इबादत के तक़ाज़ों को छोड़ देंगे। इसलिए कि यक़ीन की तब्दीली पर नहीं जुड़े, सिर्फ़ तालीम को अ़मल क़रार दिया है। हम जो बात अ़र्ज़ कर रहे हैं ज़रा-सा ग़ौर करना पड़ेगा कि आया तालीम का मक़सद उम्मत को अ़मल पर लाना है? या तालीम का मक़सद और ग़रज़ उम्मत के यक़ीन को असबाब से हटाकर अल्लाह रब्बुल-इ़ज़्ज़त के अहक़ाम पर लाना है?

यह तो आप हज़रात से साफ़ अ़र्ज़ कर दूँ कि आप सबको इसमें फ़र्क़ करना पड़ेगा। जितने नए-पुराने हैं उन सबको सोचना पड़ेगा कि तालीम अ़मल पर लाने के लिए है या तालीम यक़ीन की तब्दीली के लिए है। एक वे आ़म लोग हैं जो आकर आपकी तालीम में शरीक हो जाएँगे। हमारी मस्जिदवार

जमाअ़त के यक़ीन की तब्दीली के लिए यह मस्जिदवार जमाअ़त की अपनी तालीम है। अच्छी तरह सुन लें आप हज़रात यह बात कि तालीम मस्जिद की हरगिज़ मौहल्ले वालों के लिए नहीं है, यह तालीम मस्जिदवार जमाअ़त की तालीम है। मस्जिदवार जमाअ़त मौहल्ले वालों को अपनी तालीम की दावत तो देगी लेकिन यह नहीं कि जब मौहल्ले वाले उठने लगें या मौहल्ले वाले यह तक़ाज़ा करें तो आप मौहल्ले वालों को देखकर तालीम ख़त्म कर दें।

मैं सच्ची बात अ़र्ज़ कर रहा हूँ कि हमारी तालीम मौलाना यूसुफ़ साहिब रहमतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते थे कि फ़ज़ाईल की तालीम डेढ़ घन्टा हो, कम-से-कम एक घन्टा, ज़्यादा-से-ज़्यादा डेढ़ घन्टा हो। मैं यह ग़ौर करने लगा कि हमारे साथी यूँ कहते हैं कि पाँच मिनट, दस मिनट या पन्द्रह मिनट से ज़्यादा बरदाश्त नहीं है। देखो हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की मस्जिद में अ़मल जारी है, तीन आदमी आए, रिवायत से साबित है। तीन आदमी आए एक आकर अ़मल में शरीक हुआ, एक खड़ा होकर देखता रहा और एक वापस चला गया। इस इस्तेदाद (यानी क़ाबलियत और सलाहियत) की इनसानों की तीन क़िस्में हमेशा रहेंगी, लेकिन मस्जिदे नबवी का अ़मल बाज़ार वालों के या बाहर वालों के ताबे होकर नहीं चला। तालीम मस्जिदवार जमाअ़त की अपनी है, बाहर से हर क़ाबलियत के लोग आएँगे, यह हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के ज़माने की बात है।

वे भी आएँगे जो सिर्फ़ झाँककर चले जाएँगे, वे भी आएँगे जो खड़े होकर देखेंगे, वे भी आएँगे जो कुछ वक़्त के लिए बैठेंगे और वे भी आएँगे जो आख़िर तक बैठेंगे।

यह नहीं कि मस्जिदवार जमाअ़त की तालीम मौहल्ले वालों के ताबे हो जाए। हालाँकि तालीम को मस्जिदवार जमाअ़त अगर अपनी तालीम क़रार दे ले, और आने वालों से यूँ कहे कि तशरीफ़ रख़ें। अगर यह पाँच मिनट, तीन मिनट, या एक मिनट में उठकर जाता है तो उनसे यूँ कह दो कि हमारी तालीम अभी चलेगी, आप बैठना चाहें तो बैठें। इसका क्या मतलब कि मौहल्ले वाले उकता गए हैं, तालीम बन्द करो। यानी मैंने अच्छे-अच्छे काम करने वालों से सुना है कि उनसे पूछा गया, तालीम कितनी देर हो, तो उन्होंने कहा कि जितना मौहल्ले वालों में बरदाश्त और संयम हो। मैंने कहा भाई! यह क्या बात हुई? इसका मतलब यह है कि अब मस्जिद के दावत के आमाल बाज़ार वालों के ताबे होकर चलेंगे। नहीं! याद रखो कि तालीम कराने वाला, पहले तो यह

तय करे कि तालीम मस्जिदवार जमाअ़त की है, हम इस तालीम की दावत देंगे, जो लोग तालीम में आकर शरीक होंगे वे जितनी देर बैठें- पाँच मिनट, दस मिनट, वे बैठें, हमारी अपनी तालीम है यह, मस्जिदवार जमाअ़त की, बेशक वह वक़्त तय करेंगे जिसमें ज़्यादा-से-ज़्यादा लोग शरीक हो सकें, लेकिन तालीम का अ़मल हो रहा है मस्जिदवार जमाअ़त का, इसमें मौहल्ले वाले अपनी क़ाबलियत और सलाहियत के मुताबिक़ बैठेंगे, हम तवज्जोह दिलायेंगे, अगर बैठते हैं तो ठीक है, अगर वे उठकर जाते हैं तो हम उनसे यह कहेंगे, अच्छी बात है, हमारी तो तालीम अभी चलती रहेगी। अब तालीम कराने वाला एक-एक हदीस को तीन-तीन बार पढ़े।

देखो मेरे दोस्तो! तब तक उम्मत में फ़ज़ाईल का इल्म, नुबुव्वत वाला इल्म नुबुव्वत के तरीक़े से नहीं आएगा, नबुव्वत का तरीक़ा इल्म के उम्मत में आने का यह हो कि हमारी बात का अन्दाज़ ऐसा होना चाहिए कि जिसमें सवाल पैदा हो और सुनने वाले के अन्दर तलब पैदा हो जाए। हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने सवाल खड़ा किया, इस तरह किया कि आपने पेड़ की एक टहनी हिलाई, पत्ते झड़े। हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम बेकार कामों के लिए नहीं आए हैं। अब पत्ते गिरे तो कहा कि पूछते क्यों नहीं हो कि मैंने टहनी क्यों हिलाई, तो सहाबा ने पूछा, आपने टहनी क्यों हिलाई है? आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि मैंने टहनी इसलिए हिलाई है कि इससे मैं यह बतलाना चाहता हूँ कि जब एक आदमी वुज़ू करता है इस तरह, वुज़ू करके इस तरह नमाज़ अदा करता है तो उसके गुनाह इस तरह झड़ा करते हैं। फिर सवाल खड़ा किया गया, **'ताबिई'** (ताबिई उसको कहते हैं जिसने नबी-ए-करीम के किसी सहाबी को देखा हो और उसकी ईमान की हालत पर मौत हुई हो) से सहाबी पूछ रहे हैं, अपने बाद वाले से, उन्होंने भी यही बात उनसे बतलाई जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने बतलाई थी। नुबुव्वत से उम्मत में इल्म के आने का एक रास्ता है, एक तरीक़ा है।

मौलाना यूसुफ़ साहिब रहमतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते थे कि तालीम कराने वाला एक-एक हदीस को ठहर-ठहरकर पढ़े, हमें अपने आमाल में फ़ज़ाईल के इस्तेहज़ार से (यानी उन्हें अपने ज़ेहन में हाज़िर रखकर) हक़ीक़त पैदा करनी है। यह है असल में इन फ़ज़ाईल का मक़सद।

अब जो लोग तालीम के अन्दर बैठे हैं, तालीम के बाद उनसे इतना कह दो कि जो हदीस सुनी है बाहर जाकर उनके मुज़ाकरे करो। अभी तो हमारा

मजमा फ़ज़ाईल से गुज़र रहा है, हमारी अपनी तालीम में शिरकत करने वालों पर मेहनत नहीं है।

याद रखो मेरे दोस्तो! तालीम मेहनत नहीं है, उसके साथ अगर यह मुज़ाकरों की मश्क़ जोड़ी गई तब यह तालीम अ़मल बनेगी। अभी सिर्फ़ तालीम हो रही है, कि किताब पढ़कर सुना दी जाए। इसमें कोई शक नहीं कि रहमतें, बरकतें, अनवारात अपनी जगह हैं। मौलाना इलियास साहिब रहमतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते थे कि बरकतें और इनामात और इसपर जो मुनाफ़े अल्लाह की तरफ़ से वायदा-शुदा हैं, वे मक़सूद नहीं हैं। असल तो मक़सूद अल्लाह को राज़ी करना है, बरकतें और इनामात यह तो अल्लाह की तरफ़ से वायदा किए हुए हैं, जो इसपर मिलेंगे, हम इसकी नीयत नहीं करते, हाँ हम इसका यक़ीन रखते हैं कि अल्लाह रब्बुल-इ़ज़्ज़त इस अ़मल के पूरा होने पर अ़ता फ़रमाएँगे।

इसलिए अ़र्ज़ यह है कि आप सब हज़रात तालीम कराने वाले और तालीम कराने वालों को हिदायत देने वाले, आप हज़रात ये चन्द बातें बिलकुल अच्छी तरह याद रखें कि अव्वल तो इन फ़ज़ाईल के ज़रिये हमें अपने यक़ीनों को बदलना है। असबाब से यक़ीन अल्लाह के अहकाम की तरफ़ फिरे, इसके लिए ये फ़ज़ाईल हैं।

देखो हुकूमत इसपर यह देगी, अल्लाह रब्बुल-इ़ज़्ज़त इस अ़मल पर यह देंगे, मुस्तक़िल इसका मुक़ाबला है। अब अपने यक़ीन को फ़ज़ाईल के ज़रिये मख़्लूक़ से ख़ालिक़ की तरफ़ फेरना है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम जो भी अल्लाह की तरफ़ से वायदे लेकर आए हैं वही आमाल के फ़ज़ाईल हैं, एहतिसाब (यानी अपनी जाँच-पड़ताल और अपने आमाल का जायज़ा लेने) को बढ़ाने के लिए फ़ज़ाइल के मुज़ाकरे हैं।

इस तरतीब से इन्शा-अल्लाह जब तालीम कराई जाएगी तब कहीं जाकर तालीम के हल्क़ों से यक़ीन बनेगा और आमाल में फिर तरक़्क़ी होगी। अब एक हदीस को तीन-तीन बार ठहर-ठहरकर पढ़ो क्योंकि यह तालीम है, तालीम कहते हैं सिखलाने को, सुनने को तालीम नहीं कहते।

'इन्नमा बुअ़िस्तु मुअ़ल्लिमन्' मुझे सिखलाने वाला बनाकर भेजा गया है। सिखलाने वाला उस वक़्त तक मुत्मईन नहीं हुआ करता जब तक सीखने वाला पूरी तरह से उस चीज़ को सीख न ले, कि उसको इत्मीनान हो जाए कि मैं जिसे सिखला रहा था उसने सीख लिया है। इसलिए अ़र्ज़ यह है कि एक-एक हदीस को तीन-तीन बार पढ़ो, इसमें जो फ़ायदा आएगा उसे एक बार पढ़ना है

सिर्फ़ हदीस तीन-तीन बार पढ़ो। यह नुबुव्वत का तरीक़ा है उम्मत को तालीम देने का, नबी का तरीक़ा उम्मत को सिखलाने का यह है।

फिर सहाबा किस तरह सुनते थे कि गोया सरों पर परिन्दे बैठे हुए हैं। मौलाना यूसुफ़ साहिब रहमतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते थे कि अदब और अ़ज़मत और ध्यान और अल्लाह की तरफ़ तवज्जोह और वुज़ू के साथ बैठने की कोशिश, और टेक न लगाने की कोशिश, इस तरह जब तालीम के हल्क़े में बैठा जाएगा तब हदीस का नूर अन्दर आएगा। यह फ़ज़ाईल की तालीम है, इसमें इस तरह बैठे जिस तरह अ़र्ज़ किया गया है। आप हज़रात अपने यहाँ इस तरह से हिदायत दें तालीम की, ताकि तालीम का अ़मल मुकम्मल हो। इस तालीम के साथ मश्क़, हदीस को तीन-तीन बार पढ़ना, उसमें वुज़ू के साथ, अदब से, अल्लाह की तरफ़ मुतवज्जह होकर बैठना।

मौलाना यूसुफ़ साहिब रहमतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते थे, सिर्फ़ पढ़ना ही ज़िक्र नहीं है सुनना भी ज़िक्र है। जो शर्तें और कैफ़ियत ज़िक्र करने वाले की होनी चाहिए वही शर्तें और वही कैफ़ियत सुनने वाले की होनी चाहिए। जब हदीस पाक पढ़ी जाए उस वक़्त का ज़िक्र यह है कि ख़ामोश और चुप होकर सिर्फ़ सुना जाए।

وآخر دعوانا ان الحمد لله رب العالمين

Maktabe Ashraf

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

हमारी सारी मेहनत की बुनियाद कलिमा 'ला इला-ह इल्लल्लाहु' के यक़ीन पर उम्मत को लाना है।

तारीख़ 22 अप्रैल 2002 ई. स्थान अमरोहा (उ. प्र.)

मेरे दोस्तो, बुज़ुर्गो और अज़ीज़ो! यह कलिमे की दावत और कलिमे की मेहनत, यह अम्बिया के दुनिया में भेजे जाने का मक़सद है। हमारी सारी मेहनत कलिमा **"ला इला-ह इल्लल्लाहु"** के यक़ीन पर उम्मत को लाना है। हर ज़माने में हर नबी ने काम किया है, काम की बुनियाद क्या है? जो असबाब क़ौमों के पास हैं अगर उन असबाब से कोई इख़्तिलाफ़ न हो तो अम्बिया की अपनी क़ौम से कोई लड़ाई नहीं है। लेकिन हर ज़माने में हर नबी की आवाज़ क़ौम की आवाज़ के ख़िलाफ़ रही है। हर ज़माने में हर नबी का कलिमा एक रहा है। कलिमाः **"ला इला-ह इल्लल्लाहु"** लेकिन किसी ज़माने के पेशे वालों की मेहनत से या उनके असबाब से कलिमे की कभी मुवाफ़क़त (यानी सहमति) नहीं हुई। अगर दावत देने वालों का कलिमा असबाब के मुवाफ़िक़ हो जाए तो फिर यह दावत वाली मेहनत नहीं है। नबियों का अपनी-अपनी क़ौमों के साथ और जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इस उम्मत के साथ मामला ही सारा कलिमे पर है। अल्लाह रब्बुल-इज़्ज़त की क़ुदरत से फ़ायदा उठाने के असबाब और कायनाती नक़्शों से फ़ायदा उठाने के असबाब, ये दो चीज़ें बिलकुल मुक़ाबले की हैं। दोनों टक्कर की हैं। हमारी सारी मेहनत का ख़ुलासा यह जो कुछ हो रहा हैः ये मुज़कारे, यह महीने के तीन दिन, यह गश्त, यह तालीम, यह मश्विरा, अगर मेरे दोस्तो! बात तो सख़्त है, क्योंकि बात यह है कि यह सारी मेहनत और कोशिश व जद्दोजहद अगर इस बुनियाद से हटी हुई है तो सरासर फ़ितना है, सरासर धोखा है। मौलाना यूसुफ़ साहिब रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते थे कि अगर गश्तों में यक़ीनों की तब्दीली की मेहनत नहीं है, अगर गश्तों से यक़ीनों की तब्दीली की मेहनत और मक़सद नहीं है तो सरासर फ़ितना है। 'दाअ़ी' (दीन की दावत देने वाले) के दावत देने की कोई बुनियाद नहीं सिवाय कलिमा **"ला इला-ह इल्लल्लाहु"** के, कलिमा **"ला इला-ह इल्लल्लाहु"** की दावत का

मतलब यह है कि जिस ज़माने में जिस क़िस्म के असबाब।

असबाब (साधन और ज़राये) दो क़िस्म के हैं- एक असबाब वे हैं जो अल्लाह ने बनाए हैं, जिसमें किसी मख़्लूक़ का हाथ नहीं लगा। एक असबाब वे हैं जिसमें मख़्लूक़ का हाथ लगा है: हरकत करने वाला और हरकत न करने वाला यानी अपनी जगह पर क़ायम।

दोनों क़िस्म के असबाब हैं। कुछ असबाब वे हैं जो सिर्फ़ अल्लाह ने अपनी क़ुदरत से ख़ुद बनाए, कुछ असबाब वे मिलेंगे जिसमें किसी दरजे में मख़्लूक़ का हाथ लग रहा है। अगर यह बात है कि उन असबाब का जो अल्लाह ने बनाए हैं, आसमान, चाँद, सूरज और वे असबाब जो अब बने हैं या आईन्दा बनेंगे, उनसे इस दरजे का इनकार नहीं जिस तरह से बुतों का है। जिस दरजे का इनकार इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने बुतों का किया है, अगर इस दरजे का इनकार तमाम असबाब का नहीं, जो असबाब नये हैं या पुराने हैं, जो असबाब इनसान के हाथों से बने हैं या जो असबाब अल्लाह की बुलन्द ज़ात से बने हैं, अगर उन असबाब से इनकार एक तरह का नहीं है तो ख़ुदा की क़सम उस वक़्त तक ईमान कामिल नहीं होता।

असल में दावत क्यों दी जा रही है? उम्मत को इस तरफ़ क्यों बुलाया जा रहा है? दावत की मेहनत क्यों है?

मौलाना यूसुफ़ साहिब रहमतुल्लाहि अलैहि की बात की शुरुआत यह होती थी कि क़ुदरत से फ़ायदा उठाने के असबाब और कायनात से फ़ायदा उठाने के असबाब। बात यह है कि आमाल पर अज्र और आमाल पर जमे रहना बग़ैर ईमान के बिलकुल मुम्किन नहीं है। न सिर्फ़ आमाल पर अज्र और आमाल पर साबित-क़दम रहना बल्कि नीयत की ख़राबी की वजह और अल्लाह के ग़ैर की नीयत होने की वजह जो बतलाई गई है, वह सिर्फ़ ईमान की कमज़ोरी बतलाई गयी है, कि ईमान की कमज़ोरी से नीयत अल्लाह के ग़ैर की हो जाती है। आलिम, सख़ी और शहीद, जिनको जहन्नम में सबसे पहले डाला जाएगा। ये सबसे बड़े-बड़े आमाल वाले हैं। ये सबसे बड़े-बड़े आमाल वाले सबसे पहले जहन्नम में डाले जाएँगे। जहन्नम दहकाई जाएगी उन्हीं से, ये जहन्नम की लकड़ियाँ हैं, ये जहन्नम के दहकाने का सामान हैं, ये बड़े-बड़े आमाल।

सिर्फ़ इसी वजह से मौलाना यूसुफ़ साहिब रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते थे कि सिर्फ़ ईमान की कमज़ोरी से नीयत अल्लाह के ग़ैर की हो गई। इसलिए मेरे दोस्तो! सबसे पहली चीज़ और बुनियादी बात जो काम की बुनियाद है, काम

का मक़सद है, वह तमाम इनसानों के यक़ीनों को तमाम असबाब से और तमाम शक्लों से अल्लाह के अहकाम की तरफ़ फेरना, यह काम का मक़सद है, यही काम की बुनियाद है। आमाल उसका फल है, आमाल उसके परिणाम हैं। अगर यक़ीन की तब्दीली से मेहनत की बुनियादें हट गईं हैं, अगर यक़ीन की तब्दीली सामने नहीं है और सिर्फ़ आमाल सामने हैं तो बात सख़्त है।

मौलाना यूसुफ़ साहिब रहमतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते थे कि अगर यक़ीन की तब्दीली के साथ आमाल की मेहनत नहीं है और यक़ीन की तब्दीली पर आमाल का मेयार क़ायम नहीं किया जा रहा है, एहतिसाब पर, अज्र पर, अल्लाह के वायदों के यक़ीन पर, और अल्लाह के तमाम अहकाम के असबाब के मुक़ाबले में दुनिया के तमाम असबाब को नाकारा क़रार यक़ीन करते हुए काम करने वाले नहीं चल रहे हैं, तो यह फ़रमाते थे कि ये बड़े-बड़े आमाल जहन्नम की बड़ी-बड़ी सज़ाओं का ज़रिया बनेंगे।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अ़न्हु जो इस रिवायत को बयान करने में बेचैन हैं, वह अपने आमाल सामने रखकर बेचैन व परेशान हैं। सहाबा का ईमान नमूना है, उस ईमान पर ये आमाल करके इतना ख़ौफ़ है कि बार-बार की बेहोशी और बेचैनी और बेक़रारी।

हर नबी ने आकर सबसे पहले मेयार क़ायम किया है ईमान का। सहाबा ख़ुद फ़रमाते हैं कि हमने ईमान सीखा क़ुरआन सीखने से पहले। ईमान किसको कहते हैं? ईमान हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के एतिमाद पर अल्लाह रब्बुल-इ़ज़्ज़त की ख़बरों को यक़ीनी मानना, ईमान का लुग़वी तर्जुमा है लुग़त में। ईमान किसे कहते हैं, किसी की ख़बर को ख़बर देने वाले के एतिमाद और भरोसे पर यक़ीनी बनाना।

"ला इला-ह इल्लल्लाहु" यानी अल्लाह तआ़ला के तमाम अहकाम (जिनके करने का उसने हुक्म दिया है) और तमाम 'नवाही' (यानी जिन चीज़ों को न करने का हुक्म दिया है) को यक़ीनी मानना, मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के एतिमाद पर, यह तर्जुमा हुआ **"ला इला-ह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्-रसूलुल्लाहि"** का।

जो कुछ आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम अल्लाह की तरफ़ से लेकर आए हैं उस सबको आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के एतिमाद पर यक़ीनी मानना, यह ईमान कहलाता है। अगर आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के लाए हुए को मूसा अ़लैहिस्सलाम के एतिमाद पर या इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम के

एतिमाद पर यक़ीनी मान रहा है तब भी ईमान कामिल नहीं होगा। जो मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की शरीअ़त है उसके हर हिस्से को, उसके हर हुक्म को, उसकी हर बात को, चाहे वह किसी शोबे से मुताल्लिक़ है, उसको हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के एतिमाद पर यक़ीनी मानना, तब ईमान कामिल होगा। इसलिए अ़र्ज़ यह है कि दावत का अपना ख़ास्सा यक़ीन को तरक़्क़ी देना है। यक़ीन को पैदा करना है। हमारे दावत देने का मक़सद यक़ीनों की तब्दीली है। अगर इस मेहनत से यह यक़ीन की तब्दीली वजूद में आ जाए तब आमाल का मेयार क़ायम होगा। इबादत का, मामलात का, ज़िन्दगी गुज़ारने के तरीक़े का, अख़्लाक़ का, इन तमाम चीज़ों का मेयार ईमान पर क़ायम होगा।

इसलिए बात क्या है? बात यह है कि मुस्तक़िल लड़ाई होगी यक़ीनी असबाब और ग़ैर-यक़ीनी असबाब से। अल्लाह के अहकाम वाले असबाब और उसके मुक़ाबले में दुनियावी असबाब, माद्दी असबाब और आमाल की लाईन के असबाब, उनका हर वक़्त टकराव होगा, हर वक़्त मुक़ाबला होगा।

मेरे दोस्तो, अ़ज़ीज़ो, बुज़ुर्गो! यह सोचना कि अल्लाह ने ये असबाब बनाए हैं हमारे लिए, नहीं! बल्कि बात यह है कि असबाब इसलिए नहीं हैं कि हम यूँ कहें कि दुनिया असबाब की जगह है, इसलिए सबब इख़्तियार करो।

मेरे दोस्तो, अ़ज़ीज़ो, बुज़ुर्गो! हम तो अपने ख़्वास को, अ़वाम को, पुरानों को और नयों को, सबको इस रुख़ की तरफ़ लाना चाहते हैं कि यक़ीनी अस़बाब अल्लाह के अहकाम हैं, ग़ैर-यक़ीनी असबाब दुनिया की सारी शक्लें हैं। अब अपने यक़ीनों को ग़ैर-यक़ीनी असबाब से यक़ीनी असबाब की तरफ़ फेरना है। हम यह कहते हैं कि दुनिया दारुल-असबाब (साधनों का घर) है कारख़ानों की हैसियत से, ज़मीनों के एतिबार से, हुकूमतों के एतिबार से, खेती-बाड़ी के एतिबार से, नौकरियों और मुलाज़मतों के एतिबार से, हथियारों और दवाओं के एतिबार से।

मौलाना यूसुफ़ साहिब रहमतुल्लाहि अ़लैहि यूँ फ़रमाते थे कि बस नबियों की लड़ाई उनकी अपनी क़ौमों से यही थी कि अम्बिया क़ौमों से यूँ कहते थे कि दुनिया दारुल-अस्बाब (असबाब और साधनों का स्थान) अल्लाह के अहकाम की हैसियत है अल्लाह पर ईमान लाने वालों लिए। और दुनिया दारुल-असबाब चीज़ों और शक्लों की हैसियत से है अल्लाह की ज़ात का इनकार करने वालों के लिए। अब बिलकुल साफ़ बटवारा हो जाएगा कि दुनिया दारुल-असबाब है लेकिन आमाल की हैसियत से है हमारे लिए। दुनिया

दारुल-असबाब आमाल की हैसियत से है और हम यह बोल रहे हैं कि दुनिया दारुल-असबाब ज़मीन की हैसियत से, नौकरी की हैसियत से, व्यापार की हैसियत से, कारख़ानों की हैसियत से, हुकूमतों की हैसियत से है।

मेरे दोस्तो बुज़ुर्गो! हर नबी की दावत पर दुनिया के दारुल-असबाब होने के एतिबार से ही उनकी क़ौमों की तबाही व बरबादी हुई है। क़ौमे शुऐब तिजारत (व्यापार) में हलाक हुई है, बहैसियत तिजारत को दारुल-असबाब क़रार देने पर। नूह की क़ौम हलाक हुई है अक्सरियत (बहुसंख्या) को बुनियाद बनाने की वजह से। क़ौमे सबा नाकाम हुई है बाग़ात में, बाग़ों को असबाब बनाने की वजह से। क़ौमे सालेह नाकाम हुई हे कारख़ानों और कारीगरी को असबाब बनाने की वजह से।

बिलकुल अलग-अलग रास्ते हैं। अम्बिया अपने साथ अल्लाह के यहाँ से अल्लाह के अहकाम लेकर आते हैं, उनके साथ असबाब होते हैं अल्लाह के अहकाम की लाईन के। उनकी क़ौमों के साथ असबाब होते हैं दुनिया की शक्लों की लाईन के। अब उन दोनों असबाब का मुक़ाबला होता है। अम्बिया दावत के ज़रिये से उनके यक़ीन को उनके असबाब से अपने साथ लाए हुए असबाब की तरफ़ फेरना चाहते हैं, क़ौम अपने-अपने असबाब पर ज़िद करती है, कि हम अपने असबाब पर जमे हुए हैं, मुक़ाबला यहाँ से होता है। अगर अम्बिया की आवाज़ क़ौम की आवाज़ के मुवाफ़िक़ हो जाती तो किसी नबी का अपनी क़ौम के साथ कोई झगड़ा नहीं था।

मेरे दोस्तो, अज़ीज़ो, बुज़ुर्गो! हम दावत में चल रहे हैं असबाब से दोस्ती करके, इसलिए आमाल का वह मेयार क़ायम नहीं हो रहा है जो होना चाहिए। उम्मत सिर्फ़ आमाल पर आ जाए। सच कहता हूँ याद रखियो यह हमारी हद और आख़िरी दरजा नहीं है। हमारा मक़सद, हमारी मन्ज़िल, हमारा निशाना तो यह है कि हर उम्मती अल्लाह रब्बुल-इज़्ज़त की तरफ़ से हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जो अल्लाह के अहकाम लाए हैं, अपने यक़ीन को असबाब से उन अहकाम की तरफ़ फेर ले, यह हमारी मन्ज़िल है, यह हमारा काम है।

सिर्फ़ आमाल पर आ जाना एक दर्जा है। आमाल पर आ जाना, आमाल पर ले आना यह एक दर्जा है। असल मेहनत यक़ीन की तब्दीली की है, कि आया नमाज़ अमल में आई या यक़ीन में आई, हमारी जो मेहनत है दोस्तो बुज़ुर्गो! इस मेहनत की ख़ुसूसियत ही यही है कि हम उम्मत को आमाल के यक़ीन पर लाना चाहते हैं। अब आमाल वालों को भी दावत देंगे, यह नहीं कि

जो अ़मल पर आ गए उनसे हमारा काम पूरा हो गया, जो अ़मल पर नहीं आए उनपर हम मेहनत करेंगे, हमारी मेहनत आमाल के यक़ीन पर लाने की है। अब दावत का जो अपना ख़ास्सा है, यक़ीन की तब्दीली का, हर अ़मल करने वाला भी उसकी दावत देगा और हर अ़मल करने वाला उस दावत को सुनेगा, चाहे वह आदमी अ़मल करता हो या अ़मल न करता हो। हर एक दावत देने का मोहताज होगा, इसलिए कि दावत का अपना ख़ास्सा यक़ीन की तब्दीली है, दावत का अपना ख़ास्सा यक़ीन की तब्दीली है, अ़मल पर आए यक़ीन पर न आए तो अ़मल पर जमे रहना नसीब न होगा। हमारी मेहनत का मक़सद दोस्तो, बुज़ुर्गो! सारे आ़लम के इनसानों को दुनिया की तमाम शक्लों से और असबाब से अल्लाह रब्बुल-इ़ज़्ज़त के अहकाम के असबाब होने की तरफ़ फेरना है। यह हमारी मेहनत का मक़सद है। अगर यह मक़सद हमारे सामने नहीं तो दावत देने वाले के दावत देने की इस्तिक़ामत (यानी अपने अ़मल पर जमे रहने) की कोई बुनियाद नहीं, कि किस बात पर दावत दे। असल में दावत खुद दावत देने वाले के लिए है।

मौलाना यूसुफ़ साहिब रहमतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते थे कि जब दावत देने वाला एक चीज़ की दावत देनी शुरू करेगा तो उस दावत से हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम वाली ज़िन्दगी की तरफ़ बढ़ेगा, आप वाले तरीक़ों की तरफ़ बढ़ेगा। दावत का अपना ख़ास्सा यक़ीन की तब्दीली है, दावत देने वाला अपने यक़ीन की तब्दीली के लिए दावत दे रहा है। दावत असल में यक़ीन की तब्दीली के लिए है, दावत पर जमने और साबित-क़दम रहने की जो वजह है अम्बिया हज़रात दावत में 'बसीरत' पर होते हैं, (यानी उनको अपने दावत देने और उसके मक़सद के बारे में कोई तरद्दुद नहीं होता बल्कि पूरा इत्मीनान होता है)। उनकी दावत यह नहीं कि जो बात सुने तो उसको सुनाए, जो न सुने उससे मुँह फेर लें। नहीं! हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम और आपसे पहले अम्बिया वे दावत में इतनी बसीरत पर होते थे कि रुकावटों और उनकी दावत का रद्द कर देना, उनकी बात का न सुनना, उनको दावत से पीछे न हटाता था, कि रुकावाट आ गई तो काम छोड़ दो, नहीं! काम करने वाले बसीरत पर हों कि मैं इस काम से कामयाबी यक़ीनी समझता हूँ, कि नबी दावत में बसीरत पर होते हैं, अब बसीरत पर कौन, मैं बसीरत पर और जो मेरा एतिबार करे वह बसीरत पर है।

قُلْ هٰذِهٖ سَبِيْلِيْٓ اَدْعُوْٓا اِلَى اللّٰهِ عَلٰى بَصِيْرَةٍ اَنَا وَ مَنِ اتَّبَعَنِيْ۔

तर्जुमाः आप फ़रमा दीजिए कि यह मेरा रास्ता है, मैं (लोगों को) अल्लाह (के एक होने) की तरफ़ बुलाता हूँ कि मैं दलील पर क़ायम हूँ। मैं भी और मेरे साथ वाले भी।

मेरे दोस्तो, बुज़ुर्गो! काम करने वालों को भी काम के ज़रिये से अपने मसाईल के हल का यक़ीन नहीं। बात यह है कि हम अपने काम के साथ असबाब को जोड़कर चल रहे हैं, कि काम सर आँखों पर, बड़ा अच्छा काम है कि इससे लोग आमाल पर आ रहे हैं, तस्बीहात पर आ रहे हैं, ज़िक्र व तिलावत (क़ुरआन पाक पढ़ने) पर आ रहे हैं।

मेरे दोस्तो बुज़ुर्गो! सवाल इस बात का है कि ये आमाल की शक्लों पर आ रहे हैं या उनकी हक़ीक़त पर आ रहे हैं? एक आमाल की शक्ल है एक आमाल की हक़ीक़त है। शक्ल का शक्ल से जब मुक़ाबला होगा तो यह आमाल की शक्ल वाला नाकाम हो जाएगा, कि नमाज की शक्ल के मुक़ाबले में दुकान की शक्ल आयेगी तो दुकान की शक्ल के लिए नमाज़ की शक्ल को छोड़ देगा। अभी हम जिस सतह (स्तर) पर आए हैं मेरे दोस्तो और बुज़ुर्गो यह आमाल की शक्ल है, शक्ल से शक्ल का जब मुक़ाबला होगा तो दो क़िस्म की शक्लें हैं। एक कारोबारी शक्लें, हुकूमती शक्लें हैं और एक उसके मुक़ाबले में अल्लाह के अहकाम की शक्लें हैं। जब शक्ल का मुक़ाबला शक्ल से होता है तो आदमी दुनियावी तक़ाज़ों की वजह से दावत और इबादत के तक़ाज़ों को छोड़ देता है, इसलिए कि शक्ल के मुक़ाबले में शक्ल आई है, हक़ीक़त के मुक़ाबले में जब शक्ल आया करती है तो शक्ल को छोड़ दिया जाता है, हक़ीक़त को इख़्तियार कर लिया जाता है। हम आमाल की शक्ल पर चल रहे हैं, इसलिए जब आमाल की शक्ल के मुक़ाबले में असबाब आते हैं तो हम यूँ कहते हैं कि हाँ! ये आमाल आख़िरत में काम आने वाले हैं, लेकिन दुनिया का निज़ाम (व्यवस्था) असबाब पर चलेगा।

मेरे दोस्तो, अज़ीज़ो, बुज़ुर्गो! हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने सहाबा-ए-किराम को उन असबाब पर उठाया था जो असबाब यक़ीनी थे, दुनियावी असबाब पर सहाबा-ए-किराम को नहीं उठाया, जिनको अल्लाह ने दुनियावी असबाब दिए उनको उनके चलाने के तरीक़े ज़रूर बतलाए। लेकिन यह नहीं कि आपने उनकी तश्कीलें और आपने उनको तरग़ीब दुनियावी असबाब की दी है, नहीं! बल्कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनको उठाया था और उनकी तरबियत की थी।

सहाबा ने फ़रमाया है कि हमने पहले ईमान सीखा और उसके बाद क़ुरआन को सीखा है। उनको पहले ईमान सिखलाया था।

ईमान कैसे सिखलाया था? कि उनसे मश्क़ कराई थी इसपर कि तुम अपनी हाजत और ज़रूरत पर नमाज़ कितनी बार अदा करते हो, और अपनी हाजत और ज़रूरत पर 'सबब' कितनी बार इस्तेमाल करते हो, दोनों में बिलकुल वाज़ेह और स्पष्ट फ़र्क़ बतलाया, बिलकुल ज़ाहिरी फ़र्क़ बतलाया, कि तुम अपनी हाजत पर आमाल इख़्तियार करते हो या असबाब, इसलिए कि असबाब वाले मौजूद थे आमाल वाले बहुत कम थे, आमाल वालों को असबाब वालों के मुक़ाबले पर लाए। जब कोई शिकायत लेकर आता था, अपनी कोई हाजत, अपनी कोई बीमारी, अपना कोई मुक़द्दमा, अपना कोई मसला लेकर जब हाज़िर होता था उसको जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने साथ लाए हुए अल्लाह के अहकाम बतलाया करते थे, कि देख तेरे इस मर्ज़ के लिए यह नमाज़, तेरे फ़क्र और तंगदस्ती के लिए ये आयतें हैं। यह नहीं कि हुज़ूर पाक ने उनको दुनियावी असबाब बतलाए।

मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ साहिब यूँ फ़रमाते थे कि अब तो हमने तक़सीम कर ली है कि आमाल काम आयेंगे आख़िरत में और असबाब काम आयेंगे दुनिया में, कि ये असबाब (यानी साधन) अल्लाह ने बेकार थोड़ा ही बनाये हैं, इन असबाब को इख़्तियार करो। नहीं! मेरे दोस्तो, प्यारो, बुज़ुर्गो! यह दुनिया साधनों और असबाब की जगह है अल्लाह के अहकाम के हमारे लिए। और दुनिया दारुल-असबाब चीज़ों और शक्लों की हैसियत से ग़ैरों के लिए। यह सबक़ याद करना पड़ेगा कि दुनिया दारुल-असबाब अहकाम की हैसियत से हमारे लिए, और दुनिया दारुल-असबाब शक्लों की हैसियत से अल्लाह को न मानने वालों के लिए।

आज दुनिया भर में फिर कर देख लें, जितना असबाब का ढेर अपने न मानने वालों पर लगाया है अल्लाह ने वह असबाब ईमाना वालों को नहीं दिए। सबसे कम साधन होंगे उनके पास जो अल्लाह को मानने वाले हैं, बल्कि इतना ही नहीं, जब अल्लाह रब्बुल-इज़्ज़त किसी नबी से काम लेने का इरादा फ़रमाते हैं तो उन असबाब को कम-से-कम करते चले जाते हैं, यहाँ तक कि जो सबब उनके हाथ में रह जाता है उसको इतनी भयानक शक्ल अता फ़रमाते हैं और उसे इतनी भयानक शक्ल देते हैं कि वह जो उस असबाब के मुनाफ़े और उस असबाब के फ़ायदे और उनसे अपनी हाजतों के पूरा होने की

तफ़सील बयान करते हैं, वह अब उन असबाब से डरकर भागते हैं और उनसे पनाह माँगते हैं। मूसा अ़लैहिस्सलाम पर उनके सबब को इतना भयानक बनाया, इतना भयानक उनके सबब को बनाया कि वही नहीं जिनके पास अस्बाब थे वह भी डरे और जिनके हाथ में यह सबब था वह भी डरे।

बात यह है कि बात यहाँ से चलेगी कि अम्बिया अल्लाह रब्बुल-इ़ज़्ज़त के यहाँ दावत देने वाले कब शुमार किए जाते हैं? चयन अल्लाह की तरफ़ से इसपर होता है कि देखें तुम असबाब का कितना यक़ीन लेकर चल रहे हो, असबाब का कितना असर क़बूल करते हो। अगर असबाब का असर क़बूल करके चल रहे हो तो:

اَنِّیْ لَا یَخَافُ لَدَیَّ الْمُرْسَلُوْنَ

कि हमारे यहाँ काम की शर्तों में सबसे पहली शर्त यह है कि हम जिस काम के लिए भेजें उसमें असबाब का ख़ौफ़ बिलकुल नहीं होना चाहिए। हम तुम्हें जिस काम के लिए भेज रहे हैं उसमें असबाब का ख़ौफ़ किसी दरजे में नहीं होना चाहिए। लेकिन अब यह हो रहा है कि भाई कोई पुराना बात करेगा तो बात शुरू होगी समाज से। कोई यूँ कहेगा कि यहाँ मामलात में बड़ी कमी है, तो बात शुरू हो जाएगी मामलात से। कोई कहेगा कि मजमा इस क़िस्म का है, इसलिए बात की जाए अख़्लाक़ की बुनियाद पर, तो बात शुरू हो जाएगी अख़्लाक़ से। मौलाना यूसुफ़ साहिब रहमतुल्लाहि अ़लैहि इस कोशिश में थे कि हमारा मजमा और हमारा स्टॉफ़ उसकी हर मजलिस की शुरुआ़त ईमान से हो। जब वह बुनियाद सामने नहीं जिस बुनियाद पर आमाल का मेयार क़ायम होगा, अख़्लाक़ और समाज का मेयार क़ायम होगा, इबादत और मामलात का मेयार क़ायम होगा।

मेरे दोस्तो, प्यारो, बुज़ुर्गो! तुम सिर्फ़ आमाल से बातिल का मुक़ाबला हरगिज़ नहीं कर सकते। बातिल आएगा इल्म के मुक़ाबले में तो इल्म छोड़ दोगे। बातिल आएगा ज़िक्र के मुक़ाबले में तो ज़िक्र छोड़ दोगे। बातिल आएगा नमाज़ के मुक़ाबले में तो नमाज़ छोड़ दोगे। बातिल आएगा इख़्लास के मुक़ाबले में तो इख़्लास छोड़ दोगे। बातिल आएगा इकराम के मुक़ाबले में तो इकराम छोड़ दोगे।

मौलाना यूसुफ़ साहिब रहमतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते थे कि ग़ैरों के मुक़ाबले में मुसलमानों को अ़मल से नहीं चमकाया जाएगा, बल्कि यक़ीन से चमकाया

जाएगा। मेरे दोस्तो, प्यारो, बुज़ुर्गो! बात यह है, भाई बात ठीक है कि तुम्हारी मस्जिद में सौ-फ़ीसद नमाज़ी हो गए, लेकिन उन सौ-फ़ीसद नमाज़ियों की नमाज़ वहाँ तक है जहाँ तक कोई दुनिया का सबब या कोई ताक़त कोई मख़्लूक़ उनके मुक़ाबले में न आ जाए। इसलिए कि हमने अ़मल सीखा, यक़ीन नहीं सीखा। अब इल्म के मुक़ाबले पर हुकूमतें आयेंगी, पर तुम्हारे पास कोई मुक़ाबले की चीज़ नहीं, तुम यूँ कहोगे कि चार बातें हम तुम्हारी मान लेते हैं और चार बातें तुम हमारी मान लो, ख़ुदा की क़सम यह नाकामी का रास्ता है। किसी नबी ने आकर अपनी क़ौम से अल्लाह के अहकाम के मुक़ाबले में कभी दोस्ती नहीं की, हम इसपर चल रहे हैं कि चलो चार बातें हम तुम्हारी मान लेते हैं और चार बातें तुम हमारी मान लो। तायफ़ के क़बीले सक़ीफ़ ने आकर कहा कि अच्छा हम इस बात पर इस्लाम लाते हैं कि हम अपने बुत को एक साल तक बाक़ी रखेंगे, हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने कहा कि हम उसको एक मिनट भी बाक़ी नहीं रखेंगे। हाँ! यह नहीं होगा कि शिर्क के साथ आमाल को करो, वे नमाज़ पर राज़ी हो गए थे लेकिन वे यूँ कहते थे कि हमारा बुत बाक़ी रहेगा, हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, नहीं! तुम्हारा बुत हम तुड़वायेंगे क्योंकि आमाल के साथ शिर्क नहीं चलेगा। उन्होंने कहा अच्छा ठीक है, पर हमारी क़ौम अभी उससे मानूस नहीं है, जब क़ौम मानूस हो जाएगी तब बुत को तोड़ देंगे, आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि नहीं, यह तो पहले दिन ही करना पड़ेगा, अब बात क्या है?

मेरे दोस्तो! सच्ची बात यह है कि तुम हुकूमत के यक़ीन के साथ आमाल कर लोगे, तुम हुकूमत के यक़ीन के साथ क़ुरआन पाक की तिलावत कर लोगे, हुकूमत के यक़ीन के साथ तुम ज़िक्र, तस्बीह पूरी कर लोगे, लेकिन जब आमाल के मुक़ाबले में बातिल ताक़तें आएँगी तो क़सम खाकर कहता हूँ कि आमाल वाले आमाल छोड़ देंगे, ज़िक्र वाले ज़िक्र छोड़ देंगे, इल्म वाले इल्म छोड़ देंगे। बात क्या है? बात यह है कि बातिल के मुक़ाबले पर अ़मल नहीं आया करता बल्कि बातिल के मुक़ाबले पर यक़ीन आया करता है। फिर जो आमाल यक़ीन वाले होंगे वे तमाम असबाब का मुक़ाबला करेंगे, यक़ीन वाले आमाल करेंगे मुक़ाबला असबाब का, वरना आमाल का असबाब से कोई मुक़ाबला नहीं, इसलिए कि इसके पास अ़मल की शक्ल है और उसके पास कारख़ाने की शक्ल है। शक्ल के मुक़ाबले पर शक्ल आ गई। जब शक्ल के मुक़ाबले पर शक्ल आएगी तो उसमें से एक शक्ल को छोड़ दिया जाएगा। कौनसी शक्ल को

छोड़ा जाएगा? जो शक्ल वायदा की हुई है, कि नमाज़ पर अल्लाह यह देंगे। यह मौजूद शक्ल को इख़्तियार करेगा, वायदा की हुई और आने वाली शक्ल को छोड़ देगा।

मौजूद शक्ल क्या है? मौजूद शक्ल कारख़ाने हैं, दुकाने हैं, नौकरी है, ज़मीनें हैं, हुकूमतें हैं, खेती-बाड़ी हैं, सरमायादारियों के नक़्शे हैं, ये तमाम की तमाम मौजूद शक्लें हैं। और वायदा की हुई शक्लें क्या हैं, यह नमाज़ है, ज़िक्र है, तिलावत है, यह नेक आमाल हैं, ये सारी की सारी की वायदा-शुदा शक्लें हैं। अगर यक़ीन न बदले गए तो मौजूद शक्लों के मुक़ाबले में वायदा की हुई शक्लों को छोड़ दिया जाएगा। इसलिए उम्मत के अन्दर जो दीन आ रहा है वह नाक़िस (अधूरा) आ रहा है, इस नाक़िस दीन पर अल्लाह के वायदे न कभी पूरे हुए हैं न कभी पूरे होंगे। इसलिए कि अल्लाह रब्बुल-इज़्ज़त की तरफ़ से मेरे दोस्तो, प्यारो, बुज़ुर्गो! कामयाबी का जो वायदा है वह कामिल दीन पर है, हमारा दीन 'जुज़वी' (यानी आंशिक) है, इसलिए कि दीन हमारी ज़िन्दगियों में दावत के रास्ते से नहीं आ रहा है। हम दावत देते हैं आमाल की, देखो मौलाना यूसुफ़ साहिब रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते थे कि जब दावत दी जाएगी ईमान की तब दीन यक़ीन के रास्ते से ज़िन्दगियों में आएगा। हम बुला रहे हैं सिर्फ़ आमाल की तरफ़।

'हय्-य अलस्सलाति, हय्-य अलल्-फ़लाहि' का दर्जा बाद में आया, **'अल्लाहु अकबर् अल्लाहु अकबर्, अशहदु अल्ला-इला-ह इल्लल्लाहु, अशहदु अन्-न मुहम्मदर्-रसूलुल्लाहि'** अज़ान में पहले है। बड़ाई पर पहले बुलाया, अल्लाह के माबूद होने पर पहले बुलाया, नबी-ए-पाक के रसूल होने की गवाही पर पहले बुलाया, कि अगर तुम अमल से पहले यक़ीन पर नहीं बुलाओगे तो उस अमल पर 'इस्तिक़ामत' यानी जमाव नहीं होगा। और अगर यह उस अमल पर है तो मौजूद शक्ल वायदा की हुई शक्ल को आकर ख़त्म कर देगी।

देखो मेरे दोस्तो! अगर यक़ीन नहीं सीखा तो हमारा दीन 'जुज़वी' (यानी आंशिक) होगा, जुज़वी दीन किसे कहते हैं? जुज़वी दीन उसको कहते हैं कि हम दुनिया के साथ मिलकर अपने लिए एक दीन मुरत्तब कर लें कि मेरे माहौल में इतने दीन पर चलना मुनासिब है। यह हालात का दीन, यह माहौल का दीन, यह सियासत का दीन, ये सारे-के-सारे दीन वक़्ती हैं, ये सारे-के-सारे दीन जुज़वी हैं, इसपर न कभी अल्लाह ने कामयाब किया है और न कभी करेंगे।

मेरे दोस्तो, प्यारो, बुज़ुर्गो! कामिल दीन वह है जो ईमान के तक़ाज़े पर हो। एक दीन वह है जो ईमान के तक़ाज़े पर आएगा। जो दीन ईमान के तक़ाज़े पर आएगा वह दीन माहौल को नहीं देखेगा। वह दीन हालात को नहीं देखेगा। वह दीन हुकूमतों और ताजिरों को नहीं देखेगा। क्योंकि दीन आ रहा है अन्दर के तक़ाज़े पर। माहौल से ईमान वाला दीन टकराया करता है, बग़ैर ईमान वाला दीन कभी माहौल से नहीं टकराएगा, बल्कि बग़ैर ईमान वाला दीन माहौल का पाबन्द होकर चलेगा। इसलिए हमारा दीन जुज़वी है कि हमें अपने दीन से कामयाबी का यक़ीन नहीं, इसलिए हमारा दीन जुज़वी है।

कामिल दीन किसे कहते हैं? कामिल दीन इसको कहते हैं कि मेरा अल्लाह मुझसे इस वक़्त क्या चाह रहा है, जो मेरा अल्लाह मुझसे इस वक़्त चाह रहा है, वह हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के तरीक़े के मुताबिक़ इस वक़्त हो रहा है कि नहीं हो रहा है, इसका नाम दीन है।

अब बात क्या है? अब बात यह है कि सबसे पहला काम दावत के ज़रिये से अपने यक़ीनों को बनाना है। दावत असल में यक़ीन की तब्दीली के लिए है, और दावत खुद दावत देने वाले के लिए है। दावत किसके लिए है? दावत खुद दावत देने वाले के लिए है, जिसको दावत दी जा रही है उसके लिए बाद का दर्जा है, दावत खुद दावत देने वाले के लिए है। कलिमाः **ला इला-ह इल्लल्लाहु** की दावत खुद अपने यक़ीन की तब्दीली के लिए है।

हम यह समझ रहे हैं कि दावत है दूसरों के लिए। मैं नमाज़ी हो गया अब मेरी दावत बे-नमाज़ियों के लिए है। मैं ज़ाकिर हो गया अब मेरी दावत ग़ाफ़िलों के लिए है। मैं आ़लिम हो गया अब मेरी दावत जाहिलों के लिए है। मैं अच्छे अख़्लाक़ वाला हो गया अब मेरी दावत बुरे अख़्लाक़ वालों के लिए है। नहीं! मेरे दोस्तो, यह बात नहीं है बल्कि दावत हमेशा खुद दावत देने वाले के लिए है। जिस तरह व्यापारी का व्यापार खुद व्यापारी के लिए है, उसका नफ़ा दूसरों को पहुँचता है, बिलकुल इसी तरह दावत देने वाले की दावत खुद अपनी ज़ात के लिए है, उसका नफ़ा दूसरों को पहुँचेगा।

तो कलिमा **ला इला-ह इल्लल्लाहु** अपने यक़ीन की तब्दीली के लिए है। जितना इस कलिमे की तरफ़ बुलाएगा, जितना इसकी दावत देगा उसी क़द्र उसका यक़ीन अल्लाह के ग़ैर से अल्लाह की बुलन्द ज़ात की तरफ़ फिरेगा। अब तक हमारा ख़्याल यह था कि मैं अ़मल कर रहा हूँ अब दूसरों को दावत दें। नहीं! बल्कि अगर उसकी दावत दूसरों के लिए हो गई तो फिर मेरे दोस्तो,

प्यारो, बुज़ुर्गो! अपनी इस्लाह (यानी सुधार) की नीयत न रहेगी बल्कि दूसरों की इस्लाह की नीयत हो जाएगी। हम बावजूद सालाना चार महीनों के, बावजूद चिल्लों के, बावजूद महीने के तीन दिन के, बावजूद गश्तों के, बावजूद तालीम के, बावजूद दावत देने के, हम क्यों काम में तरक़्क़ी नहीं कर रहे हैं? हमारे अपने यक़ीनों में तरक़्क़ी क्यों नहीं? भाई अब बात असल में यहाँ आकर ठहर गई कि काम करने वाले, उम्मत को आमाल पर आते देखकर मुत्मईन हो जाते हैं। हमारे यहाँ बंगले वाली मस्जिद में बिहार वाले आए। बिहार वालों ने बताया कि जी हमारे यहाँ इतने फ़ीसदी लोग नमाज़ी हो गए। बस दस फ़ीसद लोग रह गए हैं, उनपर मेहनत बाक़ी है। मैंने कहा भाई इसका मतलब यह है कि अब तब्लीग़ तो हो गई ख़त्म, क्योंकि अब तक तुम्हारे सामने अ़मल की फ़ीसद वाले आए, यक़ीन की फ़ीसद वाले नहीं आए। तुम काम का मेयार देख रहे हो कि अ़मल की फ़ीसद कितनी बनी, हम यह देखना चाह रहे हैं कि ऐसे यक़ीन की फ़ीसद वाले कितने बन गए। फिर हमने उनसे यह कहा कि तुम हमें यह बताओ कि तुमने यक़ीन वाली नमाज़ के दावत देने वाले कितने पैदा किए।

देखो मेरो दोस्तो, प्यारो, बुज़ुर्गो! उम्मत का आमाल पर आ जाना यह हमारे काम की आख़िरी हद नहीं है। यह उम्मत अ़मल पर आती रहेगी और अ़मल को छोड़ती रहेगी। अ़मल पर चढ़ती रहेगी और अ़मल से फिसलती रहेगी। बग़ैर यक़ीन के आमाल पर जमाव नहीं होता। हमारे अ़मलों पर जो साबित-क़दमी और जमाव होगा वह यक़ीन के बक़द्र होगा। इसलिए सहाबा कहते हैं कि हमने सबसे पहले दावत के ज़रिये से यक़ीन का बनाना सीखा है, फिर यही दावत ईमान से आमाल में मुन्तक़िल होगी, कि आमाल की दावत दो, उन आमाल की हक़ीक़त को सामने रखते हुए। अगर दावत देने वाले के सामने दावत देते हुए बे-नमाज़ी है तो उस दावत देने वाले के अन्दर उसकी अपनी नमाज़ में हक़ीक़त न आएगी बल्कि दावत देने वाला नमाज़ की हक़ीक़त सामने रखकर दावत दे। देखो दावत देने वाला नमाज़ की हक़ीक़त सामने रखकर दावत दे, बे-नमाज़ी को सामने रखकर दावत नहीं है। अभी हम दावत दे रहे हैं बे-नमाज़ियों को सामने रखकर, या हम दावत दे रहे हैं ग़ाफ़िलों को सामने रखकर, या हम दावत दे रहे हैं जाहिलों को सामने रखकर।

नहीं! मेरे दोस्तो, बुज़ुर्गो! दावत सहाबा वाले ईमान को सामने रखकर ईमान की दावत, सहाबा की नमाज़ को सामने रखकर नमाज़ की दावत, हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के इल्म को सामने रखकर इल्म की दावत, हुज़ूर

सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के ज़िक्र को सामने रखकर ज़िक्र की दावत, हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम वाले अख़्लाक़ को सामने रखकर इकराम की दावत, हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के इख़्लास को सामने रखकर इख़्लास की दावत। असल में दावत के ज़रिये से अपने यक़ीनों की तब्दीली मक़सूद है, यह नहीं कि दूसरों को क़ायल करना मक़सूद है। मौलाना यूसुफ़ साहिब रहमतुल्लाहि अ़लैहि की हिदायत में यह है कि 'दाअ़ी' (यानी दावत देने वाले) का रुख़ यह न हो कि हम दूसरों को क़ायल करने के लिए दावत दे रहे हैं, नहीं! बल्कि यक़ीन की तब्दीली के लिए हम दावत दे रहे हैं।

अगर यह अपने यक़ीन की तब्दीली के लिए दावत दे रहा है तो इसकी दावत में वह तासीर पैदा होगी जिसपर अल्लाह रब्बुल-इ़ज़्ज़त इसकी दावत को दूसरों की हिदायत का ज़रिया बना देगा, या इसकी दावत से दूसरों को हिदायत मिलेगी। और अगर उनकी क़िस्मत में हिदायत नहीं तो फिर यह दावत के इनकार से हलाक होगा।

हलाकत या हिदायत जो अल्लाह की तरफ़ से आएगी वह मेरे दोस्तो इस पर आएगी कि 'दाअ़ी' (दावत देने वाला) अपने यक़ीन की तब्दीली के लिए दावत देगा, दाअ़ी बसीरत पर होगा कि दावत देने वाला यक़ीन पर हो। उसकी दावत का इनकार कर देने वाले उसे दावत से पीछे न हटा दें। देखो भाई बात यह है कि अगर हम दावत दे रहे हैं दूसरों के लिए तो दो बातों के अ़लावा तीसरी बात न होगी- या तो वे लोग बात क़बूल करेंगे या बात का इनकार करेंगे। अगर उन्होंने बात क़बूल कर ली तो दावत देने वाले में घमण्ड आएगा, दावत देने वाले में तकब्बुर आएगा कि मेरी मेहनत पर इतने लगे, मेरी मेहनत पर इतने बने। मैंने फ़लाँ इलाक़ा उठा दिया। यह क्या हुआ कि दावत उसने दी दूसरों के लिए तो उनके बात मानने से इसमें घमण्ड और तकब्बुर आया। और अगर उन लोगों ने बात न मानी और इनकार किया तो या तो उसके अन्दर गुस्सा आएगा या उसके अन्दर मायूसी आएगी। अब यह काम छोड़ देगा कि लोग बात नहीं मानते। नहीं! बल्कि दावत देने वाला दावत दे रहा है अपने यक़ीन की तब्दीली के लिए। यह अपने यक़ीन की तब्दीली के लिए दावत दे रहा है, किसी का बात मानना या किसी का बात न मानना इससे उसकी अपनी दावत में कोई कमी न आएगी, इसलिए कि क़ियामत में अम्बिया पेश किए जायेंगे, और उम्मतें उनपर पेश की जायेंगी।

एक वह नबी होंगे जिनके साथ उनकी बात को मानने वाले बहुत-से

होंगे। एक वह नबी होंगे जिनके साथ एक बड़ी उम्मत होगी। एक नबी वह होंगे जिनके साथ अस्सी लोग होंगे। एक नबी वह होंगे जिनके साथ चन्द लोग होंगे। लेकिन ऐसे भी नबी होंगे जिनके साथ कोई नहीं होगा, किसी ने उनकी बात नहीं मानी, यहाँ तक कि दुनिया में दावत देने का उनका काम पूरा हुआ, काम पूरा कर दिया दावत देने का, इसपर अल्लाह ने उनको हटा लिया और क़ौम को तबाह कर दिया। तो अल्लाह रब्बुल-इज़्ज़त ने उनकी दावत पर क़ौम को तबाह किया या क़ौम को हिदायत दी। लेकिन वह नबी जिनके साथ कोई नहीं होगा, वे अपनी दावत में बिलकुल कामयाब हैं। यह नहीं कि वे नबी नाकाम हो गए। अल्लाह की तरफ़ से तमाम अम्बिया अपनी दावत में सौ-फ़ीसद कामयाब हैं। जिसको दावत दी जा रही है अगर वह बात नहीं ले रहा है तो दावत देने वाला इसको अपनी कोताही समझे। यह नहीं कि ये बात नहीं मानते।

जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपनी कमज़ोरी का इक़रार कर रहे हैं। अपनी कमी अल्लाह के सामने रख रहे हैं कि ऐ अल्लाह! मैं नहीं कर सका। यह नहीं कि दावत देने वाला 'मदऊ' (जिसको दावत दी गयी है) की शिकायत करे। दावत देने वाला शिकायत करेगा कि ऐ अल्लाह! मैं उनको समझा नहीं सका। बात क्या है कि दाअ़ी की दावत उसके अपने लिए है, इसलिए कभी उसमें मायूसी नहीं आएगी और कभी गुस्सा नहीं आएगा, कि अगर ये बात नहीं मानते तो गुस्सा आ जाये, क्योंकि दावत अपनी ज़ात के लिए है।

इसलिए मेरे दोस्तो, प्यारो, बुज़ुर्गो! हम जो दावत दे रहे हैं, यह बात अच्छी तरह याद रखें कि हम दावत दे रहे हैं अपने यक़ीनों को बदलने के लिए। हमारी दावत अपने यक़ीनों की तब्दीली के लिए है। अगर यह दावत दूसरों के यक़ीनों को बदलने के लिए या दूसरों को अ़मलों पर लाने के लिए दी जा रही है तो फिर इसका मतलब यह है कि हमारी अपनी दावत से हमारे यक़ीन न बदलेंगे।

फिर दावत नबियों से नबियों में मुन्तक़िल हुई है। हर ज़माने में एक नबी आए दावत दी और चले गए। दूसरे नबी आए, दावत दी और चले गए। जब एक नबी काम करके जाते तो उनके बाद दूसरे नबी आ जाते। अम्बिया का सिलसिला इसी तरह जारी रहा। हर ज़माने में नबियों का सिलसिला जारी रहा। जब अगला नबी आता तो कहते कि पिछले नबी भी नबी थे, अल्लाह के बन्दे थे। असल में होता यह था कि उम्मत उस नबी को उनके मोजिज़ों की वजह

Maktabe Ashraf

से ख़ुदा समझ बैठती थी। जब यह नबी चले जाते तो फिर अगले नबी उनके यक़ीन की तब्दीली के लिए आते। यही काम आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने और आप से पहले अम्बिया ने किया था।

आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने वह काम उम्मत को सिखलाया, यहाँ आकर मेहनत का नक़्शा बदल गया। आपकी ज़िम्मेदारी बदली, आपने उम्मत को काम भी सिखलाया और दीन भी सिखलाया, यानी दीन भी सिखलाया और दीन की मेहनत भी सिखलाई। यहाँ आकर मेहनत का रुख़ बदल गया। यहाँ आपने आकर उम्मत को यक़ीन की तब्दीली की मेहनत भी सिखालाई और यक़ीन भी सिखलाया। ईमान भी सिखलाया और ईमान की मेहनत भी सिखलाई। नमाज़ भी सिखलाई और नमाज़ को ज़िन्दा करने की मेहनत भी सिखलाई। इल्म व ज़िक्र भी सिखलाया और इल्म व ज़िक्र को ज़िन्दा करने की मेहनत भी सिखलाई। उम्मत को सिर्फ़ दीन पर नहीं डाल दिया कि तुम अपने इन्फ़िरादी (अकेले के) आमाल करो, बल्कि उम्मत को दीन भी सिखलाया और दीन को ज़िन्दा करने की मेहनत भी सिखलाई। बल्कि मौलाना यूसुफ़ साहिब रहमतुल्लाहि अ़लैहि यूँ फ़रमाते थे कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने दीन सिखलाने से ज़्यादा मेहनत दीन की मेहनत सिखलाने पर की है कि उम्मत को नुबुव्वत वाला काम दिया, नुबुव्वत वाला काम उम्मत के हवाले किया।

मेरे दोस्तो बुज़ुर्गो! अगर हम इसपर हैं कि उम्मत आमाल पर आ जाए तो इसका मतलब यह है कि हम दावत की मेहनत को ज़िन्दा नहीं कर रहे हैं। जो ज़िम्मेदारी हम पर एक आदमी को नमाज़ी बनाने की है वही ज़िम्मेदारी हम पर उसे नमाज़ का 'दाअ़ी' (दावत देने वाला) बनाने की है। एक ज़िम्मेदारी हम पर जिस तरह एक आदमी को कलिमा **ला इला-ह इल्लल्लाहु** सिखाने की है जिसे कलिमा नहीं आता, इसी तरह उसको कलिमा **ला इला-ह इल्लल्लाहु** का दाअ़ी बनाने की है। यह बिलकुल काफ़ी नहीं है कि हम एक आदमी को अ़मल पर लाकर छोड़ दें। हमारी ज़िम्मेदारियाँ दो हैं- कलिमा सिखलाना, कलिमे का दाअ़ी बनाना, नमाज़ सिखलाना और नमाज़ का दाअ़ी बनाना, इल्म व ज़िक्र सिखलाना और इल्म व ज़िक्र का दाअ़ी बनाना, इकराम सिखलाना और इकराम का दाअ़ी बनाना, इख़्लास सिखलाना और इख़्लास का दाअ़ी बनाना, दावत सिखलाना और दावत देने वाला बाना। ये दो ज़िम्मेदारियाँ हैं उम्मत की। सिर्फ़ अपनी ज़ात से अ़मल कर लेना इस उम्मत की ज़िम्मेदारी नहीं है, बल्कि इस तरह ज़िम्मेदारी नहीं। उम्मत के घाटे से निकलने के लिए भी इस उम्मत का

अपनी ज़ात से अ़मल कर लेना काफ़ी नहीं है। यह बात बिलकुल यक़ीनी है और दावे के साथ कही जा सकती है कि यह उम्मत बग़ैर दावत के कभी घाटे से निकल नहीं सकती।

मेरे दोस्तो, प्यारो, बुज़ुर्गो! हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इस उम्मत को इन्फ़िरादी बुनियाद पर उठाया ही नहीं था, इरशाद है: **कुन्तुम् ख़ै-र उम्मतिन् उख़्रिजत् लिन्नासि तअ़्मुरू-न बिल्मअ़्रूफ़ि व तन्हौ-न अ़निल् मुन्करि व तुअ़्मिनू-न बिल्लाहि।** तुम्हें भेजा ही गया है इनसानों के लिए **'लाम'** ख़ास करने के लिए है। तुम्हें ख़ास तौर से भेजा गया है, किस लिए भेजा गया है: **तअ़्मुरू-न बिल्मअ़्रूफ़ि** अल्लाह की ज़ात का तआ़रुफ़ (परिचय) कराना, अल्लाह की क़ुदरत को, उसके रब होने को, ग़ैबी निज़ाम को, ग़ैबी ख़ज़ानों को समझाना और अल्लाह की ज़ात और सिफ़ात में किसी भी चीज़ के शरीक करने से लोगों को रोकना। तुम्हें ख़ास तौर पर इसी लिए भेजा गया है। अब मेहनत शख़्सी, अब मेहनत क़ौमी, अब मेहनत इलाक़ाई या ज़बान की बुनियाद पर, या मुल्क की बुनियाद पर, या राज्य की बुनियाद पर, या मेहनत ज़िलों की बुनियाद पर, इन बुनियादों पर मेहनत करके यह उम्मत कभी कामयाब नहीं हो सकती, क्योंकि यह मेहनत अम्बिया की है, ख़ातिमुल-अम्बिया सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की मेहनत की बुनियाद यह नहीं। पिछले नबी किसी क़ौम के या किसी इलाक़े के या किसी मुल्क के या किसी बस्ती के या यह नबी किसी पेशे वालों के, या यह नबी किसी अक्सरियत वालों के, यह नबी दस्तकारों के, यह नबी वज़ीरों और ताजिरों में, अम्बिया अपने-अपने ज़माने में अपनी-अपनी क़ौमों में मेहनत करने के लिए भेजे गए। वहाँ अ़ज़ाब आया तो सीमित, मदद आई तो वह सीमित, वहाँ अ़ज़ाब आया तो सीमित कि इस क़ौम पर आएगा दूसरी क़ौम पर नहीं आएगा। एक क़ौम बन्दर बनाई गई तो दूसरी क़ौम की शक्लों में कोई तब्दीली नहीं हुई। ज़लज़ले आए उनकी ज़मीनों में, सैलाब आए उनकी ज़मीनों में। लेकिन यह उम्मत, इस उम्मत के साथ जो मामला अल्लाह का होगा। पहली बात तो यह दोस्तो बुज़ुर्गो! ख़ुशख़बरी है इस उम्मत के लिए वह यह कि इस उम्मत पर आ़म अ़ज़ाब नहीं आएगा। क्यों नहीं आएगा? इसलिए कि अ़ज़ाब आता है उस उम्मत पर जिस पर नबी के बाद नबी आना है, उस उम्मत पर अ़ज़ाब नहीं आना, जिस उम्मत पर नबी के बाद नबी नहीं आना, बल्कि उम्मत को नुबुव्वत वाला काम दिया गया है, जिसे नुबुव्वत वाला काम करना है। इसलिए इस उम्मत पर

उमूमी अज़ाब नहीं आना है, क्योंकि यह उम्मत तबाह नहीं होगी, हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने माँग लिया अल्लाह से कि "ऐ अल्लाह! यह मुठ्ठी भर लोग हैं, अगर ये हलाक हो गए तो फिर इस ज़मीन पर तेरा तआ़रुफ़, तेरी ज़ात और सिफ़ात की पहचान न कराई जा सकेगी।

अब बात क्या है? बात यह है कि दावत की मेहनत नुबुव्वत से उम्मत की तरफ़ मुन्तक़िल हुई है। किस तरह हुई है? हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने सबसे पहले लाकर कलिमे को जो पेश किया है, वह उम्मत के तीनों तब्क़ों पर पेश किया है- औरत, मर्द और बच्चा। हज़रत ख़दीजा, अबू बक्र सिद्दीक़ और हज़रत अ़ली इब्ने अबी तालिब रज़ियल्लाहु अ़न्हुम। इनसानियत के तीनों तब्क़ों पर आपने आकर दावत को पेश किया, फिर दुनिया से तशरीफ़ ले जाते हुए उसामा रज़ियल्लाहु अ़न्हु के लश्कर की रवांगी, दावत को उम्मत पर यूँ पेश किया। जब नबी बनाए गए और दावत को उम्मत पर यूँ पेश किया, जब आप दुनिया से तशरीफ़ ले गए। आते हुए जाते हुए दोनों मौक़ों पर उम्मत को काम देकर गए हैं।

मेरे दोस्तो, प्यारो! अगर इस वक़्त उम्मत इलाक़ाइयत की या क़ौमियत या ज़बान की या बिरादरी की या रंग की, इन बुनियादों पर सोचेगी तो अल्लाह रब्बुल-इ़ज़्ज़त का इस उम्मत के साथ "मदद" का वायदा इन बुनियादों पर हरगिज़ नहीं है, ये सारी बुनियादें ख़त्म हो गईं। **"इन्नी रसूलुल्लाहि इलैकुम् जमीअ़न्"** मैं एक वक़्त में तुम सब पर नबी बनाकर भेजा गया हूँ।

आप चूँकि शुऐब अ़लैहिस्सलाम के इमाम हैं इसलिए आप तिजारत (व्यापार) से न होने के यक़ीन को भी लाए। आप नूह अ़लैहिस्सलाम के इमाम हैं आप अक्सरियत से न होने के यक़ीन को लाए। आप सालेह अ़लैहिस्सलाम के इमाम हैं आप कारख़ानों से न होने के यक़ीन को लाए। आप यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम के इमाम हैं आप विज़ारतों से न होने के यक़ीन को लाए। आप इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम के इमाम हैं आप बादशाहों से और हुकूमतों से न होने के यक़ीन को लाए।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम एक वक़्त में इन सारी शक्लों से न होने के यक़ीन को लाए। जिन सारी शक्लों से न होने के यक़ीन को अपने ज़माने में अम्बिया आदम अ़लैहिस्सलाम से लेकर ईजादात (आविषकारों) के दौर ईसा अ़लैहिस्सलाम तक लेकर आए हैं। मेरे दोस्तो, बुज़ुर्गो! इस दावत को हम समझ लें ज़रा ग़ौर से जिस तरह अ़र्ज़ किया जा रहा है। इसलिए कि उम्मत

तो बेचारी इस मुग़ालते और धोखे में पड़ गई है कि दावत तो ग़ैर-मुस्लिमों के लिए है, इतना बड़ा धोखा लगा मुसलमानों को कि यूँ समझे कि दावत ग़ैरों के लिए है। अब दावत दी जाएगी ग़ैरों को। मेरे दोस्तो उम्मत में दीन से फिर जाने और मुंह मोड़ लेने के आने का रास्ता मुसलमानों के अन्दर से दावत का निकल जाना है। जब उम्मत दावत की मेहनत छोड़ेगी, उम्मत में से उसका उम्मत होना ही ख़त्म हो जाएगा। इतना बड़ा धोखा यह है मुसलमानों को कि दावत ग़ैरों के लिए है, नहीं! बल्कि दावत मुसलमान, मुसलमान को देगा, अल्लाह रब्बुल-इज़्ज़त ईमान लाने का हुक्म ईमान वालों को दे रहे हैं: **या अय्युहल्लज़ी-न आमनू आमिनू** यह नहीं फ़रमा रहे हैं **या अय्युहल्लज़ी-न क-फ़रू आमिनू** कि काफ़िरो! ईमान लाओ। बल्कि काफ़िरों को तो मुसलमान होने की दावत दी जा रही है। मौलाना यूसुफ़ साहिब रहमतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते थे कि जितना मुसलमान, मुसलमान को दावत देगा यह मुसलमान बाक़ी रहेगा।

यह न जाने कहाँ से ग़लत-फ़हमी पैदा हुई कि दावत ग़ैरों के लिए है, नहीं! बल्कि मूसा बनी इस्राईल पर मेहनत फ़िरऔ़न से ज़्यादा कर रहे थे। फ़िरऔ़न को दावत सिर्फ़ इतनी थी कि इस्लाम ले आए, लेकिन सब्र की, तवक्कुल की, अल्लाह के साथ ताल्लुक़ की, अल्लाह के वायदों पर यक़ीन करने की, फ़िरऔ़न की तरफ़ से आने वाली तकलीफ़ों और दुखों पर सब्र करने की, इस सबकी मेहनत जो मूसा अ़लैहिस्सलाम कर रहे थे वह बनी इस्राईल पर कर रहे थे। ईमान की मेहनत ईमान वालों के ऊपर होगी। अ़ब्दुल्लाह इब्ने रवाहा रज़ियल्लाहु अ़न्हु की मेहनत ईमान की ईमान वालों के ऊपर है: **इज्लिस् बिना आमिनू साअ़तन्** कि ईमान की मजलिसें ईमान वाले ईमान वालों के साथ लगायेंगे, ग़ैरों को तो इस्लाम की दावत है कि इस्लाम ले आओ। लेकिन असल में दावत ईमान वाला ईमान वालों को देगा।

अब बात क्या है? अब बात यह है कि अब जिस तब्क़े में घुसकर दावत दोगे, अगर ताजिरों में घुसकर दावत दोगे तो शुऐब अ़लैहिस्सलाम के अनवारात आयेंगे। तुम ज़मीनदारों में घुसकर दावत दोगे, तुम कारख़ाने वालों में घुसकर दावत दोगे तो सालेह अ़लैहिस्सलाम की दावत के अनवारात आएँगे। तुम अक्सरियत वालों में घुसकर दावत दोगे तो नूह अ़लैहिस्सलाम की दावत के अनवारात आयेंगे। जिस क़ौम की तरफ़ जो नबी भेजे गए आज उस क़ौम में घुसकर दावत अगर हम देंगे तो उस क़ौम की तरफ़ जो नबी भेजा गया है उस

नबी की दावत के अनवारात आयेंगे।

मौलाना यूसूफ़ साहिब रहमतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते थे कि दावत की मेहनत करने वालों में और अम्बिया में सिर्फ़ नुबुव्वत के दरजे का फ़र्क़ रह जाता है। यह दावत नुबुव्वत से उम्मत की तरफ़ मुन्तक़िल हुई है, गुनाहों से साफ़-सुथरा करना उम्मत के ज़िम्मे होगा, तालीम उम्मत के ज़िम्मे होगी। जिस तरह अल्लाह ने आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को 'मुअ़ल्लिम' (सिखलाने वाला) बनाकर भेजा है। आपने फ़रमाया **"इन्नमा बुअ़िस्तु मुअ़ल्लिमन्"** कि अल्लाह ने मुझे सिखलाने वाला बनाकर भेजा है। बिलकुल इसी तरह आपका एक-एक उम्मती 'मुअ़ल्लिम' है। जिस तरह आप मुअ़ल्लिम थे इसी तरह आपने अपनें उम्मती को मुअ़ल्लिम बनाया है। फ़रमायाः **बल्लिग़ू अ़न्नी व लौ आयतन्"** कि मुझसे अगर एक आयत भी ले रहे हो तो उसको पहुँचाओ।

मेरे दोस्तो, बुज़ुर्गो! अब मेहनत शख़्सी या मुल्की या इलाक़ाई और क़ौमी नहीं है, बल्कि अब मेहनत 'आ़लमी' (यानी पूरी दुनिया के लिए) है। फ़रमायाः **मुझे तुम सब की तरफ़ रसूल बनाकर भेजा गया है।** उस वक़्त हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम वाली मदद जिसका अल्लाह ने वायदा किया है वह मदद जो अल्लाह की तरफ़ से होगी, अब हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम वाली मदद वह अम्बिया वाले दावत के तर्ज़ पर न होगी, इस ज़माने में उम्मत की जो मदद होगी।

अव्वल तो 'नुसरत' (मदद) कहते किसे हैं? किसे मदद कहें? भाई हमने तो यह सोचा हुआ है कि दो आदमी सफ़र में जा रहे थे कि सामने से शेर आ गया, उससे मुक़ाबला हुआ तो शेर डरकर भाग गया, अल्लाह ने मदद कर दी, यह नुसरत और मदद का आ़म मफ़्हूम है। मेरे दोस्तो, बुज़ुर्गो! अगर तब्लीग़ से 'अफ़राद' (अकेले-अकेले व्यक्तियों) के काम बन रहे हैं तो उसको नुसरत और मदद नहीं कहेंगे, उसको या तो करामत कह लो या उसको बरकत कह लो, यह विलायत के साथ करामत तो हो सकती है लेकिन नुसरत किसे कहते हैं? नुसरत इसको कहते हैं कि अल्लाह रब्बुल-इ़ज़्ज़त की सुन्नत के ख़िलाफ़ उसकी आ़दत के ख़िलाफ़ उसके ग़ैबी निज़ाम का उम्मत के साथ उम्मत के मुवाफ़िक़ हो जाना, यह नुसरत और मदद है।

मेरे दोस्तो, बुज़ुर्गो, प्यारो! हम तो अभी नुसरत इसको कहते हैं कि असबाब में अल्लाह की क़ुदरत ज़ाहिर हो। नहीं! नुसरत कहते हैं जिससे सबको फ़ायदा पहुँचे। हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अ़न्हु के यहाँ सब ख़ंदक़ वालों

की दावत है, यह दावत किसकी तरफ़ से है? यह जाबिर रज़ियल्लाहु अ़न्हु की तरफ़ से नहीं है, यह दावत हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की तरफ़ से है, जो नुसरत नबी पर नाज़िल होगी वह नुसरत पूरी उम्मत पर आएगी, जो उम्मत, 'उम्मते इजाबत' (यानी नबी की दावत को क़बूल करने वाली) है। कि चलो जाबिर के यहाँ खाना है, कितने आदमियों का खाना है, तीन आदमी भर का खाना है, पर तुम सब चलो। करामत होगी वली के साथ, करामत उम्मत के साथ नहीं होती, लेकिन नबी पर जो नुसरत आई, मेरे दोस्तो, उससे फ़ायदा सबको पहुँचा। इन नुसरतों (मददों) का दरवाज़ा बन्द है? बन्द इसलिए है कि अब मेहनत इलाक़ाई और क़ौमी हो रही है, ख़ुद काम करने वालों में इलाक़े तक़सीम होंगे। यह मेरा मौहल्ला यह तुम्हारा मौहल्ला, यह मेरा हल्क़ा यह तुम्हारा हल्क़ा।

मेरे दोस्तो, बुज़ुर्गो! इलाक़ाइयत या हल्क़े इनकी हैसियत ख़ंदक़ की तक़सीम से ज़्यादा नहीं है। ख़ंदक़ को जो तक़सीम किया गया है वह आसानी के लिए किया गया है। हमारे काम में जो हल्क़े बने हुए हैं वे सिर्फ़ सहूलत और आसानी के लिए बने हुए हैं। ये हल्क़े इसलिए नहीं हैं कि तुम अपना हल्क़ा देखो हम अपना हल्क़ा देखें, अगर कोई बात पेश आएगी तो यूँ कहेंगे कि तुम्हारे हल्क़े में पेश आई है। अब मेहनत इलाक़ाई या क़ौमी या ज़बान की बुनियाद पर नहीं है, अब जो मेहनत होगी मेरे दोस्तो पूरी दुनिया के लिए होगी, जैसा कि फ़रमाया गया है: **'इन्नी रसूलुल्लाहि इलैकुम जमीअ़न्'** मैं एक वक़्त में तुम सबकी तरफ़ नबी बनाकर भेजा गया हूँ। तो क्या होगा कि एक वक़्त में हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का एक-एक उम्मती सारी दुनिया के एतिबार से सोचेगा। अब जो नुसरत और मदद आएगी मेरे दोस्तो वह नुसरत आएगी 'इजतिमाई' (यानी सामूहिक और सबके लिए) और वह नुसरत आएगी आ़लमी (यानी पूरी दुनिया के लिए)। अगर एक मुसलमान अमेरिका में है तो अल्लाह उसकी वहाँ मदद करेगा। यह न होगा कि जो मुसलमान काम के माहौल में आ गए उन्हीं की मदद होगी, कि नहीं जिस तरह अल्लाह की तरफ़ से न मानने वालों पर अ़ज़ाब आता है कि वह अल्लाह का नाफ़रमान अ़ज़ाब की जगह न हो तो उसके अ़ज़ाब का हिस्सा जहाँ पर भी वह रह रहा होगा उसी जगह पर पहुँचेगा, इसी तरह जब उम्मत दावत की मेहनत पर आएगी तो जो नुसरत मजमूए की होगी अफ़राद के हिस्से की नुसरत और मदद वहाँ पहुँचेगी। नुसरत किस तरह हुई कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पर जो

Maktabe Ashraf

अल्लाह की तरफ़ से मददें आईं वे ख़िलाफ़े आ़दत आईं।

अब तो काम करने वाले भी इन नुसरतों (मददों) से मायूस हैं कि भाई जो होगा असबाब से होगा। अब अगर यह कह दिया जाए कि खाने में बरकत हो जाएगी कि नहीं, अब तो चार महीने की जमाअ़त निकलेगी, पैसे गिनेंगे और तौल-तौलकर चावल भर लेंगे कि भाई यह एक आदमी की इतनी ख़ुराक, एक आदमी का इतना ख़र्चा, इतने ख़र्चे में हिसाब लगाएँगें बैठकर कि तुम इतने रुपये ले चलो। यानी यक़ीन की तब्दीली मक़सद ही नहीं, सारा-का-सारा, अब तो मुझे ताज्जुब होता है मश्विरे में बैठकर कि भाई यह जमाअ़त फ़लाँ मुल्क में पन्द्रह हज़ार रुपये ख़र्च की है, बारह हज़ार रुपये में इसका काम नहीं चलेगा। यानी इसका यक़ीन ही नहीं कि अल्लाह रब्बुल-इ़ज़्ज़त ख़िलाफ़े आ़दत ख़र्च पूरा करा देंगे, इसलिए कि हमने अपने यक़ीन की ख़राबी की वजह से अल्लाह की क़ुदरत को अल्लाह के बनाए हुए असबाबों के साथ बाँधा हुआ है।

मेरे दोस्तो बुज़ुर्गो! उसको क़ुदरत कहते ही नहीं जो असबाब में ही ज़ाहिर होने की पाबन्द हो, क़ुदरत तो कहते ही उसको हैं जिसके असबाब पाबन्द हों। अब अल्लाह की तरफ़ से जो मदद आएगी मेरे दोस्तो बुज़ुर्गो! यह याद रखो कि वह उन बुनियादों पर आएगी जिन बुनियादों पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम अपनी उम्मत को डाल गए। अब इलाक़ाइयत और क़ौमियत की बुनियाद पर अल्लाह की मदद न होगी, क्योंकि बात यह है कि मेहनत है एक और मैदान हैं उसके तीन। मेहनत एक है मैदान तीन हैं।

मेहनत एक क्या है? मेहनत यह है कि दीन ज़िन्दगियों में आ जाए, मेहनत यह है। देखो मेरे दोस्तो, बुज़ुर्गो! हर इनसान के साथ दो चीज़ें हैं- एक उसकी ज़रूरत, एक उसकी ज़िम्मेदारी। ताजिर के साथ दो चीज़ें लगी हुई हैं, एक उसकी ज़रूरत एक उसकी तिजारत। मुलाज़िम के साथ भी दो चीज़ें लगी हुई हैं, एक उसकी ज़रूरत एक उसकी नौकरी। हर एक के साथ ये दो चीज़ें हैं, हर एक के साथ उसका खाना उसका कपड़ा उसकी ज़रूरत, यह उसकी ज़रूरत है। एक उसके साथ उसकी ज़िम्मेदारी है, किसी ने अपनी ज़िम्मेदारी तिजारत को बनाया हुआ है, किसी ने अपनी ज़िम्मेदारी ज़मीनदारी को बनाया है, किसी ने मुलाज़मत और नौकरी को बनाया हुआ है।

तो एक ज़रूरत है और एक ज़िम्मेदारी है। हर इनसान के साथ हैं ये दो चीज़ें। बिलकुल इसी तरह हर उम्मती के साथ दो चीज़ें लगी हुई हैं- एक उसकी ज़रूरत एक उसकी ज़िम्मेदारी। ज़रूरत क्या है? ज़रूरत दीन है। दीन

ज़रूरत है कि उसके बग़ैर कामयाबी नहीं है। लेकिन ज़िम्मेदारी वह क्या है? यूँ कहें कि वह ज़िम्मेदारी दावत है। दीन ज़रूरत है, ज़िम्मेदारी दावत है। जैसे यूँ कह दो कि खाना ज़रूरत है और तिजारत ज़िम्मेदारी है। मिसाल के तौर पर यूँ कहें कि खाना ज़रूरत है और तिजारत ज़िम्मेदारी है। बिलकुल इसी तरह दीन ज़रूरत है और दावत ज़िम्मेदरी है। जो अपनी ज़िम्मेदारी को पूरी नहीं करता उसकी ज़रूरत पूरी नहीं हुआ करती। यक़ीनी बात है कि तुम अपनी ज़िम्मेदारी पूरी करो तो तुम्हारी ज़रूरत पूरी होगी। बिलकुल इसी तरह यह समझ लो कि अगर दावत की ज़िम्मेदारी पूरी न की तो दीन ज़िन्दगी में न आएगा। दीन आएगा दावत की ज़िम्मेदारी को पूरा करने से। बज़ाहिर जो यक़ीन की ख़राबी की वजह से एक बात दिल में बैठी हुई है कि तिजारत से मसाइल (समस्याएँ) हल होंगे।

तो इस तरह से यह अ़र्ज़ है कि मेहनत एक है, मैदान उसके तीन हैं। अपनी ज़ात मेहनत का मैदान हो। मेरी नमाज़, मेरा रोज़ा, मेरा हज, मेरी ज़कात, मेरा ज़िक्र, मेरी तिलावत, मेरे नेक आमाल, मेरी क़ब्र, मेरा हश्र, मेरी जन्नत, मेरी दोज़ख़, मैं जानूँ। मौलाना यूसुफ़ साहिब रहमतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते थे कि यह मेहनत है 'सालिहीन' (नेक लोगों) वाली, कि मैं अपनी ज़ात से नेक बन जाऊँ और कोई करे या न करे।

फिर एक दूसरा मेहनत का मैदान है। दूसरा मेहनत का मैदान क्या है? दूसरा मेहनत का मैदान यह है कि एक क़ौम एक बस्ती एक इलाक़ा एक गाँव, इस ज़बान वाले या इस पेशे वाले, सिर्फ़ कोई इलाक़ा और कोई क़ौम हो, मेहनत की। फ़रमाते थे मौलाना यूसुफ़ साहिब रहमतुल्लाहि अ़लैहि कि मेहनत का मैदान तो है लेकिन यह अम्बिया की मेहनत का मैदान है। यह मैदान किसका है? यह मैदान अम्बिया का है, कि एक क़ौम, एक बस्ती, एक इलाक़ा, एक शहर, यह मेहनत का मैदान बना।

फिर एक तीसरा मेहनत का मैदान है जो सबसे कामिल और मुकम्मल है। यह मेहनत का मैदान तमाम नबियों के सरदार सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का है। यह मेहनत का मैदान कामिल है। अब उनपर उनके साथ अल्लाह की मददें और नुसरतें, वे भी उन्हीं मैदानों के एतिबार से होंगी। अगर 'सालिहीन' (नेक लोगों) वाली मेहनत है तो करामतें होंगी। अगर अम्बिया वाली मेहनत है तो फिर नुसरत क़ौम तक या बस्ती तक या शहर तक या नबी तक 'महदूद' (सीमित) होगी, कि क़ौम जो चाहेगी नबी से कहेगी, नबी अल्लाह से कहेंगे, कि

Maktaba Ashraf

मूसा अपने रब से यूँ कहो, मूसा अपने रब से यह कहो। जब तक नबी है क़ौम के और ख़ुदा के दरमियान वास्ता है, लेकिन नुबुव्वत वाली मेहनत उम्मत को इस तरह मिली कि इस उम्मत का ताल्लुक़ अल्लाह रब्बुल-इज़्ज़त से बिना किसी वास्ते के है, इस उम्मत का ताल्लुक़ अब अल्लाह से डायरेक्ट है। अल्लाह तआला का फ़रमान है: **उद्‌ऊनी अस्तजिब् लकुम्** यानी मुझसे माँगो मैं दूँगा। हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम उम्मत को किसी पर छोड़कर नहीं गए बल्कि आपने अपनी उम्मत को बराहे-रास्त (डायरेक्ट) अल्लाह से जुड़ने वाले रास्ते पर डाल दिया, कि भाई एक नबी गए दूसरे आ गए, दूसरे गए तीसरे आ गए, आकर उम्मत को संभाल लिया, लेकिन जिस नबी के बाद नबी नहीं उस उम्मत का क्या होगा?

जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम इस उम्मत को दावत वाली मेहनत देकर गए हैं कि अब उम्मत, देखो मेरे दोस्तो, बुज़ुर्गो! अ़र्ज़ यह कर रहा था कि अगर उम्मत के साथ उम्मत का कोई मसला आ गया तो यह उम्मत कहाँ से मसले हल करेगी। कुछ जाएँगे ताजिरों के पास, कुछ जाएँगे हुकूमतों के पास, कुछ जाएँगे अपने यक़ीन की ख़राबी की वजह से, अपने अ़क़ायद की कमज़ोरी की वजह से अल्लाह के ग़ैर की तरफ़, कि भाई कोई मुझे नक़्श बना दे, उस नक़्श से मेरा काम हो जाए। नहीं! मेरे दोस्तो, बुज़ुर्गो! अल्लाह रब्बुल-इज़्ज़त ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को वह काम देकर भेजा है जिससे आपने अपनी उम्मत को किसी के हवाले नहीं किया, कि आप उम्मत को ताजिरों के हवाले कर गए हों, या ज़मीनदारों के हवाले कर गए हों, या मुलाज़िमों के हवाले कर गए हों, या हुकूमतों के हवाले कर गए हों। बल्कि वह काम देकर गए हैं जिससे ये मददें अल्लाह से बराहे-रास्त (बग़ैर किसी वास्ते के) ले। अब मेहनत का मैदान एक क़ौम और बस्ती बनेगी तो अल्लाह की तरफ़ से मदद आएगी अम्बिया वाली। लेकिन एक तीसरा मेहनत का मैदान है, वह यह है कि हम एक वक़्त में पूरी दुनिया को मेहनत का मैदान बनाएँ। एक वक़्त में पूरी दुनिया के इनसानों को मेहनत का मैदान बनायें, कि जब यह मेहनत 'आ़लमी' (पूरी दुनिया पर) होगी और हर उम्मती सारे आ़लम के एतिबार से सोचेगा तो अल्लाह रब्बुल-इज़्ज़त की तरफ़ से मददें जो आएँगी वे मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम वाली आयेंगी।

इसलिए दुनिया दारुल-असबाब (साधनों का घर) आमाल की हैसियत से है हमारे लिए, और दुनिया दारुल-असबाब चीज़ों की हैसियत से और शक्लों

के एतिबार से है अल्लाह को न मानने वालों के लिए। लेकिन बात यह चल रही है कि दुनिया का काम तो असबाब से चलेगा, बिलकुल यही बात चल रही है। अब अ़र्ज़ क्या करूँ कि यही बात चल रही है, हमारे अपने दरमियान यही बात चल रही है। मुझे बाज़े अपने साथियों पर ताज्जुब होता है।

वहाँ बंगले वाली मस्जिद में एक साहिब ने बयान किया कि भाई दुनिया दारुल-असबाब (साधनों की जगह) है, इसलिए तिजारत तो करनी है। मैंने कहा कि भाई तूने तो काम ही सारा ख़त्म कर दिया। यह कोई बात हुई। यानी सारे काम की बुनियाद ही ख़त्म कर दी। हम तो अपने मजमे को इसपर लाना चाहते हैं कि हमारे सारे कारकुन, सारा मजमा वह दिन भर इसी बात को बोलेगा, सुनेगा और सोचेगा, और इसपर उम्मत को लाएगा कि यह दुनिया आमाल के एतिबार से दारुल-असबाब है, वरना मरने के बाद एक अ़मल का भी वहाँ मौक़ा नहीं मिलेगा।

बताओ आमाल आख़िरत के लिए हैं? आख़िरत में किस अ़मल का मौक़ा होगा। मैंने कहा भाई तूने यह बुनियाद सारी उखाड़ कर फेंक दी कि दुनिया दारुल-असबाब तिजारत के एतिबार से है और आख़िरत आमाल के एतिबार से। आमाल आख़िरत में नहीं होंगे दुनिया में होंगे, कि उनसे कामयाबी दुनिया में पहले लो।

यह क्या बात हुई कि तुम यह कहो कि दुनिया दारुल-असबाब है, कि हाँ है दुनिया दारुल-असबाब मगर ग़ैरों के लिए होगी, हमारे लिए तो दुनिया दारुल-असबाब अल्लाह के अहकाम की हैसियत से है। अब अल्लाह रब्बुल-इ़ज़्ज़त क़ियामत तक ख़िलाफ़े आ़दत और ख़िलाफ़े सुन्नत अपनी क़ुदरत ज़ाहिर फ़रमाएँगे। ख़लाफ़े आ़दत अपनी क़ुदरत दिखलाएँगे। दाऊद अ़लैहिस्सलाम के हाथ में लोहे को नरम कर दिया। बात क्या है? बात यह है कि जब तुमने हमारे हुक्म पर क़दम बढ़ाया तो हमने तुम्हारी दुनिया को तुम्हारे लिए आसान कर दिया।

अब तो लोग यूँ कहते हैं कि मोजिज़ा तो नबियों के साथ है। नहीं! मेरे दोस्तो मोजिज़े दावत के साथ हैं। मोजिज़ा नुसरत और मदद है। मोजिज़े अल्लाह की तरफ़ से मददें हैं, वे दावत के साथ हैं। अल्लाह रब्बुल-इ़ज़्ज़त की तरफ़ से मदद का जो वायदा नबियों के साथ है वही वायदा हर उम्मती के साथ है। यह बात नहीं कि भाई चलो एक चीज़ पेश आई थी नबी के साथ तो नबी के जाने पर ख़त्म हो गई। फिर एक चीज़ पेश आ गई सहाबा के साथ

तो वह सहाबा के साथ ख़त्म हो गई। आज तो भाई दुनिया का निज़ाम (व्यवस्था) दुनिया पर ही चलेगा, हम असबाब के मुक़ाबले में आज कैसे कामयाब होंगे?

मेरे दोस्तो, प्यारो, बुज़ुर्गो! बात यह है कि हम दावत की मेहनत छोड़ देने की वजह से आज इस दावत की मेहनत के ज़रिये से यक़ीन की तब्दीली को इस काम को ज़रिया न समझने की वजह से हम इस बात से बिलकुल मायूस हो चुके हैं कि अब अल्लाह की क़ुदरत कैसे ज़ाहिर के ख़िलाफ़ इस्तेमाल होगी, इस बात से बिलकुल मायूस हो गए।

اِنَّا لَنَنْصُرُ رُسُلَنَا وَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فِى الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَيَوْمَ يَقُوْمُ الْاَشْهَادُ

कि हम अपने रसूलों की मदद करेंगे और तमाम ईमान वालों की मदद करेंगे, और क़ियामत तक आने वालों की मदद करेंगे, उनकी नुसरत करेंगे।

حَسْبُكَ اللّٰهُ وَمَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ

यानी आपको और मोमिनों में से जो आपकी पैरवी करें उनके लिए अल्लाह तआ़ला काफ़ी है।

अल्लाह रब्बुल-इ़ज़्ज़त की तरफ़ से जो वायदा हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की मदद का है बिलकुल वही वायदा आपके बाद आपकी उम्मत की मदद का है। मौलाना यूसुफ़ साहिब रहमतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते थे कि जो दावत की मेहनत को करेंगे इस यक़ीन के साथ कि अल्लाह की मददें इस काम के साथ हैं, अल्लाह रब्बुल-इ़ज़्ज़त इस ज़माने में उनकी मदद सहाबा के मुक़ाबले पचास गुना ज़्यादा करेंगे और सहाबा के मुक़ाबले उनको पचास गुना ज़्यादा अज्र अ़ता फ़रमायेंगे।

इसलिए मेरे दोस्तो, प्यारो, बुज़ुर्गो! दावत को समझो कि दावत क्या है, और इसपर ग़ैबी निज़ाम किस तरह हरकत में आता है। अब बात यह है कि भाई मौलाना यूसुफ़ साहिब रहमतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते थे कि तुम अगर ईमान को बोलते हुए अपने दिल के अन्दर अपने ज़ेहन में सहाबा के ईमान को नहीं रखोगे तो फिर यह ईमान सिर्फ़ ज़बान का बोल बनकर रह जाएगा। इसलिए फ़रमाते थे कि जब ईमान बोलो तो सहाबा के ईमान को सामने रखो, जब ईमान को बोलो तो अल्लाह की क़ुदरत को सामने रखकर बोलो। किसी सबब को सामने रखकर ईमान का बोलना यह भी शिर्क पैदा करेगा। इसलिए जब ईमान को बोलो किसी सबब को सामने रखकर न बोलो।

Maktabe Ashraf

मेरे दोस्तो, बुज़ुर्गो! असल में मदद और नुसरत दावत के साथ है। आमाल के साथ अगर कोई आसानी आ भी जाए तो वह नुसरत न कहलाएगी, करामत कहलाएगी जो वलियों के साथ मख़्सूस है, कि मुरीद लोग देखेंगे कि हमारे वली के साथ यह नुसरत और मदद हुई, वे उसे वली मान लेंगे, उसको बुज़ुर्ग मान लेंगे। बस इतना होगा लेकिन उम्मत से बारिश रुक जाये, वली कुछ न कर सकेंगे। साफ़-साफ़ बात है, हदीस का मतलब है, जो लोग दावत देना छोड़ेंगे, अच्छे कामों का हुक्म करना और बुराइयों से रोकना छोड़ देंगे, उनपर जब दावत छोड़ देने की वजह से हालात आएँगे, ये उन हालात से तंग आएँगे, फिर ये अपने मशाइख़ के पास, वलियों के पास, अपने बुज़ुर्गों के पास, दुआ़ कराने के लिए जायेंगे तो अल्लाह रब्बुल-इ़ज़्ज़त उनके वलियों की, उनके मशाइख़ की, उनके बुज़ुर्गों की दुआ़ओं को उनके हक़ में क़बूल नहीं फ़रमायेंगे। हदीस है कि बारिश रुक गई, चलो बुज़ुर्गों के पास, चलो वलियों के पास, नहीं! जिनकी अल्लाह ने बारिश रोकी है दावत की मेहनत छोड़ देने की वजह से, हदीस में आता है कि जो दावत की मेहनत छोड़ देगा फिर उसपर हालात आयेंगे, वे हालात के आने पर बुज़ुर्गों के पास दुआ़ कराने के लिए जायेंगे, उनके बुज़ुर्ग उनके लिए दुआ़एँ करेंगे, अल्लाह उनकी दुआ़ओं को उनके हक़ में क़बूल नहीं फ़रमाएँगे। बात क्या है? बात यह है कि हमने ग़ैबी मददों के शामिले-हाल होने के रास्तों को बन्द किया हुआ है।

मेरे दोस्तो, बुज़ुर्गो! एक उम्मती जब दीन की हिफ़ाज़त के लिए क़दम उठाता है तो अल्लाह रब्बुल-इ़ज़्ज़त ग़ैबी निज़ाम को किस तरह हरकत में लाते हैं। देखो 'अस्हाबे कहफ़' क्या थे, यह शहज़ादों की एक जमाअ़त थी। बात समझ में आ गई कि पालने वाली ज़ात अल्लाह की है। अब यह बात लेकर उठे तो चारों तरफ़ से मुख़ालफ़त होने लगी। ये वे हैं जो अपने यक़ीन को बचाने के लिए एक ग़ार में जा पड़े।

मेरे दोस्तो, प्यारो, बुज़ुर्गो! बात ज़रा ध्यान से सुनना है, और फ़र्क़ पैदा करना है दोनों में कि इन्फ़िरादी (व्यक्तिगत) मेहनत और इज्तिमाई (सामूहिक) मेहनत में क्या फ़र्क़ है। अपना दीन बचाने पर क्या होता है और सारी उम्मत का दीन बचाने और सारे माहौल के बनाने पर क्या होता है। सिर्फ़ अपने दीन की फ़िक्र कर लेने पर और सारी उम्मत के दीन की फ़िक्र करने पर अल्लाह रब्बुल-इ़ज़्ज़त का दुनियावी निज़ाम किस तरह मुवाफ़िक़ होता है। आ़लम का निज़ाम किस तरह हरकत में आता है।

देखो 'अस्हाबे कहफ़' का क़िस्सा मशहूर है। क़िस्सा सुनाने का वक़्त नहीं है, यह वह जमाअ़त है जो अपना दीन बचाने के लिए एक ग़ार में जा पड़े। तो दुनिया का निज़ाम है, सूरज का निज़ाम है। वह अल्लाह की तरफ़ से तयशुदा है, मुतैयन है कि उससे एक इंच एक सूत या इससे भी कोई छोटी चीज़ हो उतना भी उसके अन्दर कोई फ़र्क़ या तब्दीली आने की कोई गुंजाइश नहीं है। यह नहीं कि चाँद और सूरज का निज़ाम आगे-पीछे हो जाये। नहीं! ये बिलकुल अपने निज़ाम पर चल रहे हैं। उनकी मन्ज़िलें और उनके ठिकाने तय हैं। दुनिया का सारा निज़ाम उसपर चल रहा है, पल-पल का हिसाब है, लम्हे-लम्हे का हिसाब है। लेकिन जब यह सूरज गुज़रता है अस्हाबे कहफ़ के ठिकाने के पास से तो यह रास्ता काटकर निकलता है, यह सूरज रास्ता काटकर निकलता है यहाँ से, कि जब यह गुरूब होने जाता है तो फिर रास्ता काटकर जाता है।

बात क्या है? बात यह है कि यहाँ वे लोग सो रहे हैं जो अपना दीन बचाने के लिए ग़ार में आकर छुप गए। यह सूरज उनके लिए अपनी चाल से और अपने रास्ते से, अपनी तरतीब से हटकर चल रहा है। यह इकराम और सम्मान तो उनका हो रहा है जो अपना दीन बचाने के लिए ग़ार में आकर छुप गए थे। **ला रहबानिय्य-त फ़िल-इस्लामि** इस्लाम में रहबानियत नहीं है (यानी सब कुछ छोड़-छाड़कर पहाड़ों में निकल जाना, कि दुनिया के बखेड़ों से आज़ाद होकर अल्लाह की इबादत में मश्ग़ूल रहें)। मेरी उम्मत की रहबानियत क्या है: **अल-जिहादु फ़िल-इस्लामि** यानी मेरी उम्मत की रहबानियत अल्लाह के रास्ते में जिहाद करना है। यह मेरी उम्मत की रहबानियत है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि हर क़ौम की कोई रहबानियत है, मेरी उम्मत की रहबानियत अल्लाह के रास्ते का जिहाद है।

اَلرَّهْبَانِيَّةُ لِاُمَّتِیْ جِهَادٌ فِیْ سَبِيْلِ اللّٰهِ

मैं अ़र्ज़ यह करना चाहता हूँ कि जो जमाअ़त अपना दीन बचाने के लिए एक ग़ार में जा पड़ी, जब सूरज उनकी नींद को बचाने के लिए, उनको आराम देने के लिए अपने रास्ते को बदलकर चल रहा है, तो जो लोग सारे आ़लम को दीन पर लाने के लिए और सारे आ़लम के लोगों का दीन बचाने के लिए, सारे आ़लम के इनसानों को ईमान पर लाने के लिए, सारे आ़लम के इनसानों को आमाल पर लाने के लिए, सारे आ़लम के इनसानों की ज़िन्दगी बनाने के लिए अपने दीन को लेकर बजाय कहीं कोने में बैठने के, सारे आ़लम के

अन्दर फिरेंगे, अल्लाह रब्बुल-इज़्ज़त का सूरज का निज़ाम, चाँद का निज़ाम और पूरे आलम का निज़ाम, पहाड़ों का निज़ाम, यह क्यों हरकत में नहीं आएगा, यह क्यों उनके हाथों के ताबे न होगा।

मेरे दोस्तो, प्यारो, बुज़ुर्गो! बात यह है कि अल्लाह की कुदरत से फ़ायदे उठाने का ताल्लुक़ आमाल से नहीं है, यक़ीन से है। तुम लाख नमाज़ पढ़ो, लाख तहज्जुद पढ़ो, लाख तुम तिलावत करो, लाख तुम सुबह व शाम के ज़िक्र पूरे करो, तुम अल्लाह के नाम की ज़रबें लगाओ। अगर असबाब के ख़िलाफ़ नहीं चलोगे तो कभी यक़ीन नहीं बदलेगा। हमें तो अपनी दावत को लेकर हर-हर शोबे में जाना है। असबाब के ख़िलाफ़ बोलना पड़ेगा, तब कहीं जाकर यक़ीन बदलेगा। आमाल से यक़ीन कभी नहीं बदला करता, यक़ीन बदलेगा जब असबाब पर दावत की चोट पड़ेगी। भाई यूँ आता है रिवायत में कि इतना ज़िक्र करो, इतना ज़िक्र करो कि लोग तुम्हें पागल कहने लगें। लोग क्या कहने लगें? लोग तुम्हें पागल कहने लगें, इतना ज़िक्र करो। क्या हदीस का मतलब यह निकालोगे कि इतना ज़िक्र करो कि दिमाग़ ख़राब हो जाए। क्यों भाई क्या हदीस का मतलब यह निकालोगे कि इतना ज़िक्र करो कि पागल हो जाओ।

नहीं! यह बात नहीं कि लोग तुम्हें पागल कहने लगें। अगर तन्हाई में बैठकर ज़िक्र कर लिया तो वहाँ तुम्हें पागल कौन कहेगा? कोई कहेगा भाई पागल? कि यह पागल है, नहीं! बल्कि रिवायत यूँ कह रही है कि लोग तुम्हें पागल कहें इतना ज़िक्र करो। **ला इला-ह इल्लल्लाहु** की कसरत, कितनी कसरत, इतनी कसरत कि लोग तुम्हें पागल कहें।

न रिवायत से यह मालूम होता है कि जब तन्हाई में ज़िक्र कर रहा है तो कौन पागल कहेगा, तो फिर रिवायत का क्या मतलब है। यूँ कहें कि रिवायत का मतलब यह है कि उसके **ला इला-ह इल्लल्लाहु** की कसरत असबाब की कसरत के मुक़ाबले में आएगी, कि उसे पागल वे कहेंगे जिनके असबाब से उसकी दावत टकराएगी, कि असबाब के साथ टकराव होगा दावत का। अब जो नबी भेजा है हमने क़ौमों की तरफ़, हर क़ौम ने नबी को पागल कहा, यह है मतलब रिवायत का, कि इतनी कसरत से **ला इला-ह इल्लल्लाहु** कहो कि लोग तुम्हें पागल कहने लगें। तिजारतों का यक़ीन रखने वाले यूँ कहेंगे कि तिजारतों से न होने को कहने वाले पागल हैं, कारख़ानों से, दस्तकारियों से यक़ीन रखने वाले यूँ कहेंगे कि कारख़ानों का इनकार करने वाले पागल हैं, कि हर आने वाले नबी को उनकी क़ौम ने जो पागल कहा है:

مَا يَأْتِيهِمْ مِّنْ رَّسُولٍ إِلَّا قَالُوا سَاحِرٌ أَوْ مَجْنُونٌ

यानी उनके पास जो भी नबी आया उसे उन्होंने पागल या जादूगर ही बतलाया। इसके कहने की वजह यह है कि नबी की आवाज़ असबाब के ख़िलाफ़ है। अब बनेगा मतलब कि **ला इला-ह इल्लल्लाहु** की कसरत करने वाले को पागल क्यों कहा जाता है। अगर दोस्ती कर ली है असबाब से और मेहनत हो रही है आमाल की तो मेरे दोस्तो, बग़ैर ईमान के बग़ैर अल्लाह के वायदों के यक़ीन के आमाल का मेयार क़ायम न होगा।

अब एक मेहनत है सालिहीन वाली, एक मेहनत है इलाक़ाई और क़ौमी अम्बिया वाली, एक मेहनत है सारे आलम के इनसानों को एक वक़्त में मेहनत का मैदान बनाने की। तमाम नबियों के सरदार सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम वाला मैदान हमारी मेहनत का मैदान है।

अगर कोई यह सोचे कि मैं तो अपनी ज़ात से अ़मल कर ही रहा हूँ कोई करे या न करे, तो मेरे दोस्तो, प्यारो, बुज़ुर्गो! सिर्फ़ अपनी ज़ात से अ़मल कर लेना काफ़ी नहीं है, अब तो अच्छी तरह समझ लेना चाहिए।

असल में दावत के दो बुनियादी मक़ासिद हैं- पहला मक़सद यक़ीन की तब्दीली और दूसरा मक़सद माहौल की तब्दीली। यक़ीन की तब्दीली और माहौल की तब्दीली, ये दो असल में दावत के ख़ास बुनियादी मक़सद हैं। माहौल मजमूए की मेहनत के बग़ैर नहीं बदला करता, क्योंकि मजमूए का नाम माहौल है, अफ़राद (अलग-अलग व्यक्तियों) के अ़मल को माहौल नहीं कहते। अ़मल तो है माहौल नहीं है। माहौल बदलता है मजमूए से, अपनी ज़ात से अ़मल कर लेना यह काफ़ी नहीं है, इसलिए कि जो आदमी अपनी ज़ात से अ़मल कर लेगा और दूसरों को अ़मल पर लाने की मेहनत न करेगा, उस माहौल की ख़राबी उसके अ़मल को ज़ाया कर देगी। इसलिए मेरे दोस्तो, बुज़ुर्गो! अपनी ज़ात से अ़मल कर लेना काफ़ी नहीं है। उम्मत को ख़सारे (घाटे) से निकालने का जो अल्लाह रब्बुल-इ़ज़्ज़त रास्ता बतला रहे हैं वह क्या है? यूँ कहते हैं कि उम्मत के ख़सारे से निकलने का रास्ता वह अल्लाह की तरफ़ दावत देना है।

दावत किसे कहते हैं? दावत कहते हैं एक-एक उम्मती को ईमान पर लाना और एक-एक उम्मती को आमाल पर लाना, यह दावत है। जो इस तरह दावत देगा यूँ कहें कि उससे माहौल बदलेगा। असल में ख़सारे (यानी घाटे) से निकलने के लिए चार चीज़ें शर्त हैं। क़ुरआन में अल्लाह रब्बुल-इ़ज़्ज़त क़सम

खाकर फ़रमाते हैं कि उम्मत के इस ख़सारे से निकलने के लिए चार चीज़ें शर्त हैं- एक 'ईमान' दूसरी 'नेक आमाल' तीसरी **'एक-दूसरे को हक़ के एतिक़ाद पर क़ायम रहने की हिदायत व तलक़ीन करते रहना'** चौथी **'एक-दूसरे को नेक आमाल की पाबन्दी की तंबीह व तलक़ीन करते रहना।**

चार चीज़ें ख़सारे से निकलने के लिए शर्त हैं। सिर्फ़ ईमान और नेक आमाल, यह भी ख़सारे से निकलने के लिए काफ़ी नहीं हैं। ख़सारे से निकलने के लिए सिर्फ़ ईमान और नेक आमाल काफ़ी नहीं हैं, यूँ क़ुरआन बतला रहा है। क़ुरआन बिलकुल अलग-अलग गिनवा रहा है चारों चीज़ों को। **एक-दूसरे को हक़ के एतिक़ाद पर क़ायम रहने की हिदायत व तलक़ीन करते रहना,** और **एक-दूसरे को नेक आमाल की पाबन्दी की तंबीह व तलक़ीन करते रहना,** इसका नतीजा है ईमान और नेक आमाल। जितना दूसरों को ईमान पर लाएँगे उतना उसका ईमान बनेगा, जितना दूसरों को आमाल पर लाएँगे यह अपने आमाल में तरक़्क़ी करेगा। दो पर इसकी ज़िम्मेदारी है, दो इसके ज़ाती हैं। इसके दो ज़ाती क्या हैं? ईमान और नेक आमाल। हर शख़्स का अपना ईमान बने और हर शख़्स के अपने नेक आमाल। और दो की इस पर ज़िम्मेदारी है कि हर उम्मती को ईमान पर, हर उम्मती को आमाल पर लाना है। ये चार काम हैं ख़सारे से निकलने के लिए। दो इसके ज़ाती दो पर इसकी ज़िम्मेदारी। जब ये चार काम होंगे तब उम्मत ख़सारे से निकलेगी वरना मेरे दोस्तो! उम्मत ख़सारे (घाटे) में पड़ी हुई है।

मुफ़्ती मुहम्मद शफ़ी साहिब रहमतुल्लाहि अ़लैहि ने यह लिखा है 'मआ़रिफ़ुल क़ुरआन' में कि जो आदमी अपनी ज़ात में अ़मल करने को काफ़ी समझे और अपने मुताल्लिक़ीन, अपने दोस्त-अहबाब और दूसरों के ईमान और आमाल की फ़िक्र न करे तो उसने अपनी नजात का रास्ता बन्द कर लिया है। यह साफ़ लिखा है कि उसने अपनी नजात का रास्ता बन्द कर लिया जिसने अपनी ज़ात से ईमान और अपनी ज़ात से आमाल को काफ़ी समझ लिया।

मेरे दोस्तो, बुज़ुर्गो! असल में दावत की मेहनत अब आ़लमी है कि हर उम्मती ईमान और नेक आमाल पर आ रहा हो। ईमान और नेक आमाल पर लाने से मजमूआ़ बदलेगा, और जब मजमूआ़ बदलेगा तो ईमान और आमाल का माहौल क़ायम होगा, वह होगा इज्तिमाई (सामूहिक) मेहनत से। अभी हम जिस रुख़ पर जा रहे हैं, हमारा रुख़ यह बना हुआ है कि भाई मेहनत करो ताकि लोग आमाल पर आ जाएँ। एक है इज्तिमाई काम और एक है इन्फ़िरादी

आमाल। इन्फ़िरादी आमाल में जो हक़ीक़त पैदा होगी वह इज्तिमाई दावत से होगी।

असल में हमें दावत के ज़रिये से उस मेहनत को ज़िन्दा करना है जो मेहनत आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने ईमान और आमाल को बनाने के लिए अ़ता फ़रमाई। अभी तो उस मेहनत को वजूद देना है। यह हर साल के चार महीने और महीने के दस दिन और रोज़ाना के आठ घन्टे।

मौलाना यूसुफ़ साहिब रहमतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते थे कि साल का चिल्ला, महीने के तीन दिन, हफ़्ते के दो गश्त, रोज़ाना की मस्जिद और घर की तालीम, यह तो सिर्फ़ अपनी ज़ाती ज़िन्दगी में दीन आते रहने के लिए है। अगर यह चाहते हो कि माहौल बदले, मज़मूआ़ बदले और आ़लमी सतह (स्तर) पर हक़ क़ायम हो और बातिल मग़लूब हो, अगर यह चाहते हो तो उसके लिए लाज़िम होगा कि अब अपनी ज़िन्दगियों और अपने जान व माल का तिहाई निकालो।

असल दावत आधे की थी, आधी जान और आधा माल और आधा वक़्त, लेकिन अगर आधे की हिम्मत नहीं है तो तिहाई जान और तिहाई माल और तिहाई वक़्त आठ घन्टे मस्जिद की आबादी के लिए, दस दिन अपने मक़ाम के तक़ाज़ों के लिए, चार महीने बाहर के लिए कि जहाँ का तक़ाज़ा हो, अन्दरूनी या बाहर का, साल के चार महीने, महीने के दस दिन और रोज़ाना के आठ घन्टे। यह निसाब है माहौल को बदलने के लिए। वह निसाब था सिर्फ़ अपनी ज़ाती ज़िन्दगी में दीन लाने के लिए। इसलिए मेरे दोस्तो बुज़ुर्गो! अब नीयतें करो हर साल चार-चार महीने की।

وآخر دعوانا ان الحمد لله رب العالمين

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

कामयाबी का दारोमदार अल्लाह तआ़ला ने ईमान के साथ मश्रूत किया है।

तारीख़ 16 नवम्बर 1998 ई. स्थान बाँदा हथौरा (उ. प्र.)

मेरे भाइयो, दोस्तो बुज़ुर्गो! अल्लाह जल्ल शानुहू ने इनसान को दुनिया में सबसे ज़्यादा अशरफ़ (सम्मानित) और सबसे ज़्यादा क़ीमती बनाया है। हर चीज़ फ़ना के लिए, हर चीज़ टूटने के लिए बनाई है, लेकिन इनसान को अल्लाह तआ़ला ने हमेशा के लिए बनाया है। यह अपने बनने के एतिबार से हमेशा से तो नहीं है लेकिन रहने के एतिबार से यह हमेशा के लिए है। हमेशा के लिए जन्नत या हमेशा के लिए दोज़ख़।

यह इनसान वक़्ती नहीं है कि यह खा-पीकर और अपनी ज़रूरतें पूरी करके दुनिया में ख़त्म हो जाए और इसका वजूद बाक़ी न रहे, बल्कि इनसान दुनिया के अन्दर आख़िरत को बनाने के लिए भेजा गया है। यहाँ से इसे दूसरे आ़लम (दूसरी दुनिया यानी आख़िरत) में मुन्तक़िल होना हैं इसी पर हमारा ईमान है और इसी पर हमारा यक़ीन है, कि मरना है, ख़ुदा के सामने हाज़िरी देनी है, और ख़ुदा के सामने हाज़िरी देकर हर एक को हिसाब देना है। तो दुनिया में इनसान ख़त्म हो जाने के लिए नहीं है, दुनिया में इनसान अपनी ज़रूरतें पूरी करने के लिए नहीं है बल्कि अल्लाह तआ़ला ने इसे कामयाब करने के लिए बनाया है। अब कामयाबी का दारोमदार अल्लाह तआ़ला ने ईमान के साथ मश्रूत किया है। बग़ैर उसकी ज़ात को पहचाने हुए इनसान किसी लाईन से कामयाबी हासिल कर ले, ख़ुदा की क़सम नाकामी के अ़लावा और हमेशा की नाकामी के अ़लावा कोई रास्ता नहीं है। अगर यह इनसान ईमान को बनाए बग़ैर दुनिया से जा रहा है।

इसलिए हर उम्मती की उसकी सबसे पहली हाजत, यह पानी के बग़ैर तो रह सकता है, हवा के बग़ैर तो रह सकता है। ये अल्लाह तआ़ला ने दो चीज़ें ऐसी बनाई हैं कि हर अ़क़्लमन्द यह कहता है कि हवा और पानी के बग़ैर गुज़ारा नहीं है, लेकिन यह मुम्किन है कि हवा और पानी के बग़ैर आदमी जी

ले, लेकिन यह मुम्किन नहीं है कि बग़ैर ईमान और नेक अ़मल के कामयाब हो जाए। इसकी कोई संभावना नहीं है। इसलिए अम्बिया को हर ज़माने में इनसानों की कामयाबी के लिए भेजा और हर ज़माने में अल्लाह तआ़ला ने करम फ़रमाया कि इनसानों की कामयाबी के लिए अम्बिया को एक मेहनत और अम्बिया को एक कलिमा देकर भेजा है। तमाम अम्बिया की यह मुश्तरका (संयुक्त) बुनियाद है, कि अम्बिया अल्लाह रब्बुल-इ़ज़्ज़त की बुलन्द ज़ात की तरफ़ इनसान के रुख़ को **"असबाब से ईमान की"** और **"दुनिया से आख़िरत"** की और **"चीज़ों से आमाल"** की तरफ़ फेरने के लिए भेजे जाते हैं। अम्बिया आकर अपनी मेहनत का मैदान किसी चीज़ को नहीं बनाते हैं, इनसानों को मेहनत का मैदान बनाकर उनके दिलों को अल्लाह रब्बुल-इ़ज़्ज़त की बुलन्द ज़ात की तरफ़ फेरते हैं, कि दिल अल्लाह के ग़ैर की तरफ़ मुतवज्जह होते हैं और दिल अल्लाह की ज़ात से फिरे होते हैं।

अपने बनाने वाले को, अपने पैदा करने वाले को, अपने पालने वाले को, यह इनसान जब भूल जाता है तो यह ज़िन्दगी की हर लाईन में, यह ताज़िर हो तो तिजारत में, मुलाज़िम हो तो मुलाज़मत में, हाकिम हो तो हुकूमत में, ज़मीनदार हो तो काश्तकारी में, यह दुनिया की जिस लाईन में भी होता है, जब अल्लाह को नहीं पहचानता और अपने बनाने वाले को नहीं जानता तो यह दुनिया के किसी भी शोबे में अल्लाह तआ़ला के हुक्म पर चलना तो दूर की बात है, यह अल्लाह को भूलकर, यह अल्लाह के अहकामों को तोड़कर चलता है। ख़ुदा का हर हुक्म इस बुनियाद पर टूटता है कि यह अल्लाह तआ़ला को पहचानता नहीं है, और अपने बनाने वाले को जानता नहीं है। अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम आकर इसकी मेहनत करते थे कि उनका रुख़ अल्लाह की बुलन्द ज़ात की तरफ़ फिर जाए।

मेरे प्यारो, दोस्तो! इसके लिए पहले अम्बिया का रुख़ ठीक किया जाता है। अल्लाह तआ़ला अपनी बुलन्द ज़ात का तआ़रुफ़ (परिचय) पहले अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम को कराते हैं, और अम्बिया के रुख़ को सही करते हैं, और उनके रुख़ को सही करके फिर उनको क़ौम के रुख़ को सही करने के लिए भेजते हैं। अल्लाह तआ़ला पहले नबियों के रुख़ को सही करते हैं कि अल्लाह का ग़ैर पहले उनके अन्दर से निकल जाए। फ़िर नबियों को अल्लाह तआ़ला बराहे-रास्त (बिना किसी वास्ते के, डायरेक्ट) हिदायत देते हैं, और दूसरों की हिदायत का उनको ज़रिया बनाकर भेजते हैं।

अल्लाह तआला अपनी ज़ात का तआरुफ़ हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को पहले खुद करवाते हैं, और अल्लाह के ग़ैर से उनके रुख़ को फेरकर सिर्फ़ अपनी ज़ाते आली की तरफ़ फेर लेते हैं। और फिर जब अच्छी तरह ठोंक-बजाकर उनको देख लेते हैं कि उनका रुख़ हमारे ग़ैर की तरफ़ से फिर गया है, फिर अल्लाह तआला उनसे काम लेते हैं, फिर अल्लाह तआला उन्हें काम के लिए भेजते हैं कि जाओ तुम ताजिरों में काम करो और तुम ज़मीनदारों में काम करो, तुम कारख़ाने वालों में काम करो, तुम अक्सरियत वालों में काम करो, हर लाईन के लोगों में अल्लाह तआला ने नबियों को भेजा है। लेकिन अल्लाह तआला पहले नबियों का रुख़ सही करवाते हैं कि उनके दिल में से अल्लाह का ग़ैर निकल जाए। तो जितना नबियों के अन्दर से अल्लाह का ग़ैर निकल जाता है उतना ही ये दूसरों की हिदायत का सबब बनते हैं। अल्लाह तआला एक-एक चीज़ से होने का यक़ीन उनके दिलों से निकालते हैं।

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम तो जब यह कह उठे कि मैंने हर बने हुए से अपने रुख़ को बनाने वाले की तरफ़ फेर लिया, जब उनका रुख़ इस तरह फिर जाता है अल्लाह के ग़ैर से, फिर अल्लाह तआला उनसे काम लेते हैं। इसलिए बुनियादी बात और तमाम अम्बिया की बुनियादी चीज़ कलिमा **ला इला-ह इल्लल्लाहु** है, यही सबकी बुनियाद है। जब तक यह कलिमा दिल का कलिमा नहीं बनेगा और जब तक दिल का रुख़ सही नहीं होगा और जब तक दिल से अल्लाह का ग़ैर नहीं निकलेगा उस वक़्त तक कोई अमल नहीं बन सकता। और जब तक आमाल नहीं बनेंगे कामयाब नहीं होंगे। सारे आमाल का दारोमदार ईमान पर और सारी कामयाबियों का दारोमदार आमाल पर। इसलिए अम्बिया सबसे पहले इस कलिमे की दावत देते हैं:

قُوْلُوْا لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ تُفْلِحُوْا

यानी ऐ लोगो! **ला इला-ह इल्लल्लाहु** कह लो कामयाब हो जाओगे। ताजिरों पर भी यही कलिमा, काश्तकारों पर भी यही कलिमा, बाग़ वालों पर भी यही कलिमा, अक्सरियत वालों के भी ख़िलाफ़ यही कलिमा, अम्बिया की मेहनत का नक़्शा और उनके कलिमे की बुनियाद उनकी हर क़ौम के ख़िलाफ़ होती है, इसलिए अम्बिया पर हालात आते हैं, क्योंकि उनकी आवाज़, उनका कलिमा उन लोगों के ख़िलाफ़ होता है जिन लोगों की तरफ़ उनको भेजा जाता है, कि कलिमा **ला इला-ह इल्लल्लाहु** उनके हर छोटे बड़े नक़्शे के ख़िलाफ़ होगा, कि अल्लाह की ज़ात से होता है, अल्लाह के ग़ैर से नहीं होता है।

यह इस यक़ीन के बनाने का और यक़ीन के पैदा करने का, यह सारी मेहनत, **"दावत इलल्लाह"** (यानी अल्लाह की तरफ़ बुलाने) की इस मेहनत का मक़सद और ख़ुलासा यही है, कि अल्लाह का ग़ैर हमारे अन्दर से निकल जाए और अल्लाह की बुलन्द ज़ात से ताल्लुक़ पैदा हो जाए। इसकी मेहनत के लिए अम्बिया को भेजा जाता है। ये आकर मुल्क या माल को या चीज़ों को या दुनिया के नक़्शों को अपनी मेहनत का मैदान नहीं बनाते, बल्कि ये अल्लाह तआला की तरफ़ से इसलिए भेजे जाते हैं ताकि अल्लाह तआला की ज़ाते आली की तरफ़ हर एक का रुख़ फिर जाए। पहले ही दिन से जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को फ़रमाया:

قُمْ فَاَنْذِرْ وَرَبَّكَ فَكَبِّرْ

कि नबी जी! उठिए डराइये और अपने रब की बड़ाई बयान कीजिए।

मेरे प्यारो, दोस्तो बुज़ुर्गो! हमारे माहौल में अल्लाह के ग़ैर को इतना बोला जाता है कि अल्लाह की बुलन्द ज़ात का तआरुफ़ कराना हम अपनी ज़िम्मेदारी महसूस ही नहीं करते, कि मुझे तो अल्लाह रब्बुल-इज़्ज़त की ज़ात व सिफ़ात का तआरुफ़ कराने के लिए ही भेजा गया था। यूँ कहें कि हमारे माहौल में अल्लाह के ग़ैर को इतना बोला जाता है कि अल्लाह की ज़ात का यक़ीन बनना तो दूर की बात है अल्लाह की ज़ाते आली से होने का यक़ीन पैदा ही न हो। यह जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आप से पहले सारे अम्बिया की मेहनत की बुनियाद रही है: **ला इला-ह इल्लल्लाहु।**

और ऐसा नहीं है कि नबियों का कलिमा बदल गया हो, अक्सरियत को देखकर या किसी और सबब इख़्तियार करने वालों को देखकर उनका कलिमा बदल गया हो। यूँ कहें ऐसा नहीं होता, बल्कि हर ज़माने में अम्बिया की बुनियाद **अल्लाह की ज़ात से होता है, अल्लाह के ग़ैर से नहीं होता,** यह बुनियाद मेरे दोस्तों जितनी मज़बूत हो जाती है उतना ईमान दिल के अन्दर मज़बूत हो जाता है। ख़ैर की तमाम वज्हों (यानी कारणों) और दुनिया में जो ख़ैर अल्लाह की तरफ़ से आनी है, और जो दुनिया का निज़ाम चलेगा, वह सारा-का-सारा ईमान ही की बुनियाद पर चलेगा। इनसान पर हालात आते हैं, यह उन हालात में अपनी मरज़ी के मुताबिक़ हालात चाहता है। हालात से तंग आया हुआ है, उन हालात के बनाने का कोई रास्ता नहीं सिवाय ईमान बनाने के। अल्लाह तआला ने सारे निज़ाम को, न चीज़ों से जोड़ा है, न मुल्क व माल से जोड़ा है, न कारख़ानों से जोड़ा है और न हुकूमतों से जोड़ा है, किसी

से नहीं जोड़ा है, अल्लाह तआला ने तमाम हालात को आमाल से जोड़ा है। दुनिया के तमाम हालात को आमाल से जोड़ा है और तमाम आमाल को ईमान से जोड़ा है, कि इनसान के जिस्म से निकलने वाले हालात जैसे होंगे अल्लाह रब्बुल-इज़्ज़त की ज़ाते आली की तरफ़ से उसके मुताबिक़ फ़ैसले होंगे।

यह देखा जाएगा कि अ़मल कैसा है। अगर अ़मल ऐसा है कि अल्लाह तआला कामयाब करें तो बावजूद मुल्क व माल के न होने के और चीज़ें न होने के अल्लाह तआला आमाल पर हर हाल में कामयाब फ़रमाएँगे। अगर चीज़ों का ढेर है और माल सरमायादारी के नक़्शों में है और अक्सरियत के नक़्शों में है, या तिजारतों के नक़्शों में है, हथियारों के नक़्शों में है, और जिस्म से निकलने वाले आमाल अगर ठीक नहीं हैं तो उन सारे नक़्शों के बावजूद अल्लाह तआला उसे नाकाम करके दिखाएँगे जैसा कि पहले दिखला चुके हैं। सारा क़ुरआन इसकी गवाही देता है, सारा क़ुरआन इससे भरा हुआ है। अल्लाह तआला ने जब फ़ैसला किया है किसी की कामयाबी और नाकामी का, वह अल्लाह तआला ने ईमान और आमाल पर किया है।

इसलिए मेरे प्यारो, दोस्तो! बुनियादी बात, बुनियादी चीज़ सारे नयों से और पुरानों से, अपनों से और ग़ैरों से, जो बुनियादी बात कहनी है वह यह है कि जब तक कलिमा **ला इला-ह इल्लल्लाहु** की बुनियाद मज़बूत नहीं होगी उस वक़्त तक न इबादत बनने वाली है, न मामलात बनने वाले हैं, न अख़्लाक़ बनने वाले हैं, न ही समाज बनने वाला है। कुछ नहीं होने वाला जब तक कलिमा **ला इला-ह इल्लल्लाहु** दिल का कलिमा न बन जाए। तमाम हालात का बनना और बिगड़ना वह इसपर मौक़ूफ़ है।

इसलिए जब अम्बिया अपनी क़ौम की तरफ़ भेजे जाते थे तो उनकी क़ौमों का हाल बहुत बिगड़ा हुआ होता था। जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को तो सबसे सख़्त ज़मीन मिली, क़ुरैश की, ऐसे अख्खड़ और ऐसे ज़ाहिल कि अंधेरों पर अंधेरे। न अल्लाह को जानते थे न पहचानते थे। ऐसे माहौल में जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को भेजा गया। तमाम अम्बिया की तरह आपने भी यही मेहनत की और आपकी मेहनत की बुनियाद भी यही कलिमा **ला इला-ह इल्लल्लाहु** था। आपने हर एक को इसी पर दावत दी कि **ला इला-ह इल्लल्लाहु** कहो कामयाब हो जाओगे। फिर इस **ला इला-ह इल्लल्लाहु** के साथ एक मेहनत दी, इसलिए कि हर कलिमे के साथ एक मेहनत है और कोई कलिमा बग़ैर मेहनत के हासिल नहीं होता।

कलिमा **'तिजारत'** (व्यापार) एक कलिमा है और उसके साथ एक मेहनत है। कलिमा **'ज़राअ़त'** (खेती-बाड़ी) एक कलिमा है और उसके साथ एक मेहनत छुपी हुई है। कलिमा **'मुलाज़मत'** (नौकरी) एक कलिमा है और उसके साथ एक मेहनत है।

इसी तरह कलिमा **ला इला-ह इल्लल्लाहु** एक कलिमा है और इस कलिमे के साथ एक मेहनत है। उस मेहनत को जब किया जाता है तब कलिमा बनता है। कलिमा क्या बनता है? यूँ कहें कि उस मेहनत से यह कलिमा दिल का कलिमा बनता है। फ़रमाया है कि तू अपने दिल से पूछ ले इसलिए कि कलिमे की जगह दिल को बनाया है। न हाथों को, न ज़बानों को, न आँखों को, न दिमाग़ों को, न किताबों को, मेरे प्यारो, दोस्तो, बुज़ुर्गो! यह कलिमे की जगह सिर्फ़ दिल में है। अगर यह इस कलिमे को ज़बान से कह रहा है तो ये कलिमे के अल्फ़ाज़ हैं। अगर लिख रहा है तो ये कलिमे के हुरूफ़ हैं। अगर कानों में है तो यह कलिमे की आवाज़ है। अगर दिमाग़ में है तो यह कलिमे का मफ़्हूम और मतलब है। इसको कलिमा नहीं कहते, कलिमा कहते हैं जो दिल के अन्दर जम जाए और जड़ पकड़ जाए। यह कलिमा दिल के अन्दर उतर कर हर-हर अंग से इस कलिमे के तक़ाज़े पूरे होंगे और जिस्म के हर-हर अंग से इस्लाम ज़ाहिर होगा।

इस्लाम तो जब नज़र आएगा जब ईमान होगा। अगर ईमान नहीं है तो इस्लाम को नहीं देखा जा सकता। इस्लाम मदीना मुनव्वरा में हर आदमी के सर से पैर तक नज़र आता था कि यह है इस्लाम।

मेरे दोस्तो, आज दुनिया के अन्दर जितने हालात बिगड़ रहे हैं और जितनी अफ़रातफ़री है। इज़्ज़तें वे ख़तरे में, माल-दौलत वे ख़तरे में, जानें वे ख़तरे में, इस सबकी वजह यह है कि हमने कलिमे की मेहनत को छोड़ दिया है। जब इस कलिमे पर मेहनत हो रही थी तो ईमान बन रहा था। जब ईमान बन रहा था तो इबादत बन रही थी। मामलात बन रहे थे। अख़्लाक़ दुरुस्त हो रहे थे। समाज साफ़-सुथरा हो रहा था, बल्कि इनसान बन रहा था। इनसान बन रहा था ईमान के बनने से, अब ईमान के बनाने की जब मेहनत छूटी और ईमान के बनाने की मेहनत क्यों छूट गई? मेरे दोस्तो, बुज़ुर्गो! ईमान के बनाने की मेहनत इसलिए छूट गई कि इनसान ने अपनी ज़िम्मेदारी छोड़ दी:

كُنْتُمْ خَيْرَ اُمَّةٍ اُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ، تَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَ تَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَ تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ.

तुम इनसानों को नफ़ा पहुँचाने के लिए भेजे गए थे। तुम काश्तकार बनाकर, ताजिर बनाकर, ज़मींदार बनाकर, मुलाज़िम बनाकर नहीं भेजे गए थे। बल्कि तुम इनसानों को नफ़ा पहुँचाने के लिए भेजे गए थे। और वह नफ़ा पहुँचाना क्या है? कि इनसान यूँ सोचता रहे कि जानवरों की तरह मेरी ज़ात से किसी को फ़ायदा पहुँच जाए। क्या फ़ायदा, नफ़ा पहुँचाना किसको कहते हैं? कि जिसके पास अ़क़्ल है उसकी अ़क़्ल से दूसरों को फ़ायदा, कि जिसके पास माल है उसके माल से दूसरों को फ़ायदा, कि जिसके पास इ़ज़्ज़त और ओ़हदा है उससे दूसरों को फ़ायदा।

मेरे दोस्तो, बुज़ुर्गो! बेशक यह एक बात है, एक अख़्लाक़ी तक़ाज़ा है कि इनसानों को इनसानों से फ़ायदा पहुँचे, लेकिन इसमें तो इनसान और हैवान सब बराबर हैं। बहुत-से जानवर ऐसे हैं जिनसे इनसानों को फ़ायदा पहुँचता है, बल्कि अल्लाह तआ़ला ने सारे जानवर इसी लिए बनाए हैं कि ये बोझ उठाने वाले, ये दूध देने वाले, ये हल खींचने वाले, ये काटकर खाए जाने वाले, अल्लाह तआ़ला ने जितनी भी क़िस्म के जानवर बनाए हैं, मेरे दोस्तो! ज़रा सोचने की बात है कि हमारी ज़ात से इनसानों को फ़ायदा सिर्फ़ उनकी दुनिया को पहुँच रहा है, क्या इसलिए हम भेजे गए थे? या मुझसे मुताल्लिक़ कोई दूसरा काम है? हर चीज़ का बनाने वाला वह इनसान का ख़ालिक़ है, इनसान को बनाने वाला है, वह ख़ुद फ़रमाता है कि वही बनाने वाला है जिसने बनाया है, अगर वह नहीं जानेगा कि किस लिए बनाया है तो और कोई क्या जानेगा। उसने इनसानों को इसी लिए बनाया है:

تَأْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَ تَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَ تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ

यानी तुम लोगों को अच्छे कामों का हुक्म करो और उन्हें बुराइयों से रोको। यह है हमारे बनाए जाने का मक़सद, यह है भेजे जाने का मक़सद, कि हमने तुम्हें इनसानों की भलाई के लिए, नफ़ा पहुँचाने के लिए भेजा है। यह थी वह मेहनत जिस मेहनत पर ईमान बन रहा था, लेकिन जब उम्मत के अन्दर से मेहनत छूट गई तो ईमान के बनाने का उमूमी ज़ेहन और उमूमी ज़िम्मेदारी ख़त्म हो गई, कि ईमान को बनाना उमूमी ज़िम्मेदारी है। बहुत कम लोगों में ईमान और आमाल के बनाने का ख़्याल पैदा हुआ कि भाई ईमान और आमाल बनाने चाहिएँ, इन्फ़िरादी (व्यक्तिगत) तौर पर।

जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम जो मेहनत लेकर तशरीफ़ लाए उससे आपने ईमान और आमाल के बनाने का इज्तिमाई (सामूहिक) ज़ेहन

बनाया था, कि हर एक इज्तिमाई तौर यह ज़िम्मेदारी महसूस करता था कि ईमान और आमाल के बग़ैर कामयाबी नहीं है।

यह सारी मेहनत और यह काम और नेक आमाल के बनाने का मेरे दोस्तो! हर फ़र्द के ज़िम्मे है, और इसके बने बग़ैर दुनिया के अन्दर न दुनिया में कोई कामयाबी है और न आख़िरत में कामयाबी है। इसलिए तमाम हालात का सुधार और तमाम कामयाबियों की बुनियाद वह ईमान का बनाना है। जब ईमाना वाले पर हालात आते हैं तो यह ईमान वाला हालात के अन्दर अपने आमाल को बनाता है। और जब इनसान ईमान को नहीं सीखता और हालात उसके ऊपर अल्लाह की तरफ़ से आते हैं, तब यह बजाय आमाल के बनाने के अपने अ़मलों को और बिगाड़ता है, इसलिए हदीस में आता है कि ईमान की मिसाल और मोमिन की मिसाल ऐसी है कि जैसे घोड़ा होता है कि घोड़े का मालिक उसे बाँध देता है और उसके पावँ में बाँधकर लम्बी रस्सी छोड़ देता है, और यह घोड़ा मैदान के अन्दर घास खाता फिरता है, लेकिन जब इस घोड़े की रस्सी पूरी होती है और इसके पैर में झटका लगता है तो फ़ौरन यह घोड़ा अपने खूँटे पर वापस आ जाता है। यह घोड़े का मिज़ाज है कि जब उसको झटका लगता है तब यह अपने खूँटे पर वापस आ जाता है, वरना खाँता हुआ आगे-आगे चलता रहता है।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि यह दुनिया बड़ी हरी-भरी और मीठी है कि ताजिर भी इसमें चलता रहेगा और ज़मीनदार भी इसमें चलता रहेगा और मुलाज़िम भी इसमें चलता रहेगा और कहीं ख़्याल भी नहीं आएगा कि झटका लगा है। इस झटके का क्या मतलब है? जब ईमान होता है तो झटके बतलाते हैं कि मियाँ यह झटका इसलिए लगा है कि तुम्हारा यह अ़मल ख़राब हो रहा है, इस अ़मल को दुरुस्त कर लो। ताजिरों को उनकी तिजारत में, ज़मीनदारों को उनकी काश्तकारी में, मुलाज़िमों को उनकी मुलाज़मतों में, सुबह व शाम जो झटके लगते हैं वे इसलिए लगते हैं ताकि सही रास्ते पर आ जाएँ। लेकिन अगर ईमान होता है तो यह बात दिल में आती है कि ये जो हालात आ रहे हैं, ये हालात बतला रहे हैं कि आमाल बिगड़ रहे हैं, इसलिए अल्लाह तआ़ला ने हालात को कहीं से नहीं जोड़ा सिवाय आमाल के।

मेरे दोस्तो, बुज़ुर्गो! चीज़ों से हालात का कोई ताल्लुक़ नहीं है। शिफ़ा से दावाओं का कोई ताल्लुक़ नहीं है। इसी तरह मसाइल के हल का मालों से कोई ताल्लुक़ नहीं है, और मसाइल का हुकूमतों से कोई ताल्लुक़ नहीं है, बल्कि

ज़मीन और आसमान के दरमियान जो कुछ होता है, वह सिर्फ़ और सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला अपने हुक्म से करते हैं। लेकिन यह अल्लाह तआ़ला का उसूल है, क़ानून है, हमेशा का यह ज़ाबता है कि वह जो कुछ करते हैं वह इनसानों के अ़मलों पर करते हैं। तो यूँ कहें कि यह जो घोड़ा चलता रहता है घास खाते हुए, जब इसको झटका लगता है रस्सी पूरी होने पर तो यह अपने खूँटे पर वापस आ जाता है, लेकिन यह इनसान जानवर से भी गया-गुज़रा है कि जब यह ईमान नहीं बनाता और अल्लाह की बुलन्द ज़ात को सामने रखकर नहीं चलता, इसपर सुबह व शाम हालात आयें लेकिन यह उन हालात में अपने अ़मलों को दुरुस्त नहीं करता और अ़मलों को अपने और बिगाड़ता है। अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं कि हम बड़ा अ़ज़ाब लाने से पहले छोटे-छोटे हालात उसपर लाते हैं ताकि उसकी समझ में आ जाए, यह मेरी तरफ़ रुजू हो जाये और सीधे रास्ते पर आ जाए। शायद उसकी समझ में आ जाए, यह अपना रुख़ सही कर ले। लेकिन अगर उन हालात में उसकी आँख नहीं खुलती तो फिर अल्लाह तआ़ला उसे मौत देकर हमेशा के लिए आख़िरत का अ़ज़ाब शुरू कर देते हैं। यूँ कहें कि यह ईमान सिखलायेगा और ईमान बतलायेगा, जितने भी हालात इस वक़्त दुनिया में आ रहे हैं यह इनसान अल्लाह की बुलन्द ज़ात की तरफ़ फिर आये, इसके लिए यह आ रहे हैं। लेकिन बड़े ख़ुश-क़िस्मत (भाग्यशाली) हैं वे इनसान जिनको ये हालात पलट दें और ये हालात उनको सही रास्ते पर ले आयें।

इसलिए मेरे प्यारो, दोस्तो, बुज़ुर्गो! बुनियादी चीज़ यक़ीन का बनाना है। यह ईमान बन जाएगा तो हर चीज़ बनती चली जाएगी, हर चीज़ अपनी जगह पहुँच जाएगी। लेकिन अब यह इनसान अपने हाल को हाल से बदलना चाहता है। यह देखता है कि मेरी तिजारत पर हालात आ रहे हैं तो यह अपनी तिजारत को बढ़ा देता है, कि एक दुकान से दो दुकानें, दो दुकानों से चार दुकानें। अब भी हालात ठीक नहीं हो रहे तो एक दुकान और ले लो। हालात से हालात नहीं बना करते, आमाल से हालात बना करते हैं। अल्लाह तआ़ला ने तमाम अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम के ज़रिये से यही बात कहलवाई है और यही मेहनत अम्बिया ने आकर की है, और सारे नबियों का ख़ुलासा यही है कि हालात से हालात नहीं बना करते, बल्कि आमाल से हालात बना करते हैं। हालात का तो चीज़ों से कोई ताल्लुक़ ही नहीं है, कि चीज़ों पर मेहनत करो और हालात दूर हो जायें। दवाएँ बनाओ ताकि बीमारी ख़त्म हो जाए।

मेरे दोस्तो, बुज़ुर्गो! हालात का कोई ताल्लुक़ नहीं है चीज़ों से, और हालात का कोई ताल्लुक़ नहीं है हुकूमतों से, हालात का तो ताल्लुक़ आमाल से है और आमाल का ताल्लुक़ ईमान से है। अब अल्लाह तआ़ला के यहाँ अ़क़्लमन्द इनसान वे कहलाते हैं जो अपने हालात को सुधारने के लिए अपने आपको अ़मलों पर ले आते हैं, और अपने हालात को सुधारने के लिए अपने आपको ईमान पर ले आते हैं।

यूँ कहें कि यह ईमान क्या है? यह अल्लाह का ग़ैर हमारे दिलों से कैसे निकले? अल्लाह की ज़ाते आ़ली के साथ हमारा ताल्लुक़ कैसे मज़बूत हो?

यूँ कहें कि इसको सिखाने के लिए और इसको बताने के लिए अम्बिया भेजे गए और सबसे ज़्यादा मेहनत इसी बात की की गई। जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम तैईस (23) साल, आप आख़िरी नबी, आपकी शरीअ़त, कामिल शरीअ़त, आपकी उम्मत सबसे बड़ी उम्मत, आपकी उम्मत आख़िरी उम्मत, आपके पास कुल वक़्त तैईस (23) साल का। उन तैईस (23) सालों में से तेरह (13) साल ईमान ईमान ही की मेहनत करते रहे। दस (10) साल में तो सारे अहकामात दिए लेकिन तैईस (23) साल में से तेरह साल वह ईमान, ईमान, ईमान। ईमान इस तरह सिखाया है कि सहाबा खुद फ़रमाते हैं कि हमने ईमान सुना नहीं हमने ईमान पढ़ा नहीं कि ईमान का मुताला (अध्यन) किया हो, या ईमान सुना हो या एक बारे **ला इला-ह इल्लल्लाहु** कहकर मुत्मईन हो गए हैं, बल्कि हमने ईमान सीखा है। किस तरह सीखा है कि हमने ईमान की मजलिसें क़ायम कीं, एक-एक को दो-दो को चार-चार को लेकर बैठे, कि आओ थोड़ी देर ईमान ले आयें:

اجلس بنا نؤمن ساعة

यह अ़ब्दुल्लाह इब्ने रवाहा यह तो यूँ कहें कि आओ थोड़ी देर के लिए ईमान ले आयें। वहाँ यह दावा करने वाला कोई नहीं था कि मैं ईमान वाला हूँ। बल्कि यूँ कहें कि आओ बैठो थोड़ी देर ईमान ले आयें। जब यह जुमला अ़जीब-सा लगा कि क्या हम ईमान वाले नहीं हैं तो एक सहाबी ने जाकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से शिकायत की कि यह अ़ब्दुल्लाह इब्ने रवाहा हमसे यूँ कहता है कि आओ थोड़ी देर ईमान ले आयें। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने हंसक़र फ़रमाया कि अल्लाह रहम फ़रमाये इसपर कि ईमान की मजलिसों को पसन्द करता है ताकि ईमान की तरफ़ से बेफ़िक्री न होने पाए।

मेरे दोस्तो, बुज़ुर्गो! सहाबा-ए-किराम ईमान के बनाने की मेहनत में हर वक़्त लगे रहते थे, कि जब ईमान की बात नहीं होगी, जब अल्लाह की ज़ात की तारीफ़ नहीं होगी, जिस लम्हे जिस रात में, जिस दिन में, जिस बाज़ार में, जिस मस्जिद में, जिस घर में, जिस कारख़ाने में, जिस हुकूमत में जहाँ अल्लाह की ज़ात का तआरुफ़ नहीं होगा, जिस लम्हे नहीं होगा, उसी लम्हे अल्लाह के ग़ैर को बोलेगा, जिस लम्हे अल्लाह के ग़ैर को बोलेगा, जिस लम्हे अल्लाह के ग़ैर को सोचेगा और जिस लम्हे अल्लाह के ग़ैर को सुनेगा, उस लम्हे उसका ईमान मुतास्सिर होगा और उसका ईमान कमज़ोर होगा। वहाँ तो ऐसा माहौल बनाया था कि अल्लाह के ग़ैर के बोलने का कहीं मौक़ा ही नहीं था।

मेरे दोस्तो, बुज़ुर्गो! अल्लाह तआला के यहाँ ज़बान से **ला इला-ह इल्लल्लाहु** ख़ाली कह देना, इतनी आसानी से क़बूल नहीं हो जाता, बल्कि अल्लाह तआला आज़माइशों में डालकर और अल्लाह तआला हालात में उसको फंसाकर उसके ईमान को परखते हैं, कि देखें इन हालात में यह अमलों को बनाता है या अमलों को बिगाड़ता है। तो अल्लाह तआला हालात से उसके ईमान को बनवाते हैं और यह देखना चाहते हैं कि यह आदमी ईमान में पुख़्ता है या नहीं। सहाबा-ए-किराम ईमान में ऐसे पार उतर गए थे कि अगर सोते हुए आदमी को भी उठाकर पूछा जाए कि **"ऐ हारिस! तुम अपनी सुबह कैसे करते हो?"** तो हारिस सोते में उठकर कच्ची नींद में जबकि दिमाग़ सोया हुआ है और हारिस रज़ियल्लाहु अन्हु दावे के साथ यूँ कहें कि **मैं ईमान के साथ सुबह कर रहा हूँ।**

मेरे दोस्तो, बुज़ुर्गो! यह ईमान इस तरह नहीं बन जाएगा बैठे-बैठे, इस ईमान के साथ एक मेहनत है, कि अल्लाह की बुलन्द ज़ात का यक़ीन दिल में इस तरह दाख़िल हो जाए कि अगर कोई यूँ कहे कि फ़लाँ ने यूँ कर दिया और फ़लाँ से यूँ हो गया और फ़लाँ यह कर देगा, तो फ़ौरन यह बात दिल में खटके कि यह आदमी ग़लत कह रहा है, करने वाली ज़ात सिर्फ़ अल्लाह की है। वह अकेले जो चाहते हैं करते हैं। वह अपने काम में किसी के मश्विरे के, किसी की मदद के, किसी की नुसरत के पाबन्द नहीं हैं। वह जो चाहते हैं तने-तन्हा करते हैं। यह हर आदमी के हर वक़्त दिल में उतरी हुई बात हो कि दुनिया में जो कुछ हो रहा है वह बराहे-रास्त (डायरेक्ट) अल्लाह की ज़ात से हो रहा है।

जब तक चप्पे-चप्पे पर इसका बोला जाना नहीं होगा और सुबह व शाम

इसको सोचना नहीं होगा उस वक़्त तक ईमान हमारे दिलों में नहीं जमेगा। जब तक ईमान नहीं बनेगा तब तक कुछ नहीं बनेगा। इसलिए क़ुरआन वाला ईमान चाहिए हमारे वाला ईमान नहीं, बल्कि क़ुरआन वाला ईमान:

اٰمِنُوْا كَمَا اٰمَنَ النَّاسُ

कि ऐसा ईमान हो जैसा ईमान सहाबा-ए-किराम लाए हैं। सहाबा का ईमान सिर्फ़ इतना ही नहीं कि मैं नबी के नबी होने पर ईमान ले आया, बल्कि हर-हर चीज़ पर ईमान लाए हैं, यानी जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम जो कुछ लेकर आए हैं, जितना यक़ीन आपके नबी होने पर था उतना ही यक़ीन उस तरीक़ा-ए-ज़िन्दगी पर था जो ज़िन्दगी का तरीक़ा लेकर आप आए हैं। उस तरीक़े को इख़्तियार करके कामयाबी का उतना ही यक़ीन था जितना यक़ीन नबी के नबी होने का था। यह नहीं कि मैं यक़ीन करता हूँ कि आप नबी हैं, आप आख़िरी नबी हैं, आपके बाद कोई नबी आने वाला नहीं है, इसका तो यक़ीन करता हूँ, लेकिन मेरे मसाइल का हल, वह नबी वाले इल्म में, वह नबी वाली तालीम में, वह नबी वाले तरीक़े में, या वह नबी वाले आमाल में, मेरे मसाइल का हल इसमें है या नहीं इसका यक़ीन इनसान नहीं रखता। इनसान यह तो कह देगा कि हमें आपके नबी होने का यक़ीन है, लेकिन ज़िन्दगी के हर शोबे में नबी की तालीमात पर और नबी के तरीक़े पर चलने में कामयाब होने का यक़ीन और मसाइल के हल का यक़ीन इनसान नहीं रखता है, जिस तरह नबी के नबी होने पर यक़ीन रखता है।

सहाबा-ए-किराम जितना यक़ीन नबी का 'नबी-ए-मुर्सल' (यानी अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से नबी बनाकर भेजा हुआ) होने का रखते थे, उतना ही मसाइल के हल का यक़ीन आपकी लाई हुई तालीमात पर रखते थे। अगर कोई आकर अबूदर्दा रज़ियल्लाहु अ़न्हु से यह कहे कि तुम्हारा मकान जल गया तो अबूदर्दा रज़ियल्लाहु अ़न्हु जितना यक़ीन नबी के नबी होने का रखते हैं उतने ही यक़ीन के साथ यूँ कहते हैं कि मुझे नबी ने वह दुआ़ सिखलाई है कि अगर वह उस दुआ़ को पढ़ लें तो कोई मुसीबत और कोई तकलीफ़ पहुँचने वाली नहीं है। मैं उस दुआ़ का यक़ीन रखता हूँ:

مَا شَآءَ اللّٰهُ كَانَ وَ مَا لَمْ يَشَأْ لَمْ يَكُنْ، اِعْلَمُوْا اَنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ

कि जो अल्लाह चाहते हैं वह होता है, जो वह नहीं चाहते वह नहीं होता। जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने सहाबा-ए-किराम को ईमन सुनाया नहीं बल्कि सिखलाया।

हाँ तो मेरे दोस्तो, बुज़ुर्गो! क्या अ़र्ज़ करूँ। यूँ कि सारे-के-सारे पुराने सुबह से शाम तक बावजूद इसके कि अल्लाह की तरफ़ दावत देने की मेहनत कर रहे हैं और तब्लीग़ से जुड़े हुए हैं, और इस सारे काम की बुनियाद ही अल्लाह रब्बुल-इ़ज़्ज़त की ज़ाते आ़ली की तरफ़ बुलाना है। लेकिन मैं क्या अ़र्ज़ करूँ कि हमारे माहौल में भी अल्लाह के ग़ैर को बोला जाता है। काम करने वाले, जबकि काम करने वाला पुराना होगा, लेकिन अगर उसकी बात सुनोगे तो ऐसा अन्दाज़ा होगा कि बेचारा नया आदमी है।

मौलाना इलियास साहिब रहमतुल्लाहि अ़लैहि के यहाँ तो इतना भी बरदाश्त नहीं था कि कोई यूँ कह दे कि यह काम इत्तिफ़ाक़ से हो गया। फ़रमाते थे इत्तिफ़ाक़ से नहीं हो गया, यूँ कहो कि अल्लाह ने यूँ चाहा तो हुआ। यूँ क्यों कहते हो कि इत्तिफ़ाक़ से हो गया। जब इस तरह ईमान बनाया जाएगा, इस तरह ईमान की मेहनत की जाएगी और इस तरह अल्लाह रब्बुल-इ़ज़्ज़त की ज़ाते आ़ली का तआ़रुफ़ कराना जब अपनी ज़िम्मेदारी समझी जाएगी, तब हालात और आमाल बनेंगे। ईमान के बनने पर अ़मल तो अन्दर का तक़ाज़ा बन जाएगा, अगर ईमान बन जाएगा। लेकिन अगर ईमान नहीं बना और जैसा ईमान होना चाहिए अगर ऐसा ईमान नहीं बना तो हालात दूर न होंगे।

मेरे प्यारो, दोस्तो! सारे आमाल इसी बुनियाद पर बरबाद हो रहे हैं। अल्लाह तआ़ला ने अपने तआ़रुफ़ के साथ अ़मल को जोड़ दिया। ये आमाल तो अल्लाह का ध्यान लायेंगे, आमाल अल्लाह का ध्यान लाने का सबब हैं। इस ईमान के बनने पर तमाम चीज़ों का बनना मौक़ूफ़ है। अब हमारा काम यह होगा कि सुबह से शाम तक एक-एक फ़र्द उम्मत को अल्लाह की ज़ाते आ़ली की तरफ़ बुलाये। तमाम अम्बिया की मुश्तरका मेहनत है अल्लाह की तरफ़ दावत देना।

हमें तो दुनिया के अन्दर भेजा ही इसी काम के लि गया था। हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम फ़रमाते हैं कि मुझे तो **दाअ़ी** (दावत देने वाला) और **मुबल्लिग़** (तब्लीग़ करने वाला) बनाकर भेजा गया है कि अल्लाह की ज़ाते आ़ली की तरफ़ बुलाना ही मेरा काम है। जो आदमी अल्लाह की ज़ाते आ़ली की तरफ़ इस तरह बुलायेगा जिस तरह तमाम अम्बिया ने अल्लाह की ज़ात की तरफ़ बुलाया है। अल्लाह के एक होने की तरफ़, उसके राज़िक़ होने की तरफ़, उसके शाफ़ी और उसके काफ़ी होने की तरफ़, और हर-हर चीज़ के

होने की निस्बत को अल्लाह रब्बुल-इज़्ज़त की बुलन्द ज़ात की तरफ़ करेगा, अंधेरियाँ उतनी ही ख़त्म होती चली जाएँगी और बरकतें आती चली जाएँगी।

हमारी सारी मेहनत का ख़ुलासा, यह जितनी भी भाग-दौड़ हो रही है और जितना यह जमाअ़तों में फिरना हो रहा है, ये मश्विरे पर मश्विरे, ये गश्त पर गश्त, यह तालीम पर तालीम, यह तीन रोज़ा पर तीन रोज़ा, यह चिल्ले और चार महीने, इन सब का ख़ुलासा।

दोस्तो, बुज़ुर्गो! मुझे तो आप सेबसे यही बात अ़र्ज़ करनी है कि यह जो हमारी बुनियाद कमज़ोर होती जा रही है कि भाई किसी को देखो तो वह तक़रीर कर रहा है किसी मौज़ू (विषय) पर, कोई किसी मौज़ू पर, हर एक के ऊपर किसी-न-किसी चीज़ का ग़ल्बा है। मौलाना इलियास साहिब रहमतुल्लाहि अ़लैहि के यहाँ जितनी ईमान के बनाने की बात, जितनी ईमान के बनाने की फ़िक्र थी उतनी किसी और चीज़ की फ़िक्र नहीं थी। इसलिए कि अगर ईमान बन गया तो हर चीज़ बन जायेगी। लेकिन अगर ईमान न बना और अल्लाह की ज़ाते आ़ली पर वह एतिमाद और भरोसा न हुआ जो होना चाहिए तो मेरे दोस्तो, बुज़ुर्गो! मौलाना इलियास साहिब फ़रमाते थे कि अगर ईमान नहीं बना तो अ़मलों पर 'इस्तिक़ामत' (यानी जमाव और साबित-क़दमी) न होगी। ये अ़मल रस्मी होंगे। उसकी नमाज़, यह नमाज़ उसकी आ़दत की नमाज़ होगी, या उसकी नमाज़ माहौल की होगी। उसकी नमाज़ वह ईमान वाली नमाज़ न होगी जो नमाज़ उसके मसाइल को हल करवा दे। नमाज़ तो उसके ईमान के बक़्द्र होगी कि जैसा ईमान होगा वैसी नमाज़ होगी। इसलिए हमारा सबसे पहला काम यह है कि हम ईमान को बनाने की मेहनत पर लगें ताकि यह अल्लाह का ग़ैर हमारे अन्दर से निकले।

हम तो सुबह व शाम देखते हैं कि जिन्होंने दावा कर लिया है कि हम काम करने वाले और हम ईमान वाले हैं। अब क्या अ़र्ज़ करूँ, बात तो सख़्त है कि उनके एक-एक जुमले में से शिर्क की बू आयेगी। अब अगर बैठकर सोचो कि ऐसा बोला जाना क्या जायज़ था, क्या ऐसा बोला जाना मुनासिब था, और ऐसा बोले जाने से हमारे ईमान पर क्या धक्का लगा है, बैठकर सोचो तो अन्दाज़ा हो कि हम काम करने वाले दिन भर में कितना शिर्क बोल रहे हैं। इसलिए मेरे दोस्तो, बुज़ुर्गो! किसी चीज़ की निस्बत अल्लाह के ग़ैर की तरफ़ न करो। अगर कोई कहे कि यह मैंने किया है, या उसने किया है, या उस चीज़ या उस सबब से यह काम हुआ है, तो तुम यह कहो कि नहीं! यह

अल्लाह ने किया है। यह बात कहने के लिए ख़ुद अल्लाह तआ़ला फ़रमा रहे हैं क़ुरआन पाक में।

मौलाना यूसुफ़ साहिब रहमतुल्लाहि अ़लैहि ने तो ईमान, ईमान, ईमान, ईमान जितना बोला है, शायद मौलाना यूसुफ़ साहिब ने अपनी उम्र में ईमान से ज़्यादा कुछ बोला हो। अल्लाह तआ़ला हालात में अपने बन्दों का ईमान देखते हैं। हालात लाते हैं फिर देखते हैं कि ईमान का क्या हाल है। देखते हैं कि हमारे ग़ैर की तरफ़ तो यह अपने हालात को रुजू नहीं करते हैं।

हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम का ईमान तब नहीं देखा जब यह नमरूद के सामने थे, वहाँ अल्लाह की ज़ात का तआ़रुफ़ (परिचय) करा रहे थे। हम लोग तो अपना ईमान उस वक़्त देखते हैं जब हम अल्लाह का तआ़रुफ़ करवा रहे होते हैं, नफ़्स समझाता है कि हाँ! मैं बड़ा ईमान वाला हूँ। और जब हम पर हालात आते हैं तो उन हालात में हमसे बड़ा बेईमान कोई नहीं होता।

जब इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम नमरूद के सामने अल्लाह की ज़ात का तआ़रुफ़ करा रहे थे, कि अल्लाह लाता है सूरज को पूरब से पश्चिम को, तू पश्चिम से लाकर दिखला दे। अल्लाह मारता है, ज़िन्दा करता है, मैं बीमार होता हूँ तो वही शिफ़ा देता है। कि अपने पैदा होने से लेकर क़ियामत में उठाए जाने तक और अपनी ख़ताओं को माफ़ करवाने तक हर चीज़ की निस्बत अल्लाह की ज़ात की तरफ़ कर रहे थे, उस वक़्त नहीं अल्लाह ने उनके ईमान को देखा, कि अभी तो यह हमारा तआ़रुफ़ करा रहे हैं, जब इनको हम चारों तरफ़ से हालात डालकर घेरेंगे, जब काम करने वालों पर हालात चारों तरफ़ से आयेंगे फिर देखेंगे उनका यक़ीन, कि किस चीज़ पर है।

हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम को सारी नमरूदियत में जितने हालात आए उनमें कहीं भी अल्लाह तआ़ला ने उनके यक़ीन का इम्तिहान न लिया, लेकिन जब नमरूद ने आग में डालने का इरादा कर लिया और इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम को जब आग में डाला जाने लगा उस वक़्त जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम ने आकर, दो फ़रिश्ते भी साथ में हैं, हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम के पास आकर कह रहे हैं कि मुझे अल्लाह ने वे सारी ताक़तें दी हुई हैं, और हम क़ौमे लूत की बस्ती को ले गए अपने 'पर' के ऊपर उठाकर बस्ती को वहाँ से उल्टा है, कि जहाँ पहुँचकर आसमानों पर बस्ती के मुर्ग़ों की आवाज़ें सुनाई दीं।

इतनी बड़ी ताक़त वाला और इतना बड़ा फ़रिश्ता जिसे "अमीन" कहा जाता है "जिब्राईल अमीन" अमानतदार फ़रिश्ता है। जो अल्लाह के ग़ैर की

तरफ़ से आते नहीं, नबियों के अ़लावा किसी के पास जाते नहीं, अल्लाह के हुक्म के बग़ैर उतरते नहीं, इतना भरोसे वाला फ़रिश्ता जब वह आकर यूँ कहे कि ऐ इब्राहीम! आप जो चाहें हमें हुक्म दें, जो ज़रूरत हो वह आप हमसे कहें। यह पानी का फ़रिश्ता मेरे साथ है और पहाड़ों का फ़रिश्ता है, आप जो चाहें इनको हुक्म दें, यह सारी नमरूदियत उसी में झुलस कर ख़त्म हो जाए। यह दोनों पहाड़ों को एक ही में मिला दें और ये सब उसमें झुलस जायें, बस आप हुक्म करें कि क्या चाहते हैं। अल्लाह तआ़ला को क़ियामत तक के लिए इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम की मिल्लत को मुतैयन करना है कि इब्राहीम को अल्लाह तआ़ला ने अपना दोस्त बना लिया।

दोस्त किस बात पर बना लिया? कि जब सारी नमरूदियत उनके ख़िलाफ़ हो गई और जिब्राईल जैसी ताक़त आपकी मदद करने के लिए आ गई, उनकी हिफ़ाज़त के लिए अपनी सारी ताक़त और क़ुव्वत लेकर पहुँची, कि आप कहें तो इस आग को यहाँ से ग़ायब कर दूँ। आप कहें तो यह पहाड़ों का फ़रिश्ता है, यह दोनों पहाड़ों को आपस में मिलाकर उन्हें ख़त्म कर दे। या यह पानी का फ़रिश्ता आग पर पानी बरसा दे। लेकिन इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने उस आज़माइश से नजात पाने के बजाय जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम से यूँ फ़रमायाः

اَمَّا اِلَيْكَ فَلَا

कि हमें हरगिज़ तुम्हारी ज़रूरत नहीं है। ऐ जिब्राईल! हमें तुम्हारी ज़रूरत नहीं है।

मेरे दोस्तो, बुज़ुर्गो! जब यहाँ हालात इतने तंग हो गए और नंगा करके 'मिन्जनीक़' (यह पुराने ज़माने में पत्थर फेंकने की एक दस्ती मशीन थी, आजकल की तोप को इसकी आधुनिक शक्ल कहा जा सकता है) पर बैठा दिया, कि अब यह तोप के ज़रिये आग में फेंके जाने वाले हैं। अब भेजा जिब्राईल को, कि हमारी ज़रूरत? इब्राहीम ने कहा, नहीं तुम्हारी ज़रूरत नहीं है। जब यह कह दिया कि हमें तुम्हारी ज़रूरत नहीं है। 'जिस तरह मददें किसी वास्ते से की जाती हैं, इसी तरह मददें बराहे-रास्त (यानी बिना किसी वास्ते और ज़रिये के) की जाती हैं'।

अल्लाह तआ़ला ने तमाम अम्बिया के लिए किसी-न-किसी सबब को इख़्तियार किया है। किसी पर बिजली गिराई, किसी को धँसाया, किसी को डुबोया, किसी पर ज़लज़ले लाए, किसी की बस्ती को उठाकर पल्टा और किसी के लिए फ़रिश्ते नाज़िल किए। फ़रिश्ते के ज़रिये मदद की, लेकिन हज़रत

इब्राहीम के हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम को इनकार करने पर अल्लाह तआ़ला ने आग को बराहे-रास्त ख़िताब फ़रमाया तो आग ठंडी हो गई।

जब इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम अपनी मदद के लिए किसी को वास्ता और ज़रिया नहीं बना रहे हैं तो हमें क्या पड़ी है कि हम मदद करें किसी वास्ते से। जब इब्राहीम जिब्राईल को 'वास्ता' नहीं बना रहे हैं तो अब कौनसा वास्ता रह गया, कि हम अपने इब्राहीम की किसी वास्ते और किसी ज़रिये से मदद करें।

मेरे दोस्तो, बुज़ुर्गो! हालात में ईमान और यक़ीन परखा जाता है। काम करने वालों की भी आज़माइश हालात में होगी। ताजिरों पर हालात लाए जाते हैं ताजिरों को समझाने के लिए। काश्तकारों पर हालात लाए जाते हैं काश्तकारों को समझाने के लिए। उनकी साल में एक-एक या दो-दो फ़सलें ख़राब होती हैं, लेकिन अगर अल्लाह की ज़ात से उगने का यक़ीन नहीं होगा तो उस वक़्त तक अल्लाह की ज़ात से ख़राब होने का यक़ीन कैसे होगा। तो अब अगर नुक़सान हो तो यह उस नुक़सान को भी अल्लाह के ग़ैर की तरफ़ मन्सूब करेगा। अल्लाह तआ़ला तो क़ुरआन में हमारा ऐसा नक़्शा खींचते हैं कि जब उनपर हालात आते हैं तो यह कहते हैं कि ऐ अल्लाह! तू करेगा। और उनके हालात जब हम खुद बना देते हैं तो ये हमारे साथ फिर शिर्क करते हैं। इसलिए मेरे दोस्तो, बुज़ुर्गो! सबसे पहले हमें अपने अन्दर से अल्लाह के ग़ैर को दावत के ज़रिये से निकालना है। हर एक से अल्लाह की बुलन्द ज़ात का तआ़रुफ़ करवाना है। हर माहौल में अल्लाह रब्बुल-इ़ज़्ज़त की बुलन्द ज़ात का तआ़रुफ़ (परिचय) करायें। अब हमारे अन्दर ईमान से 'इस्तेदाद' (क़ाबलियत) पैदा होगी अ़मलों पर चलने की।

ताजिर अपनी तिजारत में, ज़मीनदार अपनी ज़मीनदारी में, मुलाज़िम अपनी मुलाज़मत में, हर जगह अहकामात को पूरा करेगा, कि मुझसे मुताल्लिक़ अल्लाह का क्या हुक्म है? और जहाँ-जहाँ ईमान पहुँच जायेगा हुक्म वहाँ पहुँचेगा, कि यह हुक्म तेरे कान से मुताल्लिक़, यह हुक्म तेरे हाथ के मुताल्लिक़, यह हुक्म तेरी ज़बान के मुताल्लिक़, यह हुक्म तेरी शर्मगाह के मुताल्लिक़। जहाँ-जहाँ ईमान पहुँच जायेगा, तो हर हुक्म का हर जगह पहुँचना यह हुक्म ज़िन्दा ही ईमान पर होगा, कि जब ईमान दिल में आ जायेगा तो जिस्म के तमाम अंगों में आ जायेगा। यानी अल्लाह का ध्यान आ जायेगा, अब यह सही मायने में ज़ाकिर बन जाएगा, यानी अल्लाह की फ़रमाँबरदारी करने वाला बन जाएगा। ताजिर का ज़िक्र क्या है? ताजिर का उसकी तिजारत का

ज़िक्र यह है कि वह अल्लाह तआ़ला को देख रहा है, अब यह ताजिर ख़ियानत नहीं करेगा। हाकिम अपनी हुकूमत में ज़ुल्म नहीं करेगा। ज़मीनदार अपने ज़मीनदारे में जो 'उशर' (यानी दसवाँ) और जो ज़कात आएगी उसे देगा। कि हर लाईन के अन्दर उन लाईनों में चलने वाले, उस लाईन के मुताबिक़ आमाल में अल्लाह तआ़ला को देखकर चल रहे हैं।

मेरे दोस्तो! नमाज़ में जब अल्लाह का ध्यान आएगा तो यह नमाज़ उसके हर अ़मल को नमाज़ पर ले जाएगी। कि यह ज़िन्दगी के हर शोबे में अल्लाह तआ़ला के तमाम अहकामात का पाबन्द होकर चलेगा। यूँ आया है कि इतना ज़िक्र करो कि लोग तुम्हें पागल कहने लगें।

मेरे दोस्तो, बुज़ुर्गो! ज़िक्र क्या है? ज़िक्र यह है कि मैं किसी भी माहौल में और किसी भी नक़्शे में, किसी भी चीज़ की निस्बत अल्लाह के ग़ैर की तरफ़ नहीं करूँगा। बस यह ज़िक्र है। यूँ आ़ता है कि जो आदमी अल्लाह की ज़ात का तआ़रुफ़ इस तरह कराएगा, ताजिरों से, काश्तकारों से, मुलाज़िमों से, कि जो कुछ दुनिया में होता है वह सिर्फ़ और सिर्फ़ अल्लाह की ज़ात से होता है, तो ये सारे-के-सारे ताजिर सारे काश्तकार, सारे मुलाज़िम, जो ग़लत यक़ीन लिए बैठे हैं, वे सारे-के-सारे उसको पागल कहेंगे। अब बनेगा मतलब हदीस का कि इतना कसरत से ज़िक्र करो कि लोग तुम्हें पागल कहने लगें। तो अगर यह तन्हाई में ज़िक्र करता रहे और बाहर निकल कर दावत न दी और एक-एक से अल्लाह की ज़ात का तआ़रुफ़ न कराया कि हमारा बनाने वाला, हमारा पैदा करने वाला, हमें खिलाने वाला, हमें पिलाने वाला, हमें मारने और ज़िन्दा करने वाला, हमें दोबारा ज़िन्दा करके खड़ा करने वाला, यह सारी ज़मीन और आसमान के दरमियान की चीज़ें बनाने वाला, यह कौन है?

अब हर चप्पे-चप्पे पर जब उसका तआ़रुफ़ कराएगा, अब जब ताजिरों से जाकर यह कहेगा तो ताजिर कहेंगे कि यह पागल है। हम तो यक़ीन रखते थे कि तिजारतों से माल आता है और हुकूमतों से मसाइल (समस्याएँ) हल होते हैं। लेकिन यह आकर आज यूँ कह रहे हैं, और कहीं मौक़ा ही नहीं देते कि किसी सबब से भी कुछ होता है। तो अब ये सारे उस ज़ाकिर को पागल कहेंगे। सारे काश्तकार, सारे हुकूमत वाले, सारे हथियारों वाले, सारे दवाओं वाले उस ज़ाकिर को पागल कहेंगे। अब यह नबियों की तरह पागल कहलाया।

अब जब चल-फिरकर यह ताजिरों से, हुकूमत वालों से, काश्तकारों से यह कहेगा कि तिजारतों से कुछ नहीं होता, हुकूमतों से कुछ नहीं होता, जो

कुछ होता है या जो हो रहा है सब कुछ अल्लाह की ज़ात से होता है, अल्लाह के करने से होता है। ये सारे असबाब (साधन) तो ख़ाली बरतन हैं। इन ख़ाली बरतनों में अल्लाह चाहेंगे तो इन बरतनों में डालकर दें और अल्लाह चाहें तो बग़ैर बरतनों के देंगे।

अल्लाह तआला ने ये असबाब इसलिए नहीं बनाए कि अल्लाह तआला यह देख रहे थे कि इनसान को इन असबाब की ज़रूरत है, बल्कि अल्लाह तआला ने ये असबाब इसलिए बनाए हैं ताकि यह देखें कि तुम यक़ीन इन असबाब पर रखते हो या यक़ीन मेरी ज़ात पर और मेरे अहकामात पर, जिस पर हमने वायदे कर रखे हैं दुनिया और आख़िरत के सारे मसाइल के हल होने के। अल्लाह तआला ने ये असबाब इसलिए बनाए हैं ताकि हमें आज़माएँ यह कि यक़ीन असबाब पर रखते हो या मेरी ज़ात पर रखते हो, वरना अल्लाह तआला को हमें पालने के लिए असबाब की ज़रूरत नहीं थी, अल्लाह की पनाह। अल्लाह तआला को असबाब की ज़रूरत नहीं है, अल्लाह तआला असबाब का मोहताज नहीं है। इसलिए हम सब यह जान लें कि यह काम हम सबके करने का है, हर फ़र्द के करने का है, हर साथी इस काम को अपना काम समझकर करे, फिर जो तक़ाज़े हमारे ज़िम्मे आ रहे हैं अगर हम वे तक़ाज़े पूरे करेंगे तो अल्लाह हमें दूसरों की हिदायत का ज़रिया बनाएँगे। और अगर यह तक़ाज़ा दूसरों पर डालेगा तो उसका मुजाहदा नाक़िस हो जाएगा।

इसलिए मेरे दोस्तो, प्यारो, बुज़ुर्गो! जितनी मेहनत अल्लाह के करम से हो रही है, यह बात तो ज़ाहिर है कि अल्हम्दु-लिल्लाह काम हो रहा है। लेकिन जो बात चाही जा रही है उसको वजूद में लाने के लिए उसको अमल में लाने के लिए हमें अपनी क़ुरबानी की सतह (स्तर) को बुलन्द करना होगा। क़ुरबानी की सतह बढ़ाते-बढ़ाते इसपर आ जायें कि क्या अर्ज़ करूँ। मौलाना यूसुफ़ साहिब रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते थे कि साल का चिल्ला, महीने के तीन दिन, हफ़्ते के दो गश्त, घर की और मस्जिद की तालीम, रोज़ाना कम-से-कम ढाई घन्टे, यह तो हर उम्मती के अपनी ज़ात की तब्दीली लाने के लिए है। लेकिन अगर ये यूँ चाहें कि सारे आलम से बातिल ख़त्म हो और सारे आलम में हक़ क़ायम हो, अगर यह चाहते हो कि सारे आलम में तब्दीली आ जाये तो उसके लिए अपनी ज़ाती तब्दीली को छोड़कर आलमी तब्दीली वाला निसाब (कोर्स) इख़्तियार करना पड़ेगा।

यह साफ़ लिखा हुआ है मौलाना यूसुफ़ साहिब रहमतुल्लाहि अलैहि की हिदायत के अन्दर कि इसको छोड़ो और अब अपनी मेहनत का रुख़ बदल कर अपनी कुरबानी की सतह बुलन्द करके अब इसपर आओ कि आलम में तब्दीली आए। और मेरे दोस्तो! जब तक आलमी तब्दीली वाली मेहनत नहीं करेगें उस वक़्त तक हमारे अपने अन्दर हरगिज़ तब्दीली नहीं आ सकती। इसलिए कि यह तो अपनी ज़ात को बदल रहा है, माहौल को थोड़े ही बदल रहा है, अफ़राद (व्यक्तियों) से थोड़े ही माहौल को बदला जा सकता है, माहौल तो मजमूए से बदलता है, और मजमूआ उस मेहनत से बदलेगा जिस तरह से सहाबा-ए-किराम के दौर में बदला है। जब तक मेहनत की वह सतह नहीं होगी जो सतह सहाबा-ए-किराम की थी उस वक़्त तक तब्दीली वह नहीं आएगी जो तब्दीली सहाबा के दौर में आई थी। उस तब्दीली के लिए तो हमें सहाबा-ए-किराम वाली मेहनत करनी होगी। वह मेहनत कैसे होगी।

मेरे दोस्तो, बुज़ुर्गो! पुराने अपनी सतह को छोड़कर जब आगे बढ़ेंगे यानी जब ये अपनी सतह छोड़ेंगे तब नए आगे बढ़ेंगे। ये पुराने आगे बढ़ेंगे तब नए आगे बढ़ेंगे। यह भी ज़रा सोचने की बात है कि कहीं हम पुरानों ने दूसरों का रास्ता तो नहीं रोका हुआ है, कि अवाम यह कहे कि पुराने अगर हर साल के चार महीने पर आयें तो हम चारे महीने दें। अभी तो मेरे दोस्तो जो सतह हमारे सामने है हम उसी को सतह समझे हुए हैं। और अगर हमने यह मामूल बनाया हुआ है कि बस इसी तरह करते-करते मर जाना है तो ऐसे लोग तरक़्क़ी नहीं किया करते। इसलिए हमें अपनी कुरबानी की सतह बढ़ाना है। जब इस सतह से आगे हम बढ़ेंगे तब हमें पता चलेगा कि हमने पीछे वालों के लिए कैसे रास्ता रोका हुआ था।

अब क़दम पर क़दम उठाओ और कुरबानियों पर कुरबानियाँ दो, और हिम्मत करके हर साल के चार महीने पर और रोज़ाना के आठ घन्टे पर और बजाय हर महीने तीन दिन के महीने के दस दिन पर आना चाहिए। मौलाना यूसुफ़ साहिब रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते थे कि हमें हर उम्मती की तिहाई जान, तिहाई माल और तिहाई वक़्त चाहिए।

واٰخر دعوانا ان الحمد للّٰہ رب العالمین